CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1998

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1998

Contents

28 February 1998 Vol. 12 No. 1

31 March 1998 Vol. 12 No. 2

31 May 1998 Vol. 12 No. 3

30 June 1998 Vol. 12 No. 4

31 August 1998 Vol. 12 No. 5

30 September 1998 Vol. 12 No. 6

30 November 1998 Vol. 12 No. 7

31 December 1998 Vol. 12 No. 8

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 12 अंक - 1 28 फरवरी, 1998 9 फाल्गुन, शक 1919



गणतंत्र दिवस परेड में सलामी मंच के सामने से गुजरता के.रि.पु. बल का दस्ता



*58*वें के.रि.पु. बल दिवस के अवसर परेड की सलामी लेते हुए उपराष्ट्रपति



जल वाहक दिक्कम बहादुर को मरणोपरांत दिया गया शौर्य वीरता का पुलिस पदक उसकी विधवा ने ग्रहण किया

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-12 अंक-1
28 फरवरी, 1998
9 फाल्गून, शक 1919

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

इस अंक में



गणतंत्र दिवस परेड में के.रि.पु. बल के दस्ते

58वां के.रि.पु. बल दिवस

के.रि.पु. बल के वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

के.रि.पु. बल बैंड प्रदर्शन

बल के 30 कार्मिकों को विशिष्ट एवं सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

असम में पल्स पोलियो अभियान

रक्तदान कर स्थापना दिवस मनाया

दो शहीदों की विधवाओं को अनुग्रह राशि

त्रिपुरा में के.रि.पु. बल

विविधा

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे

सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

भूल सुधार - सी.आर.पी.एफ. समाचार ’97 अंक में पृष्ठ 11 एवं अंतिम आवरण पर फोटो कैप्शन में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री का नाम भूल वश श्री करूणानिधि के स्थान पर श्री करूणाकरण छप गया है। भूल के लिए खेद है।

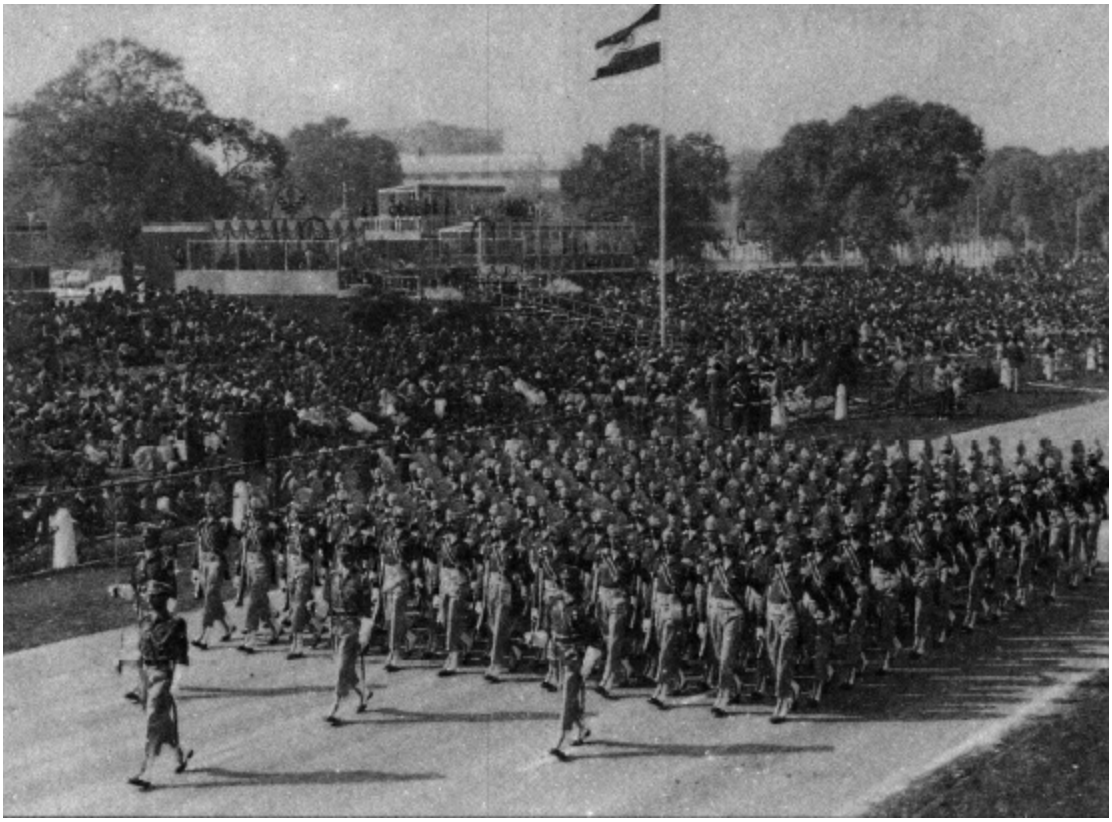
सम्पादक

गणतंत्र दिवस परेड में के.रि.पु. बल के दस्ते

देश के शांति प्रहरी - केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में अपने तीन दस्ते भेजे। इनमें एक-एक दस्ता महिलाओं बैंड वादकों तथा पुरूषों का था।

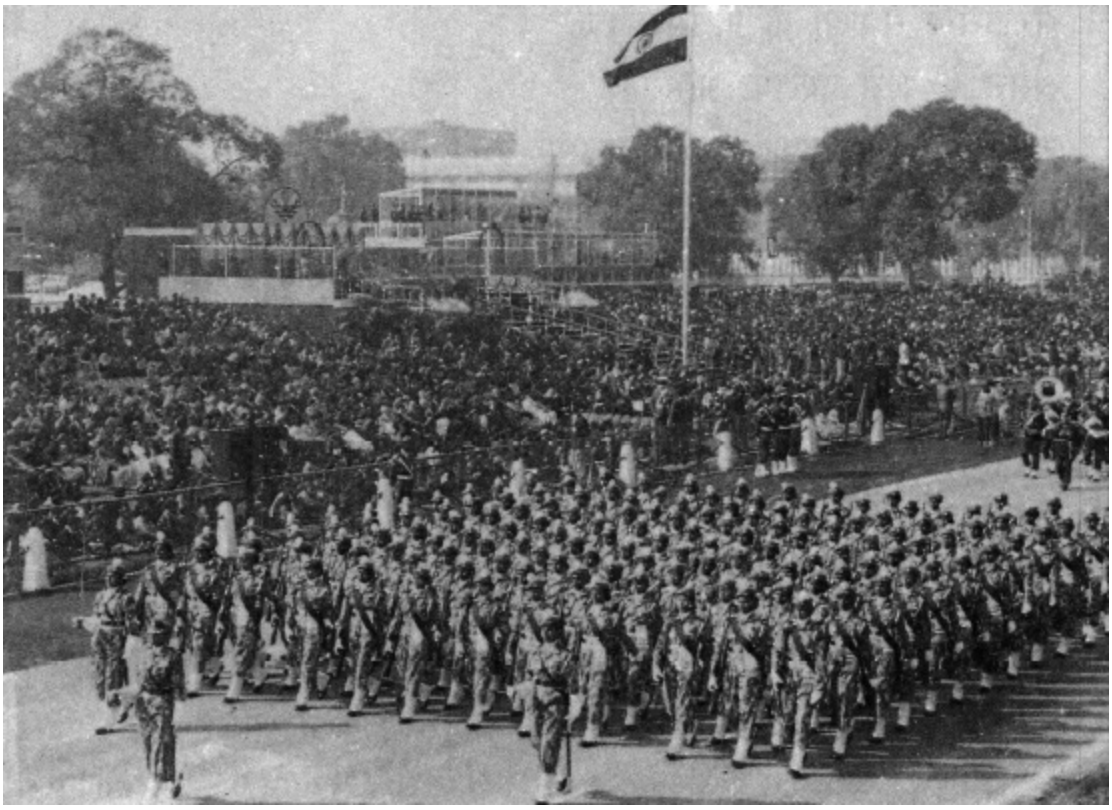
के.रि.पु. बल के पहले दस्ते में डिप्टी कमांडेट एनी आर. थामस तथा दो सब इंस्पेक्टरों के नेतृत्व में 144 महिलाओं की टुकड़ी थी। सुश्री एनी थामस 1989 में बल के परिवार में सहायक कमांडेट के रूप में शामिल हुयी। इस टुकड़ी में शामिल लड़कियों का औसत कद 5.7 फुट था।

के.रि.पु. बल महिला टुकड़ी के पीछे 101 सदस्यों वाला के.रि.पु. बल बैंड था। जिसका नेतृत्व इंस्पेक्टर गंधर्व सिंह ने किया। के.रि.पु. बल बैंड का गठन 1961 में किया गया था।



सलामी मंच के आगे से गुजरती बल की पुरूष टुकड़ी

बल की तीसरी टुकड़ी बल के 144 पुरूष कर्मियों की थी। जिसका नेतृत्व दो सब इंस्पेक्टरों के साथ डिप्टी कमांडेट विनय कुमार राय कर रहे थे। श्री राय बल के परिवार में 1992 में शामिल हुए। इस टुकड़ी में शामिल जवानों का औसत कद 6 फुट था।



गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेती हुयी बल की महिला टुकड़ी

चटक अंगोला कमीजों तथा खाकी पैंटों पर बल के ये जवान सफेद चमड़े की बेल्ट पहने हुए थे। उनके सिर पर गहरे नीले रंग की पगडियां थी।

बल की टुकड़ियां राजपथ से के.रि.पु. बल के कथानक गीत 'सेवा भक्ति का यह प्रतीक सी.आर.पी.एफ. कहता है' की धुन पर मार्च करती हुयी गुजरीं। मार्चिंग दस्ते के जवानों के हाथों में एस.एल.आर. थीं। जबकि उनके कमांडरों के हाथों में तलवारें।

58वां के.रि.पु. बल दिवस

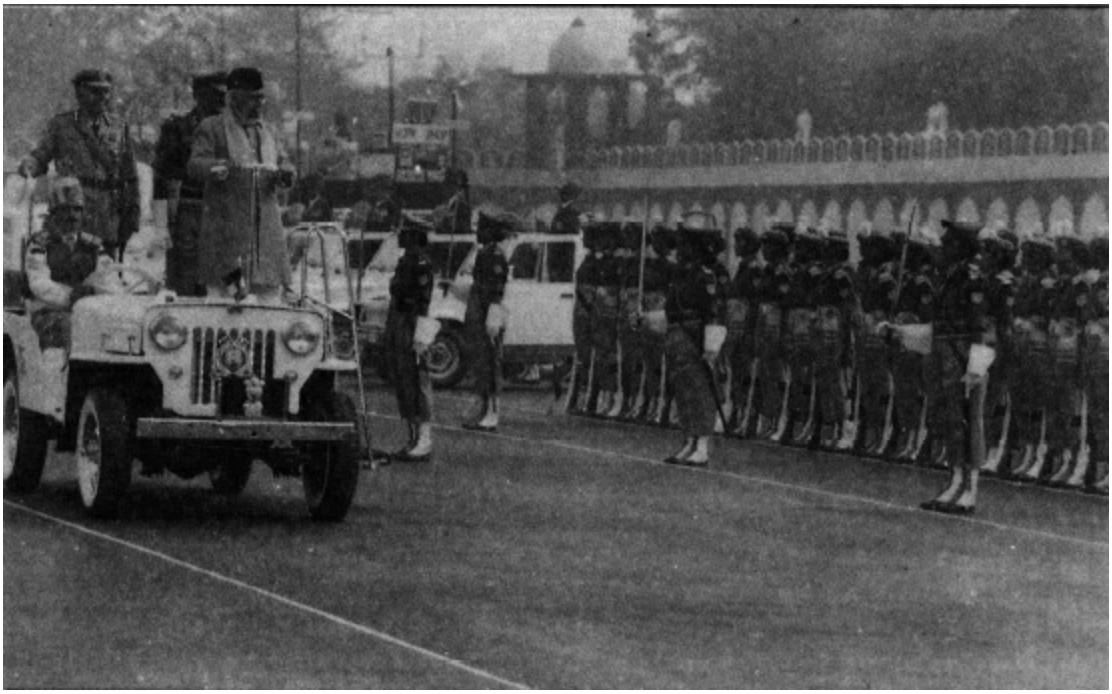
"तटस्थता बनाए रखने में के.रि.पु. बल की छवि बेदाग है"

-उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकांत

आजादी के पिछले पचास सालों में देश में आंतरिक सुरक्षा तथा जन व्यवस्था को बनाये रखने तथा देश के ढांचे के लिए चुनौती बनने वाली हिंसात्मक गतिविधियों पर प्रभावी ढंग से काबू पाने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की भूमिका की उपराष्ट्रपति श्री

कृष्णकांत ने प्रशंसा की है। उपराष्ट्रपति ने 58वें के.रि.पु. बल दिवस के अवसर पर 28 दिसम्बर '97 को बल के नई दिल्ली ग्रुप केन्द्र में आयोजित एक भव्य समारोह में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि चाहे वो विगत में भारत में राज्यों के विलय की बात हो, या राज्यों के पुनर्गठन के समय उत्पन्न कानून व्यवस्था की स्थितियों का मामला हो, या फिर साम्प्रदायिक, जातीय, आतंकवाद आदि हिंसा से निपटने का नाजुक कार्य हो, के.रि.पु. बल हमेशा राज्य के एक कारगर बल के रूप में सामने आया है।



परेड का निरीक्षण करते हुए उप राष्ट्रपति



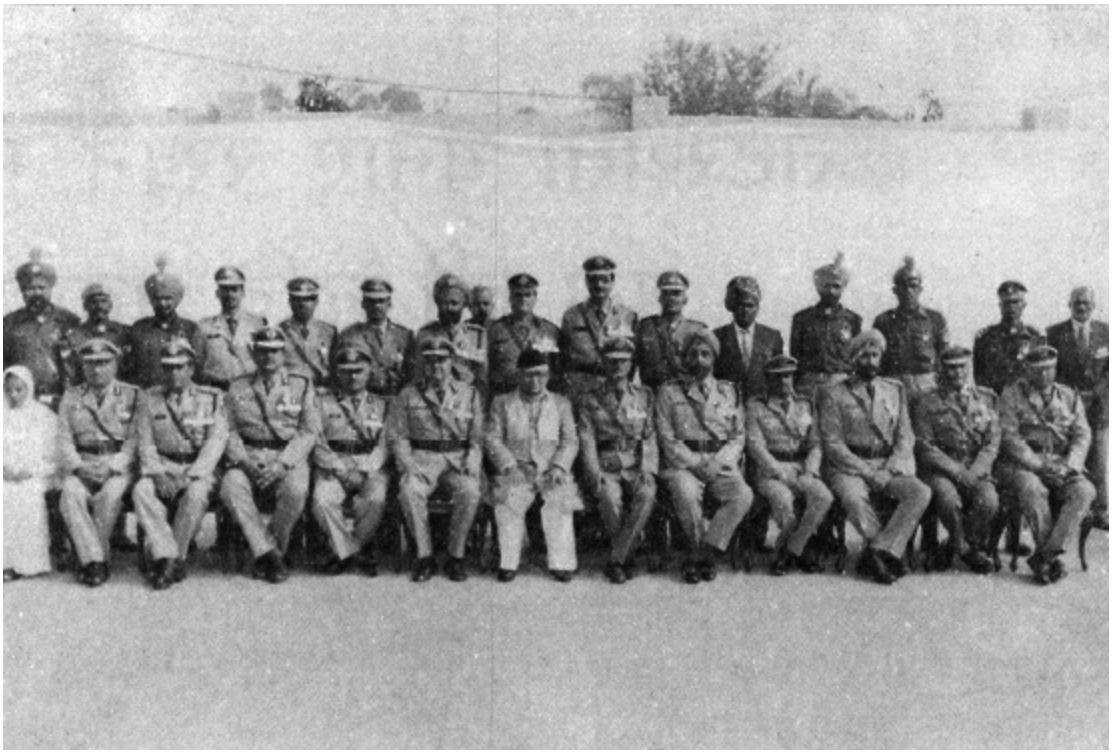
उप राष्ट्रपति को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए महानिदेशक

इस मौके पर जवानों और अधिकारियों का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि वे अपने प्रशिक्षण, प्रशासन, सूचना तंत्र, गतिशीलता और उपकरणों के हर पहलू की क्षमता बढ़ायें। उन्होंने कहा कि उन्हें अपने मुकाबले खड़ी ताकतों से एक कदम आगे रहना है। खतरा उत्पन्न होने पर उससे निबटने के लिए तैयार होने का कोई अर्थ नहीं है, उन्हें उसके लिए पहले ही तैयार रहना है। सतर्कता तथा अग्रिम योजना किसी भी व्यवसायिक बल की विशेषता है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में पुलिस को राजनीतिक गुटों तथा पार्टियों के बीच कड़ाई के साथ तटस्थता बनाए रखनी चाहिए। उसे केवल राज्य के प्रति वफादार होना चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें हर्ष है कि इस मामले में के.रि.पु. बल की छवि बेदाग है।

बल के अधिकारियों और जवानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि के.रि.पु. बल के पास सुदृढ़ परम्पराएं, प्रतिबद्धता तथा उच्च नैतिक बल है। 21वीं सदी के मुहाने पर उन्हें चाहिए कि अपनी इस विरासत के बल पर वे अपनी भूमिका व कर्तव्य में और अधिक दक्षता लाएं, जिसकी कि यह देश उनसे अपेक्षा करता है।

इस मौके पर उपराष्ट्रपति ने एक शानदार परेड का निरीक्षण किया और उसकी सलामी ली। उन्होंने बल के 25 अधिकारियों और जवानों को शौर्यवीरता तथा विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किए। उन्होंने जम्मू–कश्मीर के लिए सर्वश्रेष्ठ आपरेशन बटालियन की ट्राफी 26वीं बटालियन को प्रदान की। उत्तर पूर्व के लिए यह ट्राफी 97 बटालियन को दी गई। 114 बटालियन को सर्वश्रेष्ठ बटालियन तथा 104 आर.ए.एफ. बटालियन को मितव्ययता तथा वित्तीय अनुशासन को ट्राफी प्रदान की गई। ग्रुप केन्द्र–एक अजमेर को सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र की ट्राफी दी गई।

इससे पूर्व बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए उन्हें बल की आवास तथा कार्मिकों के बच्चों की शिक्षा से संबंधित समस्याओं से अवगत कराया।



पदक विजेताओं के साथ उपराष्ट्रपति



26 बटालियन को जम्मू कश्मीर में तैनात सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी प्रदान करते हुए उपराष्ट्रपति

इस मौके पर प्रस्तुत परेड का नेतृत्व 126 बटालियन के कमांडेट श्री के.आर.शर्मा ने किया। परेड में बल की महिला बटालियन सहित विभिन्न सैक्टरों की 8 टुकड़ियों ने भाग लिया। इनके अतिरिक्त आर.ए.एफ. तथा संचार विभाग की झांकियों सहित जम्मू–कश्मीर, महिला पर्वतीय साइकिल अभियान तथा मल खम्ब से जुड़ी झांकियां भी परेड में शामिल थीं।

के.रि.पु. बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने कहा है कि बल में सभी कार्मिकों को जनता का विश्वास जीतने के लिए एक मानवीय पुलिस बल के रूप में काम करमा चाहिए। श्री सभरवाल 58वें के.रि.पु. बल दिवस के अवसर पर 29 दिसम्बर '97 को नई दिल्ली विज्ञान भवन में आयोजित के.रि.पु. बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि लगातार तैनाती के कारण बढ़ते तनाव और दबाव के बावजूद के.रि.पु. बल ने 1997 में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने बल की संचालनिक दक्षता को बढ़ाने के लिए प्रत्येक बटालियन को एक कम्पनी को रोटेशनल ट्रेनिंग के लिए मुक्त रखने पर जोर दिया।



वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक

बल के स्पेशल महानिदेशक श्री डी.आर. कार्तिकेयन, अपर महानिदेशक उत्तर–पश्चिम जोन श्री एस.के. सेठी तथा अपर महानिदेशक प्रशासन एवं कल्याण श्री गौतम कौल भी इस मौके पर उपस्थित थे। उन्होंने विचार विमर्श में भाग लेते हुए सभी वरिष्ठ अधिकारियों से अधिक अच्छे परिणामों के लिए मिलकर काम करने का आह्वान

किया। सम्मेलन में पूरे देश से आये बल के 200 वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। सम्मेलन में तैनाती, संचालन, सम्भरण, प्रशासन तथा प्रशिक्षण से जुड़ी जरूरतों तथा समस्याओं पर विचार किया गया।

के.रि.पु. बल बैंड प्रदर्शन

58वें के.रि.पु. बल दिवस के अवसर पर 30 दिसम्बर '97 को सत्य मार्ग नई दिल्ली स्थित नेहरू पार्क में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बैंडों ने शाम चार बजे से अपना प्रदर्शन किया।

प्रदर्शन में के.रि.पु. बल के चार ब्रास बैंडों तथा दो पाईप बैंडों ने अपना प्रदर्शन किया। प्रत्येक ब्रास बैंड में 72 तथा पाईप बैंड में 48 वादक शामिल थे। ब्रास बैंडों का नेतृत्व इंस्पेक्टर एस. बी. सिंह, राजकुमार, जी. सिंह तथा सब इंस्पेक्टर एच.सी. दास ने किया, जबकि पाइप बैंड का नेतृत्व है. कां. रोशन लाल, शमशेर सिंह तथा लेखराज ने किया।

288 ब्रास तथा 96 पाइप वादकों ने अंग्रेजी तथा लोकप्रिय हिंदी गीतों की 32 धुनें दर्शकों को सुनाई।

सम्मिलित रूप से सभी बैंड़ों का नेतृत्व इंस्पेक्टर पुरूषोत्तम राम ने किया। श्री पुरूषोत्तम राम पिछले 37 वर्षों से वार्षिक के.रि.पु. बल बैंड प्रर्दशन का नेतृत्व कर रहे हैं। के.रि.पु. बल में ब्रास बैंड की स्थापना 1961 में तथा पाइप बैंड की स्थापना 1952 में की गयी थी।



*58*वें के.रि.पु. बल दिवस के अवसर पर पाईप बैंड का प्रदर्शन

बल के 30 कार्मिकों को विशिष्ट एवं

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 30 अधिकारियों और जवानों को गणतंत्र दिवस 1998 के अवसर पर राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति के विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के पदकों द्वारा सम्मानित किया गया है। इनमें से चार कार्मिकों को राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक तथा 26 को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किये गये हैं। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :–

राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक



अपर महानिदेशक एस.के. सेठी*(*महानिदेशालय*)*



अपर उप महानिरीक्षक के.डी.एस. दुल्लत *(*महानिदेशालय*)*



अपर उप महानिरीक्षक स्टेनले कोनस्टेनटाइन *(*महानिदेशालय*)*



इंस्पेक्टर एस.आर. पिल्लई *(*ग्रुप केंद्र*-1* अजमेर*)*

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक



अपर उप महानिरीक्षक यू.बी.एस. तेबतिया *(*ग्रुप केंद्र पूणे*)*



कमांडेट आर.के. दुआ *(53* बटा.*)*



कमांडेट पी.के. भट्टाचार्य *(45* बटा.*)*



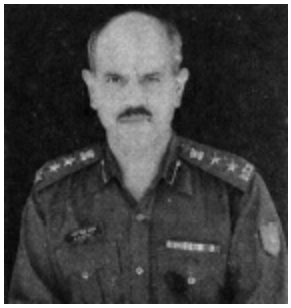
कमांडेट एस.एस. यादव *(107* बटा.*)*



कमांडेट हरबंस सिंह *(86* बटा.*)*



सहा. निदे. आर.के. सक्सेना *(*कार्या. पु. महा. परिचालन, जम्मू कशमीर*)*



सहायक निदेशक *(*प्रशिक्षण*)* एम.एस. रावत *(*महानिदेशालय*)*



कमांडेट जी.एस.एल. सक्सेना *(76* बटा.*)*



द्वितीय कमान अधिकारी किरपाल सिंह *(20* बटा.*)*



डिप्टी कमांडेट जी.पी. दूबे *(67* बटा.*)*



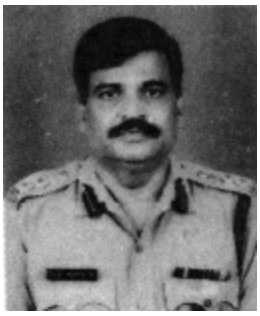
डिप्टी कमांडेट एच.एन. सिंह *(36* बटा.*)*



सहायक कमांडेट वी.के. विजय कुमार *(*ग्रुप केंद्र रंगा रेड्डी*)*



सहायक कमांडेट जगदेब सिंह *(105* बटा.*)*



मुख्य चिकित्सा अधिकारी एस.सी. महापात्र *(*ग्रुप केंद्र गांधीनगर*)*



इंस्पेक्टर सुखजीत सिंह *(*आर.टी.सी.*-2)*



इंस्पेक्टर राम कुमार यादव *(28* बटा.*)*



इंस्पेक्टर लाल सिंह भंडारी *(103* बटा.*)*



सिस्टर सुषमा अब्राहम *(*बेस अस्पताल - *1)*



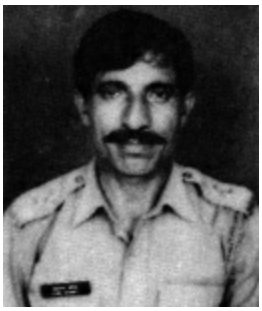
उप निरीक्षक विजय पाल शर्मा *(127* बटा.*)*



उप निरीक्षक आर.आर. चक्रवर्ती *(106* बटा.*)*



उप निरी. देव करन तंवर *(103* बटा.*)*



उप निरी. मोहम्मद शरीफ *(100* बटा.*)*



है.कां. ड्राईवर नत्था सिंह *(88* महिला बटा.*)*



है.कां. प्रभु ठाकरे *(32* बटा.*)*



है.कां. सी.बी. थापा *(91* बटा.*)*



है. कां. सी. श्रीधरन *(सी.टी.सी.-2)*

असम में पल्स पोलियो टीकाकरण

देश के अन्य भागों की तरह बोकोजान, असम में भी पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान काफी बड़े पैमाने पर चलाया गया। इसका आयोजन 7 दिसम्बर को किया गया। इस दौरान तकरीबन 12 हजार बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक दी गयी। बोकाजान पल्स पोलियो टीकाकरण अभियान के प्रभारी डा. नकुल श्याम एवं डा. डिम्बेश्वर भराली ने एक संयुक्त बयान जारी कर संवाददाताओं को बताया कि महकमा के सदर इलाके के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों को मिलाकर 9276 तथा ढिलाई के शहरी और ग्रामीण इलाके को मिलाकर 2700 बच्चों को पल्स–पोलियो की खुराक दी गयी। डा. श्याम ने बताया कि सर्वप्रथम इस अभियान की शुरूआत बोकाजान जन-स्वास्थ्य केंद्र परिसर में महकमाधिपति सनत कुमार कलिता केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 73वीं वाहिनी के कमान अधिकारी सर्वजीत सिंह एवं जन स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी डा. (श्रीमती) निवेदिता बोरा के द्वारा बच्चों को खुराक पिलाकर हुई।

डा. श्याम ने कहा कि के.रि.पु. बल की 73वीं वाहिनी के अधिकारियों एवं जवानों ने इस अभियान में बहुमूल्य योगदान दिया है।

डा. श्याम ने मीडिया प्रतिनिधियों को बताया कि के.रि.पु. बल की 73वीं वाहिनी ने हर केंद्र में दवा एवं उनमें काम करने वाले स्वयं सेवकों एवं सेविकाओं को पहुंचाने एवं वापस लाने का दायित्व लिया और बखूबी निभायी भी।



बच्चों को पोलियो ड्राप्स देते हुए *73* बटालियन के अधिकारी

डा. श्याम ने बल दिया कि के.रि.पु. बल की 73वीं वाहिनी द्वारा असम-नागालैंड के विवादास्पद सीमावर्ती इलाके से भी 51 बच्चे को यहां लाकर पल्स–पोलियो को खुराक दी गयी। बोकाजान लायंस क्लब तथा के.रि.पु. बल की 73वीं वाहिनी के संयुक्त सौजन्य से एक भ्रमणशील केंद्र का आयोजन भी किया गया। जिस दौरान यात्रा कर रहे बच्चों को खुराक उपलब्ध करायी गयी। बोकाजान रेलवे स्टेशन पर एक यात्री गाड़ी को रूकवा कर तकरीबन 21 बच्चों को पल्स–पोलियो की खुराक उपलब्ध करायी गयी।



असम के मुख्य मंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती जयश्री महंता गुवाहाटी स्थित बल के बेस अस्पताल गयी और आतंकवादी घटनाओं में घायल बल के जवानों से मिली

रक्तदान कर के.रि.पु. बल का स्थापना दिवस मनाया गया

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की नीमच रेंज के तहत कार्यरत चतुर्थ बेतार वाहिनी के तत्वावधान में बल की 58वीं वर्षगांठ 28 दिसम्बर '97 को बहुत आर्दश ढंग से मनाई गई। इस मौके पर के.रि.पु. बल की नीमच यूनिट्स के अधिकारियों एवं सैनिकों ने बल के अस्पताल परिसर में एक स्वैच्छिक शिविर आयोजित कर 144 यूनिट रक्तदान कर प्रेरक कार्य किया।

इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित डी.आई.जी.पी. के.रि.पु. बल जी.जी. शर्मा ने कहा कि फोर्स से सम्बद्ध हर व्यक्ति देश की आंतरिक सुरक्षा एवं शांति बनाए रखने के लिए दृढ़ता से प्रयत्नशील है और अनेकों कुर्बानियां दर्ज की है। इसके साथ ही मानव एवं समाज सेवा के कार्यों में भी फोर्स की भूमिका अहम रहती आई है।

इसी क्रम में रक्तदान शिविर को आयोजित कर फोर्स ने मानव सेवा के सिलसिले को आगे बढ़ाया है।

चतुर्थ बेतार वाहिनी के कमाण्डेंट जी.के. दत्ता ने कहा कि रक्तदान शिविर के माध्यम से फोर्स से सम्बद्ध लोगों ने समाज को यह संदेश देने का सराहनीय प्रयास किया है कि फोर्स केवल सुरक्षा ही नहीं वरन् समाज को अपना हर तरह का योगदान

देने हेतु समर्पित है। उन्होंने कहा कि रक्तदान शिविर से जो सिलसिला शुरू हुआ है उसे बदस्तुर आगे बढ़ाया जाएगा।

रेडक्रास सोसायटी नीमच शाखा के सचिव हस्तीमल जैन ने इस कार्यक्रम की भरपूर सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के अभियान से जरूरतमंद लोगों को समय पर रक्त सुलभ करवाकर उनकी प्राणरक्षा संभव हो सकेगी। जनसेवा के इस अपूर्व सहयोग के प्रति रेडक्रास अध्यक्ष संजय शुक्ल ने भी आभर व्यक्ति किया। उन्होंने अपेक्षा की कि आगे भी फोर्स के जवान एवं अधिकारी ऐसे आयोजन करते रहेंगे



रक्तदान करते नीमच स्थित युनिटों के कार्मिक

पिल्लई ने सीमा क्षेत्र का दौरा किया

5नवम्बर '97 को केन्द्रीय गृह मंत्रालय के उत्तर पूर्व प्रभारी संयुक्त सचिव जी.के. पिल्लई (भा.पु.से.) ने विवादास्पद असम, नगालैंड सीमावर्ती इलाके में तैनात के.रि.पु. बल की 73वीं वाहिनी मुख्यालय का दौरा किया।

यहां उन्होंने 73वीं वाहिनी के उच्चाधिकारियों के साथ एक बैठक की। इस दौरान विवादास्पद सीमावर्ती इलाके में फिलहाल उत्पन्न विभिन्न मुद्दों पर गहन विचार–विमर्श किया गया। साथ ही उन्होंने नियंत्रण के मसले पर कई महत्वपूर्ण सलाह एवं निर्देश दिये।

बैठक के तुरंत बाद संवाददाताओं से एक अनौपचारिक भेंटवार्ता के दौरान संयुक्त सचिव ने वाहिनी के कार्यकलापों के संदर्भ में संतोष व्यक्त किया। मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा पूछे गये एक प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि इस सीमावर्ती इलाके की समस्याओं का कोई न कोई स्थायी हल शीघ्र ही ढूंढा जाएगा।



भारत सरकार के संयुक्त सचिव पूर्वोत्तर क्षेत्र जी. के. पिल्लई *73* बटालियन के अधिकारियों के साथ

दो शहीदों की विधवाओं को अनुग्रह राशि

केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल उत्तरी कमान के पुलिस महानिरीक्षक डी.पी. सिन्हा ने बल के जवानों का आह्वान किया कि देश की एकता और अखण्डता को बनाए दखने के लिए मर मिटने वाले बहादुरों से प्रेरणा लें। पुलिस महानिरीक्षक अजमेर स्थित ग्रुप केन्द्र–एक के प्रांगण में आयोजित एक समारोह में जवानों को संबोधित कर रहे थे।

समारोह बल की 33वीं बटालियन के उप निरीक्षक जी.एस. भाटी और लांस नायक रामचन्द्र की विधवाओं को भारत सरकार द्वारा मंजूर अनुग्रह राशि प्रदान किए जाने के लिए आयोजित किया गया था। पुलिस महानिरीक्षक ने बल के दोनों जवानों की विधवाओं को दो–दो लाख रूपये के चैक भेंट करते हुए कहा कि जवानों के त्याग को कभी पूरा नहीं किया जा सकता। ऐसे समारोह तो यह दोहराने का जरिया भर है कि शहिदों के परिजन बल से अलग नहीं हैं। इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक ने उस घटना व घटना स्थल के हालातों का मौखिक वृतांत सुनाया। उन्होंने कहा कि जवान ऐसे शहीदों से प्रेरणा लें ताकि मौका पड़ने पर वह देश व बल के लिए त्याग एवं बलिदान की मिसाल कायम कर सकें।

उल्लेखनीय है कि उप निरीक्षक भाटी एवं लांस नायक रामचन्द्र ने गत 7 मई 97 को त्रिपुरा में ड्यूटी करते हुए अपना जीवन बलिदान कर दिया था। 33वीं बटालियन के ये जवान त्रिपुरा के चेलागांव में राजद्रोही गतिविधियों तथा कानून व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति पर काबू पाने के लिए वहां तैनात किए गए थे। 7 मई 97 को एक प्लाटून का नेतृत्व करते हुए जी. एस. भाटी बलवाइयों से मुकाबला करने जा रहे थे तभी तुसिमा और खमलुग गांव में छिपे बलवाईयों ने घात लगाकर उनपर हमला कर दिया। बल के बहादुर जवानों ने अचानक हुए हमले का डटकर मुकाबला किया। अपनी जान की परवाह न करते हुए अंततः बलवाइयों को खदेड़ने में सफल हुए। इस मुठभेड़ में श्री भाटी व लांस नायक रामचन्द्र ने अपने प्राण त्याग दिए।

समारोह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अजमेर रेंज के पुलिस उपमहानिरीक्षक एस.जी. कुकरेजा, ग्रुप केन्द्र–एक के अतिरिक्त उप महानिरीक्षक आई.एस.गिल, ग्रुप केन्द्र–दो के एस.जी. राड़ तथा दिल्ली से आए अतिरिक्त उप महानिरीक्षक जगवीर सिंह भी मौजूद थे। समारोह का संचालन द्वितीय कमान अधिकारी रघुवीर सिंह शेखावत ने किया।

माह जनवरी '98 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह जनवरी '98 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार परिवार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

हैड कांस्टेबल रास बिहारी राय (77 बटा.), कांस्टेबल एस. बासुतारी (ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी), लांस नायक संतोष कुमार (51 बटा.), कांस्टेबल एन. कनकराज (12 बटा.), हैड कांस्टेबल कालीपद महतो (सिगनल ग्रुप केन्द्र), कांस्टेबल राजपाल (103 बटा.), कांस्टेबल राजेश कुमार (120 बटा.), हैड कांस्टेबल नमन सिंह (120 बटा.), जलवाहक बी.बी. चन्द्र (12 बटा.) तथा कांस्टेबल विश्वनाथ (39 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह नवम्बर, 1997 में 129 बटा. के हैड कांस्टेबल सुखबीर सिंह तथा 132 बटा. के लांस नायक गुरमीत सिंह और दिसम्बर, 1997 में 60 बटा. के उप निरीक्षक (मं.)शंकरचन्द, 132 बटा. के कांस्टेबल प्रणब राय, सी.टी.सी.–दो के हैड कांस्टेबल आर. करूपिया, 6 बटा. के कांस्टेबल चन्द्र बाबू, 37 बटा. के हैड कांस्टेबल जी.एन. सिंह, 50 बटा. के कांस्टेबल परमजीत सिंह, 106 बटा. के उप निरीक्षक आर.आर. चक्रवर्ती, 114 बटा. के कांस्टेबल राजेन्द्र कुमार शर्मा तथा 62 बटा. के लांस नायक इन्द्र सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

त्रिपुरा में के.रि.पु. बल

सत्य प्रकाश बडोला

त्रिपुरा के इलाकों में के.रि.पु. बल की तैनाती कुछ दशक पहले से ही हुई है। सन् 1962 में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण किये जाने के साथ-साथ के.रि.पु. बल की तैनाती असम में की जा चुकी थी और जहां भी अशांति होती थी वहां शांति बनाये रखने हेतु इस बल को भेजा जाता था। त्रिपुरा में भी के.रि.पु. बल को तैनात किया गया और 1971 में भारत-पाक युद्ध के दौरान भी त्रिपुरा में के.रि.पु. बल की तीन बटालियनें थी जो कि अगरतला हवाई अड्डे के आस-पास ही थी और आवश्यकता पड़ने पर त्रिपुरा के दूर-दराज के इलाकों में भी जाती थी। के.रि.पु. बल की सेवा

भांक्ति इसकी सामाजिक सहिष्णुता और इसके द्वारा साम्प्रदायिक सद्भावना बनाये रखने में अति उत्तम भूमिका निभाये जाने के कारण के.रि.प.बल त्रिपुरा में भी लोकप्रिय हो गया। इस बल के द्वारा की गई अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवाओं के कारण ही त्रिपुरा में के.रि.पु. बल की 11 बटालियनेया 66 कम्पनियां अनेक संवेदनशील क्षेत्रों में तैनात हैं। उदारणार्थ बामन चेरा, सलीमा, गंडाचेरा, खुमलांग, नागी चेरा, घूम चेरा, महारानी किला, अमरपुर, चेला गांग, कुपियांग, शीय चेरा, घूम चेरा, नेपाली टीला, ओम्पी चचुबा, नलकटा, मूंगिया बाड़ी, आनंद बाजार, कंचनपुर, टक्कर जाला, कल्याणपुर एवं तलिया मुड़ा आदि संवेदनशील क्षेत्रों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल शांति बनाये रखने में त्रिपुरा सरकार एवं त्रिपुरा प्रशासन को निरन्तर सहायता दे रहा है।

गत पांच वर्षों में के.रि.पु. बल ने त्रिपुरा में 900 से भी अधिक अपहृत लोगों को आतंकवादियों के चुंगुल से छुड़ाया। काउन्टर इन्सरजेन्सी के अतिरिक्त आर.ओ.पी. इस्कोर्ट ड्यूटी, वी.आई.पी. ड्यूटी, पेट्रोलिंग, लांग रेंज पेट्रोलिंग, अम्बुश, रेड एवं नाका ड्यूटियां स्वतंत्र रूप से और स्थानीय पुलिस एवं अन्य सुरक्षा बलों के साथ संयुक्त रूप से के.रि.पु. बल प्रभावकारी ढंग से निभा रहा है। बल के पास अब आधुनिकतम आग्नेय शस्त्र प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। अतः के.रि.पु. बल विकट से विकट परिस्थिति का दृढ़ता से राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करने में सक्षम होने के कारण स्थानीय जनता के विश्वास का पात्र बन गया है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का विस्तार अधिक होने के कारण इसका कार्य क्षेत्र भी विस्तृत है और त्रिपुरा जैसे दूर दराज के इलाकों में भाषा–भोजन, सांस्कृतिक एवं अन्य अनेक विभिन्नताएं होते हुए भी बल के बहादुर जवान प्रतिकूल परिस्थितियों में राज्य सरकार एवं जनता की सेवा कर रहे हैं।

अपने अथक प्रयासों से के.रि.पु. बल ने मात्र एक वर्ष की अवधि में सैकड़ों आतंकवादियों को पकड़ा। उनमें से अधिकांश जेलों में ही बंद हैं। बल के बहादुर जवानों और अधिकारियों ने अनेक सर्च, रेड, अम्बुश, नाका आदि कार्यवाइयों में बड़ी मात्रा में बन्दूकें, राइफलें एवं भारी मात्रा में गोला-बारूद बरामद करके वर्तमान आतंकवाद को सीमित करने का सफल प्रयास किया है। त्रिपुरा शासन द्वारा के.रि.पु. बल की बढ़ती हुई मांग के कारण बल की तैनाती भी बढ़ रही है। अतः फोर्स को अधिक प्रभावशाली ढंग से चलाने एवं उसका मार्गदर्शन करने के लिये 1980 में पुलिस उप महानिरीक्षक को त्रिपुरा में नियुक्त किया गया। अब यहां पर के.रि.पु. बल की 66 कम्पनियां आ गई तो के.रि.पु. बल की और से नियमितता बनाए रखने और उच्च कोटि का नेतृत्व प्रदान करने हेतु इसी वर्ष त्रिपुरा में श्री एम.एस. फारूकी प्रथम पुलिस महानिरीक्षक भी नियुक्त किये गये। बल के जवान एवं अधिकारी स्वास्थ्य कैम्प सिविल एक्शन कैम्प एवं स्थानीय जनता के साथ अनेक खेलों का आयोजन करके स्थानीय जनता का विश्वास जीतने का भरसक प्रयास कर रहे हैं।



दिल्ली में राष्ट्रीय अपराध शास्त्र एवं विधि विज्ञान संस्थान द्वारा संयुक्त राष्ट्र के अंतर्राष्ट्रीय अपराध निरोधक विभाग के साथ आग्यनेशास्त्रों की रोकथाम के लिए आयोजित कार्यशाला की जानकारी संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधि स्लावोमीर रेडो तथा एन. आई.सी.एफ.एस. के निदेशक श्री कमल कुमार ने पत्रकारों को दी

विविधा

सिपाही

सिपाही हूं - मेरा जीवन फकत सेवा है खिदमत है,
मेरा जीना अताअत है, मेरा मरना शहादत है।
मुझे इन गर्म खानों का भला क्या जायका लोगों,
सिपाही हूं - जिगर पे घाव खाने ही में लज्जत है।
मुझे मालूम क्या बिस्तर की राहत किस को कहते हैं,
अन्धेरी रात के पहरे मेरी महबूब फितरत हैं।
मुझे होटों की सुरखी और गाजे से तआलुक क्या,
मुझे सरहद की सुबहे नौ की सुरखी की जरूरत है।
मेरे कानों की दुनिया को मधुर तानों से क्या मतलब,
मुझे तो असलहें की घन गरज चीखों की आदत है।
मेरी पत्नी, मेरे बच्चे, मेरे माता-पिता सब हैं,

मगर मुझ को वतन के पूरे कुन्बों से मुहब्बत है।
मुबारक हो ये दिन ईद व दिवाली और क्रॅसमस के,
हमारी ईद व दिवाली तो सुरक्षा और हिफाजत है।
हमें इन मंदिर व मस्जिद के झगड़ों से तआलुक क्या,
सिपाही का धर्म सेवा, सुरक्षा और चाहत है।
यहां हिन्दू व मुसलिम, सिख, इसाई कुछ नहीं होते,
यहां जब जखम लगते हैं तो खून की एक रंगत है।

– हसन खुर्शीद

मैं पी.ए. हूं

कोई आता उसे आदर से बैठाता।
"साहब" को झट से चिट भिजवाता, मैं पी.ए. हूं।
"साहब" जब उन्हें बुलवाता।
मैं अन्दर करके खिसक आता, मैं पी.ए. हूं।
"साहब" फिर मुझे बुलाता।
उनकी फरियाद मुझे सुनाता, मैं पी.ए. हूं।
मैं चुपचाप सुनता जाता,
फिर जल्दी दफ्तर में जाता।
फाईल झट निकलवाता,
हर काम फटाफट करवाता, मैं पी.ए. हूं।
हो ट्रांसफर या प्रमोशन,
या फिर हो डैपुटेशन,
सब कुछ झटपट से निपटाता, मैं पी.ए. हूं।
उनको सुविधा साहब को सुविधा,
सब की चिन्ता दूर भगाता।
फिर मैं हूं मुसकाता, मै पी.ए. हूं।
उनको सुविधा साहब को सुविधा,
सब की चिन्ता दूर भगाता।
फिर मैं हूं मुसकाता, मैं पी.ए. हूं।
बिन मांगे सब कुछ मिल जाता,

अपने घर को खूब महकाता, मैं पौ.ए. हूं।

– एस.सी. निरवाल,
सेवानिवृत सहायक निदेशक (गोपनीय)
महानिदेशालय, के.रि.पु. बल



महिला पर्वतीय साइकिल अभियान की समाप्ति पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य प्रस्तुत करती हुयी *88* महिला बटालियन की लांस नायक जयलक्ष्मी

रजि. न. 4767/87



गणतंत्र दिवस '98 परेड में शामिल बल की महिला टुकड़ी

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 12 अंक - 2 31 मार्च, 1998 9 चैत्र, शक 1920





हाल ही में जम्मू–कश्मीर में हुए लोक सभा चुनावों के दौरान श्रीनगर में तैनात बल के कार्मिक



20 बटालियन के कमांडेंट श्री एच. आर. सिंह पल्स पोलियो अभियान के दौरान एक बच्चे को पोलियो ड्राप्स देते हुए

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-12 अंक-2
31 मार्च, 1998
10 चैत्र, शक 1920

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279



इस अंक में

चुनावों के दौरान के.रि.पु. बल की भारी तैनाती
जम्मू कश्मीर के राज्यपाल ने के.रि.पु. बल के कार्यों की प्रशंसा की
111 बटालियन द्वारा चिकित्सा शिविर का आयोजन
73 बटालियन द्वारा पल्स पोलियो अभियान
फोटो फीचर
66 बटालियन द्वारा चिकित्सा शिविर का आयोजन
के.रि.पु. बल फुटबाल प्रतियोगिता

श्रीनगर स्थित बल का अस्पताल

लालच

कविता

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

-संपादक

चुनावों के दौरान के.रि.पु. बल की भारी तैनाती

- डी.जी. महापात्र

12वीं लोकसभा के चुनावों के दौरान फरवरी और मार्च '98 में मतदान को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने के लिए के.रि.पु. बल कार्मिकों की भारी तदात में तैनाती की गयी इस दौरान उन्हें तत्काल एक स्थान से दूसरे स्थान तक वायु मार्ग से भी स्थानांतरित किया गया। अन्य पुलिस बलों के साथ-साथ के.रि.पु. बल कार्मिकों की तैनाती और सक्षमता के कारण इस बार के चुनाव अपेक्षाकृत अधिक शांतिपूर्ण और सुचारू रहे। विशेषकर आतंक से ग्रस्त उत्तर पूर्वी राज्यों और जम्मू-कश्मीर में चुनाव बिना किसी बड़ी घटना के संपन्न हुए। इन राज्यों के लोगों का चुनाव के प्रति बढ़ा हुआ उत्साह लोकतंत्र तथा शासन के प्रति उसकी आस्था का ही प्रतीक है।

लोकसभा चुनावों के दूसरे दौर के दौरान 6, 7 मार्च '98 को लेखक स्वयं कश्मीर में मौजूद था और इस अपेक्षाकृत अशांत क्षेत्र में लोकतंत्र के इस महायज्ञ का वह साक्षी रहा।

मतदान के इस दूसरे दौर में कश्मीर में भारी रूप से के.रि.पु. बल की तैनाती की गयी थी।



श्रीनगर में मतदान के लिए पंक्तियों में खड़े मतदाता

बल की 52 कम्पनियां पुलवामा जिले में तथा 68 कम्पनियां अकेले अनंतनाग में तैनात थी। हालांकि खराब मौसम के कारण उधमपुर संसदीय क्षेत्र का चुनाव 18 मार्च '98 के लिए टाल दिया गया अन्यथा वहां भी के.रि.पु. बल की 48 कम्पनियों को तैनात

किया गया था।

राज्य में बल की मांग को पूरा करने के लिए बल की 70 कम्पनियों को असम, नागालैंड तथा त्रिपुरा के वायु मार्ग के जरिए कश्मीर पहुंचा कर चुनाव कार्यों में लगाया गया। जबकि 56 कम्पनियों को आंध्रप्रदेश, असम, बिहार तथा दिल्ली के रेल मार्ग द्वारा यहां पहुंचाया गया।

यहां प्रत्येक नोडल केंद्र पर संचार केंद्रों की स्थापना की गयी जो कि सीधे कम्पनियों या बटालियन मुख्यालयों से जुड़े थे। इससे संदेशों के आदान-प्रदान में बहुत मदद मिली।



मतदान के दौरान तैनात के.रि.पु. बल कर्मी

जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल ने के.रि.पु. बल के कार्यों की प्रशंसा की

हाल ही में जम्मू-कश्मीर में शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुए लोकसभा चुनाव के दौरान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की प्रभावी भूमिका के लिए जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल जनरल के. बी. कृष्णाराव ने बल के अधिकारियों एवं कार्मिकों की प्रशंसा की है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा जम्मू-कश्मीर में प्रदान की गई सेवाओं की प्रशस्ति स्वरूप उन्होंने के.रि.पु. बल के महानिरीक्षक परिचालन जम्मू-कश्मीर को एक ट्राफी भी प्रदान की।

19 मार्च '96 को श्रीनगर स्थित अमर सिंह क्लब में के.रि.पु. बल के 60 बटा.

परिसर में के.रि.पु. बल अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए जनरल कृष्णाराव ने जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद से निबटने के लिए के.रि.पु. बल की भूमिका की प्रशंसा कर करते हुए कहा कि बल के जवान यहां विपरीत स्थितियों में भी दृढ़ निश्चय तथा साहस के ?? कार्य कर रहे हैं। उन्होंने अर्द्धसैनिक बलों का आह्वान करते हुए कहा कि वे आतंकवाद के विरूद्ध अपनी मुहिम जारी रखें, हालांकि आतंकवाद पर काफी हद तक काबू पाया जा चुका है किन्तु फिर भी इसके समूल नाश में अभी कुछ वक्त लगेगा।

इस मौके पर उपस्थित जवानों और अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री श्री फारूख अब्दुल्ला ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के लोग शुरू से ही भारत के साथ हैं तथा इस सम्बन्ध में कोई भी शक नहीं होना चाहिए। उन्होंने देश विद्रोही तत्वों के विरूद्ध संघर्ष की के.रि.पु. बल तथा अन्य अर्द्धसैनिक बलों की उच्च परम्परा की प्रशंसा की।



के.रि.पु. बल कर्मियों को सम्बोधित करते हुए जम्मू कश्मीर के राज्यपाल

इससे पूर्व के.रि.पु. बल के महानिरीक्षक परिचालन जम्मू-कश्मीर श्री सी.एम. पाण्डेय ने राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए घाटी में के.रि.पु. बल की उपलब्धियों तथा आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए किये गए कार्यों की जानकारी दी। साथ ही उन्होंने स्थानीय गरीब जनता को सिविक एक्शन प्लान के जरिये उपलब्ध कराये जाने वाली सहायताओं तथा अमरनाथ यात्रा के दौरान उपलब्ध कराये गये मुफ्त चिकित्सा कैम्पों आदि की भी जानकारी प्रदान की।

उल्लेखनीय है कि घाटी में हाल के संसदीय चुनाव के.रि.पु. बल तथा अन्य सुरक्षा

बलों की सतकता के कारण बिना किसी बड़ी दुर्घटना के शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुए।

राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री ने आतंकवादियों द्वारा बरामद हथियारों गोलीबारूद तथा वायरलैस सेट आदि का भी निरीक्षण किया बल के कार्मिकों ने इन हथियारों को विभिन्न अभियानों के दौरान जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों से बरामद किया था। 1998 में अब तक के.रि.पु. बल ने जम्मू-कश्मीर में 75 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है जबकि विभिन्न मुठभेड़ों में 5 आतंकवादी मारे गये हैं। इन कार्रवाइयों में बल के जवानों ने 54 ए.के. सीरीज की रायफलें, 11 पिस्तौलों/रिवाल्वरों के साथ भारी मात्रा में आई.ईडी. माइन्स, राकेट तथा अन्य विस्फोटक भी बरामद किये।

111 बटालियन द्वारा चिकित्सा शिविर का आयोजन

डिब्रूगढ़ में तैनात के.रि.पु. बल की 111वीं वाहिनी ने शहर से करीब 81 कि.मी. दूर तिगंखोंग थाना के अंतर्गत ग्राम-धमान में 30 दिसंबर 1997 को एक दिवसीय निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। शिविर का उद्घाटन उस क्षेत्र के सबसे वृद्ध व्यक्ति जितेंद्र सोनोबाल ने किया । उस समय वाहिनी के कमाण्डेंट बी.पी. थापा, डिब्रूगढ़ जिला पुलिस अधीक्षक अनिल फूकन, असम मेडिकल कालेज से आए चिकित्सगण, अन्य अधिकारीगण एवं स्थानीय ग्रामीण जनता उपस्थित थी।

सुबह से ही वहां ग्रामीण वासियों की भीड़ जमा होनी शुरू हो गई थी। आसपास के 15-16 गांवों से आए करीब एक हजार से अधिक मरीजों ने वहां मुफ्त इलाज करवाया। शिविर का उद्घाटन उस क्षेत्र के सबसे वृद्ध व्यक्ति जितेंद्र सोनोवाल ने किया।

असम मेडिकल कालेज के 12 विशेषज्ञ चिकित्सकगण जैसे शिशु रोग, स्त्री रोग, अस्थि रोग, चक्षु रोग, कान-नाक, गला रोग, दंत रोग और औषधि विशेषज्ञों ने रोगियों का इलाज किया। नामरूप, नहरकटिया एवं तिगंखोंग के चिकित्सकों ने भी रोगियों का इलाज किया। वाहिनी के चिकित्साधिकारी डा. रवींद्र कुमार ने अपनी देख-रेख में शिविर में मुफ्त दवाइयां वितरित की। डा. कुमार ने बताया कि दवाइयों की कोई कमी नहीं थी। क्योंकि के.रि.पु. बल ने सामाजिक कल्याण कार्यक्रम के तहत अतिरिक्त राशि स्वीकृति की है तथा डिब्रूगढ़ ने कई चिकित्सकों से मिलकर फिजिशियन सैम्पल की दवाइयों को एकत्र किया गया था। मरीजों में बच्चों, औरतों एवं वृद्धों की संख्या ज्यादा थी।



चिकित्सा शिविर का लाभ लेने के लिए उमड़े स्थानीय नागरिक

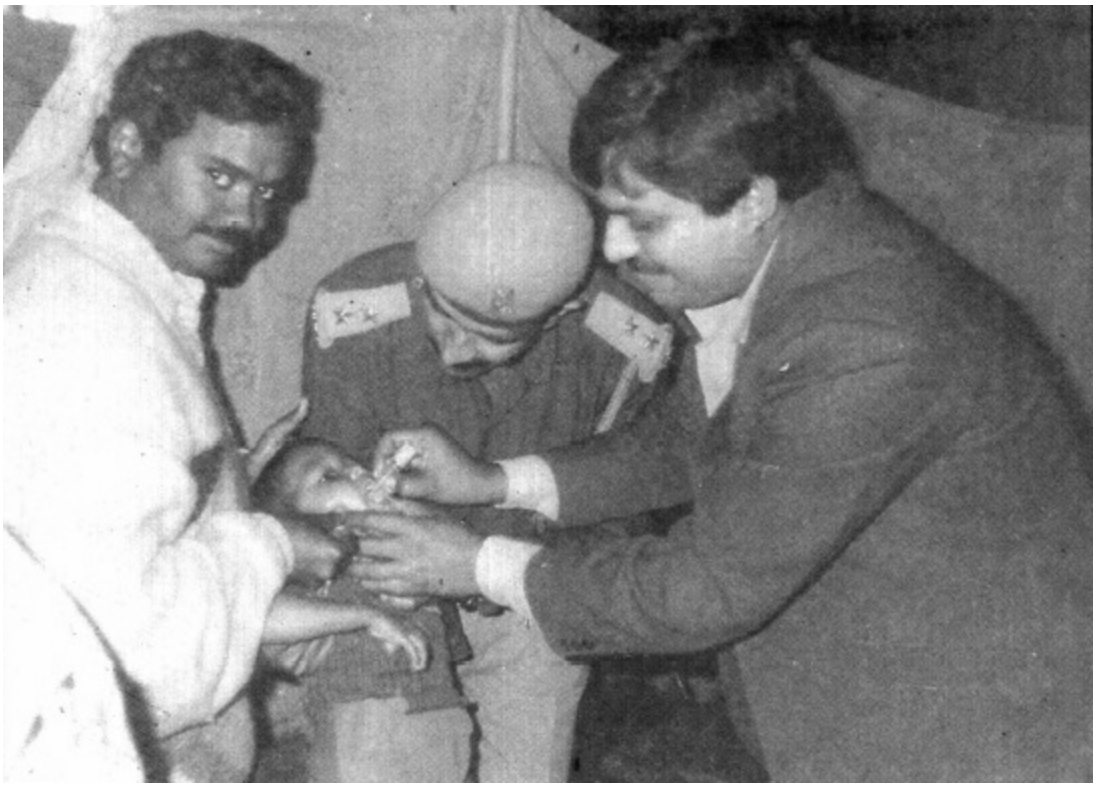
111वीं वाहिनी के.रि.पु. बल के कमांडेंट बी.पी. थापा ने बल के तरफ से सभी सहयोगी चिकित्सकों को धन्यवाद करते हुए कहा कि उनके सहयोग से इस क्षेत्र के ग्रामीण वासी रोग मुक्त होकर अच्छे स्वास्थ्य के साथ नये साल में प्रवेश करेगें और स्वस्थ रहेगे। श्री थापा ने आगे कहा कि निकट भविष्य में इस तरह के अन्य मेडिकल कैंप भी लगाए जाएंगे साथ ही ग्रामीण स्कूली बच्चों में क्रीड़ा की भावना जागृत करने के लिए खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा। बल के उप कमांडेंट राम प्रसाद शर्मा ने बताया कि चिकित्सा शिविर के साथ-साथ वहां बल की ओर से ग्रामीणों के लिए कैंटीन की सुविधा भी प्रदान की गई थी। इस तरह के सामाजिक कल्याणकारी कार्यक्रम से के.रि.पु. बल के प्रति जनता में एक विश्वास का माहौल बना है।

डिब्रूगढ़ जिला पुलिस अधीक्षक अनिल फूकन भी शिविर में उपस्थित रहे और रोगियों के अप्रत्याशित भीड़ और जनता में उत्साह को देखते हुए बल के इस कार्य की सराहना की।

*73*वीं वाहिनी द्वारा पल्स पोलियो अभियान

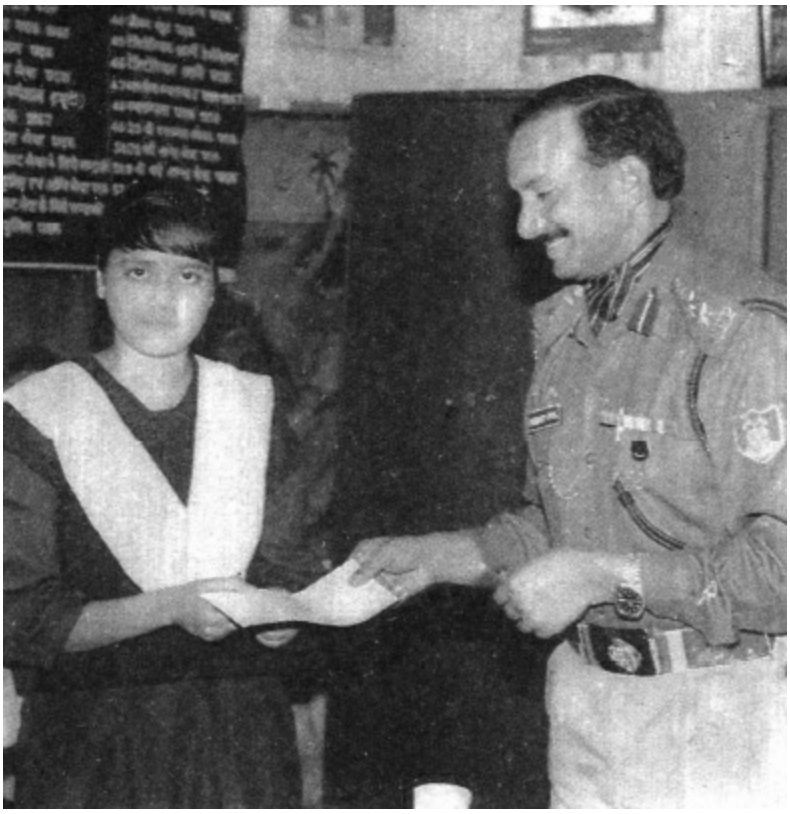
18 जनवरी 1998 को 73 बटालियन द्वारा तीन स्थानों पर पल्स पोलियों को खुराक पिलाने हेतु कैम्प लगाया गया। यह कैम्प कार्बियांगलांग जिला के कालीबाड़ी-बोकाजान, लाहोरीजान व हिडीपी नामक स्थानों पर लगाया गया। कालीबाड़ी-

बोकाजान कैम्प का नेतृत्व श्री एस.एस. सन्धू, कमाण्डेंट-73 बटालियन, के.रि.पु. बल, श्री एन.पी. श्रीवास्तव, द्वितीय कमान अधिकारी, 73 बटा. के.रि.पु. बल, लोहारीजान व हिडीपी का नेतृत्व श्री ए.एस. झाला, सहायक कमाण्डेंट कर रहे थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में वाहिनी के अधिकारी-जवानों ने बहुत ही मन से कार्य किया। चार दिन पूर्व बोकाजान व आस-पास के गांवों-कस्बों में इसका प्रचार संबंधित क्षेत्र की भाषाओं में किया गया, ताकि लोग इसको भली-भांति से समझ सकें और इसका पूरा-पूरा लाभ उठा सकें। दिनांक 18 जनवरी, 1998 को इस समारोह का उद्घाटन श्री एस.एस. सन्धू, कमाण्डेंट, 73 बटा. के.रि.पु. बल के द्वारा किया गया। पल्स पोलियों की खुराक पिलाने हेतु गांवों व दूर-दराज के इलाकों से महिलाएं अपने बच्चों को लेकर सुबह ही पहुंच गई थी। पल्स पोलियो की खुराक पिलाने हेतु वाहिनी के फार्मासिस्ट डी. के. राजू व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, बोकाजान के कार्मिकों ने भी अपना सहयोग प्रदान किया। महिलाओं व बच्चों को आने-जाने में कोई तकलीफ न हो इसे ध्यान में रखते हुए वाहनों की भी व्यवस्था की गई थी। दूर-दराज से आये लोगों के खान-पान का ध्यान रखते हुये वाहिनी द्वारा चाय-नाश्ते व आवश्यक सामग्री की उचित दर पर व्यवस्था की गई थी। एक दल घूम-घूमकर बच्चों को खुराक पिला रहा था। यही नहीं बोकाजान रेलवे स्टेशन पर रूकी गाड़ी में कुछ बच्चों को भी पोलियों की खुराक पिलायी गयी। इस प्रकार कुल 12,778 बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक पिलायी गयी। सुरक्षा की दृष्टि से कैम्प के आस-पास जवानों को तैनात किया गया था तथा मोबाईल पेट्रोलिंग भी की जा रही थी। जिसका नेतृत्व श्री पी.एस. चारक, उप कमाण्डेंट (परिचालन) कर रहे थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, बोकाजान के प्रभारी श्री एन. श्याम तथा अंचलाधिकारी श्री एस. कालिता का योगदान भी सराहनीय रहा। लायन्स कल्ब के सदस्यों ने भी काफी सहयोग प्रदान किया । वाहिनी के द्वारा किये गये कार्यों की नागरिक प्रशासन द्वारा भी काफी प्रशंसा की गई।



73 बटालियन के कार्मिक बच्चों को पोलियो ड्राप्स देते हुए

फोटो फीचर



आईजोल स्थित *48* बटालियन ने आजादी की *50*वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में बच्चों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता के विजेताओं को कमांडेंट सुरेंद्र पाल ने पुरस्कार प्रदान किये।



आजादी की *50*वीं सालगिरह के अवसर पर ग्रुप केंद्र बनतलाब ने *17* दिसंबर-*98* को परिवार कल्याण दिवस का आयोजन किया। जिसमें शहीद कार्मिकों के परिवारों की समस्याएं सुनी गयीं।



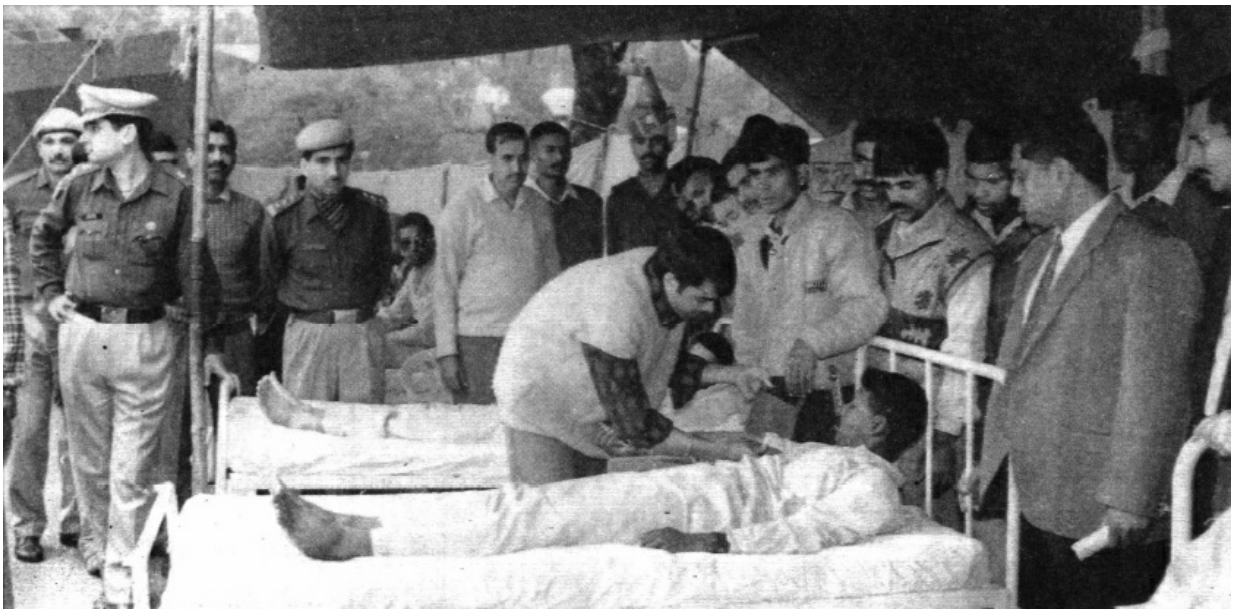
श्रीनगर स्थित *20* बटालियन कौमी एकता जैसे मुद्दों पर प्रभात फेरी जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करती रहती है।



सिविल एक्शन कार्यक्रम के तहत इम्फाल स्थित *77* बटालियन ने ग्रामीण इलाकों में अस्थायी शौचालयों का निर्माण किया।



आजादी की *50*वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में ईटानगर स्थित *43* बटालियन ने छात्रों के लिए कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। समारोह की अध्यक्षता अरूणाचल के राज्यपाल ने की। *43* बटालियन के कमांडेट श्री एस.ए.एम. काजमी ने राज्यपाल श्री माता प्रसाद को एक स्मृति चिह्न भी भेंट किया।



4 **सिगनल बटालियन द्वारा नीमच में आयोजित किये गये रक्तदान शिविर में भारी संख्या में कार्मिकों ने भाग लिया ।**

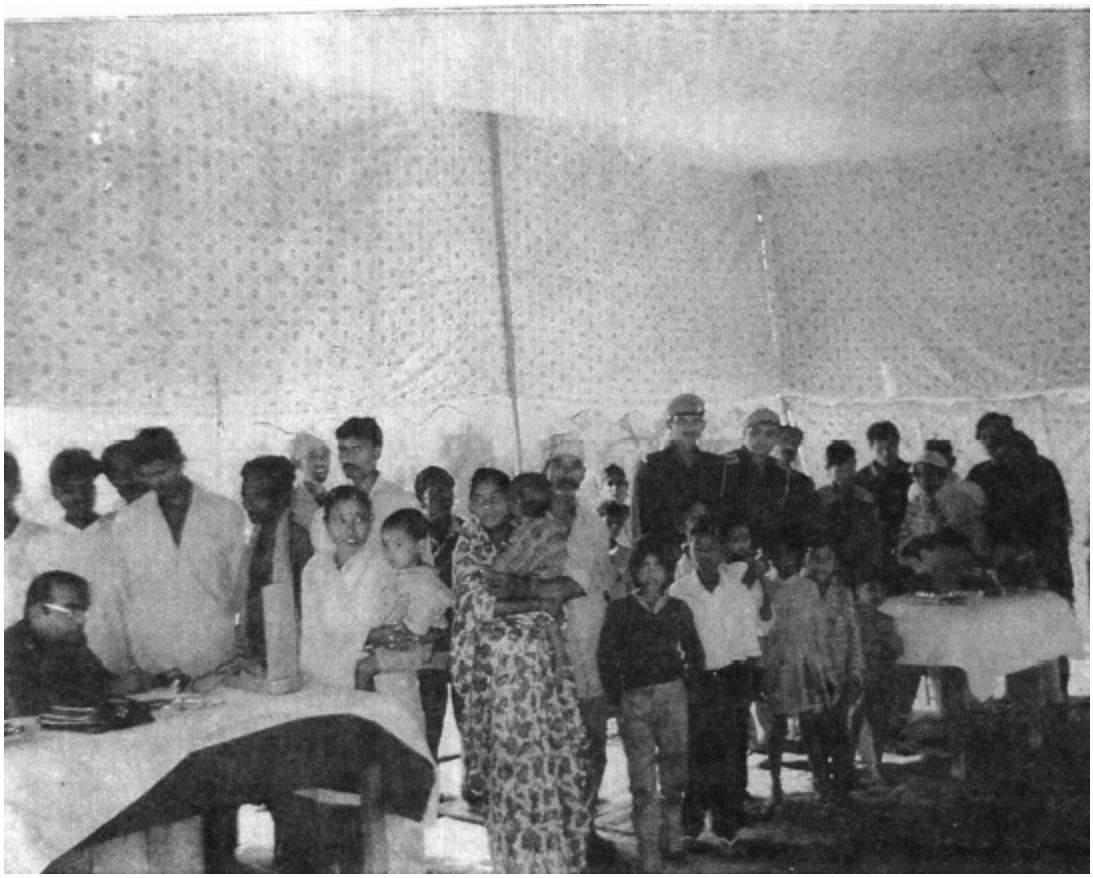
66 बटालियन द्वारा चिकित्सा शिविर का आयोजन

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की 66वीं बटालियन द्वारा जनकल्याण के लिए किए जा रहे कार्यों की श्रृंखला में गत 27 दिसंबर को असम के शोणितपुर जिले के विश्वनाथ चारिआली थाने के अंतर्गत वालीचाग नामक गांव में एक निशुल्क परीक्षण एवं औषधि वितरण शिविर बटालियन के कमांडेंट बी.आर. कामथ के निर्देशन में सुचारू रूप से संपन्न हुआ।

इस पिछड़े इलाके में अत्यंत साधन विहीन बोड़ों एवं अन्य जनजातियों के लोग रहते हैं। इस शिविर के आयोजन को सफल करने हेतु शोणितपुर जिला उपायुक्त नव कुमार चेतिया तथा पुलिस अधीक्षक भाष्कर ज्योति महंत ने महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त किया।

इस शिविर में असम–अरूणाचल सीमा पर बसे गरीब तथा जरूरतमंद 622 ग्रामीणों के विभिन्न प्रकार के रोगों का उपचार किया गया तथा निःशुल्क औषधियां प्रदान की गई । रपथार, सलाईकाटी, डिलीचांग, भीमाजुली, मूली, खैरबाड़ी, नाहोरनी, ताराजुली तथा इरांगपुरा आदि के गांवों के निवासियों को इस शिविर के आयोजन से विशेष लाभ पहुंचा। सी.एस.डी. कैंटीन सुविधा द्वारा ग्रामीणों को सस्ती कीमत पर आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई गई। इसके अलावा चारद्वार नामक स्थान पर बच्चों को पोलियो की खुराक प्रदान करने हेतु भी एक शिविर लगाया गया

जिसमें आसपास के इलाकों के सैंकड़ों बच्चों को पोलियों खुराक प्रदान की गईं।



73 बटालियन के कार्मिक बच्चों को पोलियो ड्राप्स देते हुए

उल्लेखनीय है कि नगरपालिका कर्मियों की हड़ताल के कारण तेजपुर शहर में पीने के पानी के अभाव के दूर करने के लिए सी.आर.पी.एफ. के सैंकड़ों जवानों ने टैंकरों द्वारा जनता को पीने का पानी मुहैया कराया तथा मुख्य मार्गों पर जमा कूड़े–कर्कट के अंबार को ट्रैक्टरों में डालकर शहर से गंदगी दूर की। इस सफाई अभियान की के.रि.पु. बल के कमांडेंट एवं अन्य अधिकारी, जिला उपायुक्त, पुलिस अधीक्षक ने पूरे दिन अपने व्यक्तिगत निरीक्षण द्वारा देखरेख की। के.रि.पु. बल द्वारा चलाई जा रहीं जनकल्याण कार्यकारी योजनाओं की सर्वत्र सराहना की जा रही है।

के.रि.पु. बल फुटबाल प्रतियोगिता



प्रतियोगियों का स्वागत करते हुए *11* बटालियन के उपकमांडेंट उमाशंकर

5फरवरी, 1998 को असम के उत्तर लखीमपुर जिला के नवबोइचा नामक स्थान पर 11 बटालियन के.रि.पु. बल के द्वारा जनबोश्चा उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के सहयोग से एक दिन की कार्यसूची में नवपोश्चा उ.मा. विद्यालय के क्रीड़ा स्थल में चार टीमों के बीच में फुटबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस प्रतियोगिता के प्रारंभ में 11 बटालियन के उप कमांडेंट श्री उमाशंकर सिंह ने जनसाधारण का स्वागत एवं संबोधित करते हुए कहा – "भारत सरकार के आर्थिक सहायता के द्वारा जनसाधारण और के.रि.पु. बल के बीच भाईचारा बनाये रखने और देश में देशद्रोही शक्तियों का नाश करके देश में सभी जाति एवं धर्मों के बीच शांति–समन्वय बना सकें। इसी उद्देश्य से नवबोश्चा के छात्रों के बीच फुटबाल प्रतियोगिता का आयोजन कर रहे हैं।"

फुटबाल की पहली प्रतिस्पर्धा नवबाइचा उच्च माध्यमिक विद्यालय और कला खोआ आर्दश बापूजी विद्यालय के बीच खेली गयी। फाईनल मैच नवबोइचा उ.मा. विद्यालय और रहाली हाई स्कूल के बीच खेला गया। रहाली हाई स्कूल को नवबोइचा उ.मा. विद्यालय को 4–2 गोल के अंतर से पराजित कर विजयी होने का सम्मान हासिल किया।

के.रि.पु. बल ने 212 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों ने माह फरवरी '98 में 212 आतंकवादियों

को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई 14 मुठभेड़ों में सात आतंकवादी मारे भी गये।

गिरफ्तार आतंकवादियों को सबसे ज्यादा तादात उत्तर पूर्वी राज्यों में रही जहां 70 आतंकवादी गिरफ्तार किये गये, अकेले असम में ही 50 आतंकवादी गिरफ्तार किये गये। 55 आतंकवादी बिहार तथा 30 को जम्मू–कश्मीर में गिरफ्तार किया गया।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 95 घातक हथियार तथा 31514 गोलीबारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में 16 ए.के. रायफलें, 4 ए.के. 56 रायफलें, 27 पिस्तौलें और रिवाल्वरें, 6 कारबाइन तथा एक राकेट लांचर शामिल है। इनमें 36 हथियार अकेले जम्मू–कश्मीर से बरामद किये गये।

इन मुठभेड़ों तथा आतंकवादियों द्वारा लगायी गयी घातों में इस माह के.रि.पु. बल के नौ जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 17 गम्भीर रूप से घायल।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह जनवरी 1998 में मृत्यु के 36 मामलों में कुल 25,75,500 रूपये देने स्वीकृत किये गये। अक्षमता के पांच मामलों में भी 75,000 रूपये की राशि स्वीकृत की गयी।

जोखिम निधि "बी" से भी इसके 10 सदस्यों की मृत्यु के मामले में 3,50,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। माह फरवरी '98 में जोखिम निधि 'बी' से इस के सदस्यों की मृत्यु के 30 मामलों में 21,75,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। अक्षमता के चार मामलों में भी 60,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

श्रीनगर स्थित बल का अस्पताल

कश्मीर घाटी में आतंवाद के उदय के साथ ही इस राज्य में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की तैनाती लगातार बढ़ती रही है, बल के कार्मिक यहां अपनी जान जोखिम में डालकर आतंकवाद का सामना करने में लगे हैं इस अभियान के दौरान उन्हें अक्सर बिल्कुल विपरीत स्थितियों में कार्य करते हुए गोली, बम तथा भूमिगत विस्फोटों का सामना करना पड़ता है। कश्मीर स्थित यूनिटों के मेडिकल रूम इन घटनाओं में घायल बल के जवानों के उपचार के लिये पूरी तरह सक्षम नहीं थे अतः उन्हें विशेषज्ञ सेवाओं के लिये स्थानीय अस्पतालों पर निर्भर करना पड़ता था जिनका रवैया प्रायः बहुत अधिक सहयोग पूर्ण नहीं था। लिहाजा बिमार और घायल कार्मिकों को सड़क या वायुमार्ग द्वारा जम्मू या दिल्ली भेजना पड़ता था।

इन हालात में कश्मीर में एक आधुनिक सुविधाओं से युक्त अस्पताल की जरूरत को महसूस करते हुए गृह मंत्रालय से स्वीकृति मिलने के बाद श्रीनगर से 30 किलोमीटर दूर अवन्तिपुर में 1990 में एक 20 बिस्तर वाले अस्पताल की स्थापना की गई, अस्पताल ने कम से कम जरूरी स्टाफ, दवाओं तथा उपकरणों के साथ कार्य

शुरू किया।

1991 में यह महसूस किया गया कि अवन्तिपुर में इस अस्पताल की सुविधाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठाया जा रहा है और इस अस्पताल को किसी केन्द्रीय स्थान पर स्थानान्तरिक करने की आवश्यकता है ताकि कशमीर स्थित सभी कार्मिक इस का लाभ उठा सके तभी इसे श्रीनगर स्थित रामबाग काम्पलैक्स में स्थायी रूप से स्थानान्तरित कर दिया गया, स्थान तथा संगठनात्मक दिक्कतों के बावजूद अस्पताल ने दवाओं, सर्जरी तथा अन्य क्षेत्रों में अपनी सुविधाओं का पूर्ण उपयोग करना शुरू कर दिया।

इस अस्पताल में एक आपरेशन थियेटर, प्रयोगशाला, एक्सरे यूनिट, साइकोथैरेपि सेन्टर तथा संक्रामक बीमारियों के लिये अलग विभाग कार्य कर रहा है। वर्तमान में यह अस्पताल आतंकवादी घटनाओं में घायल बल के जवानों के उपचार के साथ–साथ घाटी स्थिल बल के कार्मिकों को अन्य चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध करा रहा है। अस्पताल के डाक्टर तथा अन्य स्टाफ पूर्ण समर्पण के साथ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उद्देश्य वाक्य सेवा एवं भक्ति के अनुरूप अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों की परवाह न करते हुए अपने कर्तव्य की इंतजाम दे रहे हैं।

माह फरवरी '98 में मृत बल के कार्मिक

माह फरवरी '98 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। के.रि.पु. बल समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल विश्वनाथ यादव (90 बटा.), सहायक कमांडेंट दिलीप कुमार (96 बटा.), हैड कांस्टेबल गोपाल चौधरी (49 बटा.), कांस्टेबल जयदेव (महानिदेशालय), सहायक कमांडेंट विद्यासागर (10 बटा.), कांस्टेबल सुरेश कुमार (74 बटा.), लांस नायक श्याम फर (112 बटा.), उप निरीक्षक जोगिंदर सिंह (98 बटा.), हैड कांस्टेबल नैतराम (98 बटा.), लांस नायक सुनील कुमार (98 बटा.), कांस्टेबल मोहम्मद रफीक (98 बटा.), कांस्टेबल मेजर सिंह (98 बटा.), कांस्टेबल परमजीत सिंह (98 बटा.), कांस्टेबल रसजाल देव (98 बटा.), कांस्टेबल राजेन्द्र प्रसाद (98 बटा.), हैड कांस्टेबल शम्भु प्रसाद (50 बटा.), हैड कांस्टेबल भंवर सिंह (1 बटा.), सफाई कर्मचारी मोहन हरिजन (सी.टी.सी.-3), कांस्टेबल शैलेश कुमार (41 बटा.), हैड कांस्टेबल सुबे सिंह (51 बटा.), कांस्टेबल रिलीम वैश्य (35 बटा.), कुक जयंत सैकिया (49 बटा.) तथा कांस्टेबल अब्दुल कादिर खान (ग्रुप केन्द्र-2 अजमेर)

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह नवंबर '97 में 7 बटा. के लांस नायक उमेश यादव, दिसंबर '97 में 7 बटा. के इंस्पेक्टर डी. जी. सुभाष, ग्रुप केन्द्र जमशेदपुर के कांस्टेबल अतिकाश बोरा तथा ग्रुप केन्द्र इम्फाल के स.उ.नि. घनश्याम तथा जनवरी '98 में 90 बटा. के कांस्टेबल पुष्पेंद्र कुमार, ग्रुप केन्द्र आवड़ी

के हैड कांस्टेबल अशोकन, 37 बटा. के उप निरीक्षक (म) दारेया सिंह, 68 बटा. के कांस्टेबल रंजीत सिंह, 134 बटा. के कांस्टेबल मोहम्मद अनवर, 1 सिगनल बटालियन के कांस्टेबल शशि राम, 96 बटा. के कांस्टेबल जसबीर सिंह, तथ्य 30 बटा. के कांस्टेबल उपेंद्र कुमार निराला भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

कहानी

लालच

एक कस्बे में एक गरीब नाई रहता था। एक दिन वह नजदीक के गांव वापिस घर आ रहा था। जंगल में उसे एक बहुत ही छोटा सा बन्दर का बच्चा मिला जो शायद अपनी मां से अलग रह गया था। नाई ने उसे पकड़ लिया और अपने घर ले आया । नाई ने उसका नाम "सुखचैन" रख दिया। "सुखचैन" परिवार के सदस्यों से घुल मिल गया था। घर में ही उसे कुछ ट्रेनिंग दी गई। यदि नाई शाम को बाजार जाता तो सुखचैन के मुंह में एक-एक रूपये के 4 सिक्के रख देता। यदि नाई एक रूपये की कोई चीज खरीदता तो सुखचैन को कहता "सुखचैन" मार सैन (दोनों भौऐं को ऊपर-नीचे करना)। सुखचैन सैन मारता और और एक रूपया दुकानदार की तरफ मुंह से निकाल फैंकता। यदि 4 रूपये का सामान लेना हो तो सुखचैन को 4 ही बार सैन मारनी पड़ती। उस दुकान से आगे निकलकर नाई उसके मुंह से फिर 4 रूपये रख देता। यह एक रूटीन सा बन गया था। वह नाई एक बनिये का 500 रूपये का कर्जदार था। वह ब्याज भी नहीं लौटा पा रहा था। परन्तु नाई के सुखचैन की करामात बाजार में एक आश्चर्य की बात बन चुकी थी। जिस बनिये का नाई पर कर्जा था उसके कान में भी सुखचैन की करामात की खबर पहुंच गई। एक दिन जब वह नाई उस बनिये की दुकान के सामने से सुखचैन को लेकर गुजर रहा था तो बनिये ने नाई को पकड़ लिया और अपना कर्जा वापिस करने का तकाजा किया। नाई ने जल्दी ही उसका कर्जा अदा करने की प्रार्थना की परन्तु बनिये ने सुखचैन की करामात जानकर, नाई की प्रार्थना को अनसुनी कर दी और नाई पर दबाव डाला कि वह सुखचैन को उसे सौंप दें। ऐसा करने से बनिये ने कहा कि वह 500 रूपये तथा ब्याज सब माफ कर देगा। परन्तु नाई सुखचैन को अपने से अलग जाने के लिये तैयार नहीं था, उसने बनिये से हाथ जोड़कर कहा कि वह सुखचैन ही उसकी तथा उसके परिवार की रोजी-रोटी है, इस लिये वह सुखचैन को कर्जे के बदले में नहीं दे पायेगा और जल्दी ही वह कर्जा चुकाने की कोशिश करेगा। परन्तु बनिये को यह स्वीकार नहीं था। क्योंकि वह सुखचैन से ही अपना पैसा पूरा करना चाहता था। उसे मालूम था कि सुखचैन से वह एक ही बार में सारे रूपये वसूल कर लेगा इसलिये उसने यह चांस गवांना नहीं चाहा । नाई को पकड़ लिया और सुखचैन को देने के लिये जबरदस्ती की।

नाई ने रोते रोते अपना प्यारा सुखचैन बानेये को सौंप दिया और अपना कजा उसके खाते से कटवा दिया। नाई अकेला सुबकता हुआ अपने घर की और चल दिया और बनिया अत्यन्त खुश था क्योंकि रूपयों की टकसाल उसे जो मिल गई थी। बनिया खुशी से सुखचैन को अपने घर ले आया। सेठ जी ने अपनी सेठानी, लड़कों को, बहुओं को, बेटियों को तथा सब बच्चों को बुलाया और उन सब को गोल दायरे में बैठा दिया। उनके बीच में सुखचैन को बैठा कर सभी को उसका इन्ट्रोडेक्शन कराया और सेठ ने कहा कि सब देखें सुखचैन किस प्रकार अपने पेट से पैसे उगलता है। सभी सुखचैन को बेसबरी से देख रहे थे। सेठ ने सुखचैन को हुक्म दिया "सुखचैन मार सैन"। सैन मारी सुखचैन ने और एक सिक्का मुंह से बाहर फैंक दिया। फिर हुक्म मिला "सुखचैन मार सैन"। एक सिक्का और मुंह से बाहर आ पड़ा । सभी हैरान थे तथा बेहद खुश होकर तालियां बजा रहे थे। ऐसे ही दो सिक्के सुखचैन ने दूसरी गाल से भी बाहर उगल दिये। अभी तो चार रूपये ही सेठ ने निकाले थे। 500 रूपये पूरे करने थे। फिर सुखचैन को हुक्म मिला सुखचैन मार सैन, बस सैन तो मार दी परन्तु सिक्का बाहर नहीं आया। कई बार सेठ ने हुक्म दिया परन्तु "सैन" के सिवाय कुछ नहीं। सेठ ने सोचा कि कुछ टेक्नीकल खराबी आ गई है। सुखचैन का पेंट आदि टटोला और फिर उसी पोजिशन में बैठा कर हुक्म दिया कि सुखचैन मार सैन। बस सैन तो जरूर मार दी, और कुछ नहीं। बनिया तंग आ गया और माथे पर अपने हाथ रख कर बोला "वाह रे, नाई तूने भला किया, दे दिया सुखचैन लेन देन को कुछ नहीं, सुखी मारे सैन।"

-एस.सी. निरवाल

सी.आर.पी.एफ. का कहना

सी.आर.पी.एफ. का कहना हैं,
मानवता की रक्षा करना है।
उपवन सुरक्षित हमसे है,
आकाश सुरक्षित हमसे है।
यशस्वी है ये, श्रीलंका, हैती का कहना है।
आसाम सुरक्षित इससे है,
पंजाब सुरक्षित इससे है।
आतंकियों का भी यही कहना है।
मानवता की रक्षा में,
कई जवान गवाएं है।

पर हजार नहीं,
लाखों पूत, इसमें समाए हैं।
बच्चा इसमें जाएगा, हर मां का यही कहना है।
कई बाढ़ों का उफान हमने रोका है,
सेवा है इसका मूल मंत्र, इसमें प्रेम ही प्रेम फैला है।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
सब हैं भाई-भाई, ये इसका कहना है।
मैदान में है ये, पहाड़ में है ये,
वीरान में है ये, भीड़-भाड़ में है ये।
सुख में, दुख में शान्ति में है ये,
राह में है, ये जंगल में है ये।
हर स्थान में है सी.आर.पी.,
जन-जन का यही कहना।

स.उ.नि. *(मं)* एम.के. दीक्षित
महानिदेशालय

पत्रिका सी.आर.पी.एफ. समाचार के स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स सैंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1. प्रकाशन का स्थान	- नई दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	- वर्ष में आठ बार
3. प्रिंटर का नाम	- डी.जी. महापात्र
4. नागरिकता	- भारतीय
5. पता	- ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110 003
6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता	- उपरोक्त
7. संपादक का नाम, पता और नागरिकता	- उपरोक्त
8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों।	- महानिदेशक, के.रि.पु. बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

मैं डी.जी. महापात्र एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य हैं।
31 मार्च, 1998

ह.
डी.जी. महापात्र
प्रकाशक के हस्ताक्षर



101 आर.ए.एफ. बटालियन द्वारा अपने क्वार्टर गार्ड में महिलाओं को शामिल करने का अनूठा प्रयोग किया गया

रजि. न. 4767/87



4 बटालियन के कांस्टेबल जोगिन्दर नाथ राय की विधवा दिपाली राय को पांच लाख रूपये की अनुदान राशि का ड्राफ्ट भेंट करते हुए पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री आर. पी. सिंह

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 12 अंक - 3 31 मई, 1998 10 आषाढ़, शक 1920





जी. कुमार को स्वोर्ड आफ आनर प्रदान करते हुए गृह मंत्री

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-12 अंक-3
31 मई, 1998
10 आषाढ़, शक 1920

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग
एम्बेस्डर प्रिंटिंग प्रेस
1810/4 ज्ञानी बाजार कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली-3 दूरभाष: 4697152,4303105

प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279



इस अंक में

सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षांत परेड

झड़ौदा कलां में मीठे पानी का स्रोत

के.रि.पु. बल की महिला भारोत्तोलक सम्मानित

28 बटालियन का स्थापना दिवस

अखिल भारतीय स्वर्ण कप हाकी

बरबरा वन

आशा के दीप

प्रथम आवरण :-सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षांत परेड के अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए बल के

महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल।

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

आंतरिक सुरक्षा अकादमी में के.रि.पु. बल अधिकारियों की दीक्षांत परेड

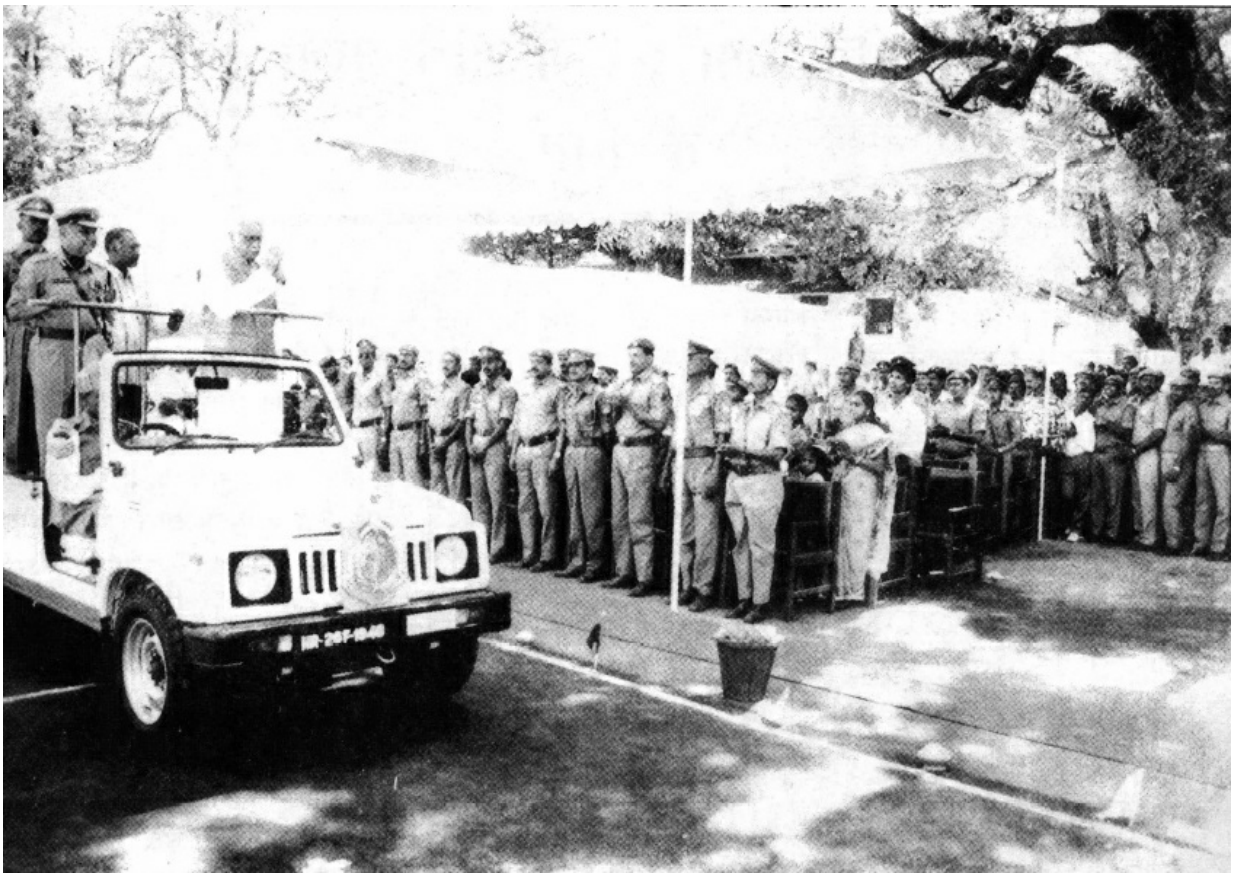
“केन्द्रीय रिजर्व पलिस बल सबसे पुराने बलों में आसाम राइफल के बाद दूसरे नम्बर पर है जिसका मुख्य उद्देश्य राज्य सरकार की उन हालातों में मदद करना है यदि राज्य में फैली अव्यवस्था को नियंत्रित करने में राज्य असमर्थ हो जाए।” 30 अप्रैल, 1998 को आंतरिक सुरक्षा अकादमी में 28वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड के अवसर पर बोलते हुए गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवानी ने कहा कि इस गौरवमय बल के अधिकारियों ने कर्तव्य परायणता के साथ उत्कृष्ट समर्पण के साथ देश सेवा करते हुए देश की एकता के लिए अपने प्राणों को न्योछावर किया है।

पाकिस्तान की 1947,1965 और 1971 में पराजय के बाद उसने भारत पर अपरोक्ष रूप से हमला करना आरम्भ किया । केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल सहित अन्य सुरक्षा बल इन युद्धों का सफलता पूर्वक सामना करते रहे हैं। उन्होंने अकादमी को हर संभव सहायता देने का वादा किया, ताकि यह अकादमी हर तरह से परिपूर्ण रूप से काम कर सके और सेन्टर आफ एक्सीलेन्स बन सके।



परेड की सलामी लेते हुए गृह मंत्री

श्री एम.एन. सभरवाल, महानिदेशक, के.रि.पु. बल ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा में कई प्रकार की चुनौतियों और धमकियों का सामना करना पड़ता है न कि केवल कानून और व्यवस्था की समस्याएँ होती है बल्कि तनावपूर्ण परिचालन और अपरोक्ष युद्ध का भी सामना करना पड़ता हैं। उन्होंने नव अधिकारियों का इन सभी समस्याओं जैसे कि साम्प्रदायिक और जातीय उपद्रव, प्राकृतिक विपदाएं, आतंकवाद एवं घुसपैठ आदि परिस्थितियों में दृढ़ता से निपटने के लिए सलाह दी। विघटनकारी शक्तियों से कानून के अन्तर्गत कई तरह के कर्तव्य धैर्य और दृढ़ता से करने पड़ते हैं। समारोह को संबोधित करते हुए श्री देवेन्द्र कुमार सूरी, निदेशक, आंतरिक सुरक्षा अकादमी ने कहा कि वर्तमान सामाजिक व राजनैतिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए अधिकारियों के प्रशिक्षण को इस तरह बनाया जाता है कि उनमें आत्म विश्वास पैदा हो । फील्ड और हथियारों के प्रशिक्षण के साथ-साथ अधिकारियों को साम्प्रदायिक उपद्रवों, व्यवस्था बिगाड़ने वाले तत्वों, आतंकवाद, घुसपैठ से निपटने तथा प्रबंधन और प्रशासन का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।



उपस्थित समुदाय का अभिवादन स्वीकार करते हुए गृह मंत्री।

समारोह में श्री आडवानी ने परेड की सलामी ली और परेड का निरीक्षण किया। इसमें 6 महिला अधिकारियों सहित 75 अधिकारियों ने भाग लिया । श्री आडवानी ने उत्कृष्ट प्रशिक्षणार्थियों को ट्राफियां भी प्रदान की। इनमें श्री जी. कुमार को सोर्ड आफ आनर के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ इन डोर व आउट डोर की ट्राफियां मिली। श्री विनोद कुमार यादव को सर्वश्रेष्ठ शूटर की ट्राफी मिली। डाइरेक्टर्स बेटन श्री आनन्द कुमार जराई एवं सर्वश्रेष्ठ ड्रिल की ट्राफी श्रीमती मधुबाला ने प्राप्त की। श्री विक्रम सिंह ठाकुर को वेपन में सर्वश्रेष्ठ, श्री आशीष कुमार झा को पब्लिक स्पीकिंग एवं श्री फुसा जौइपाव को सर्वश्रेष्ठ रांक क्लाइंबिग की ट्राफियां प्रदान की गईं।

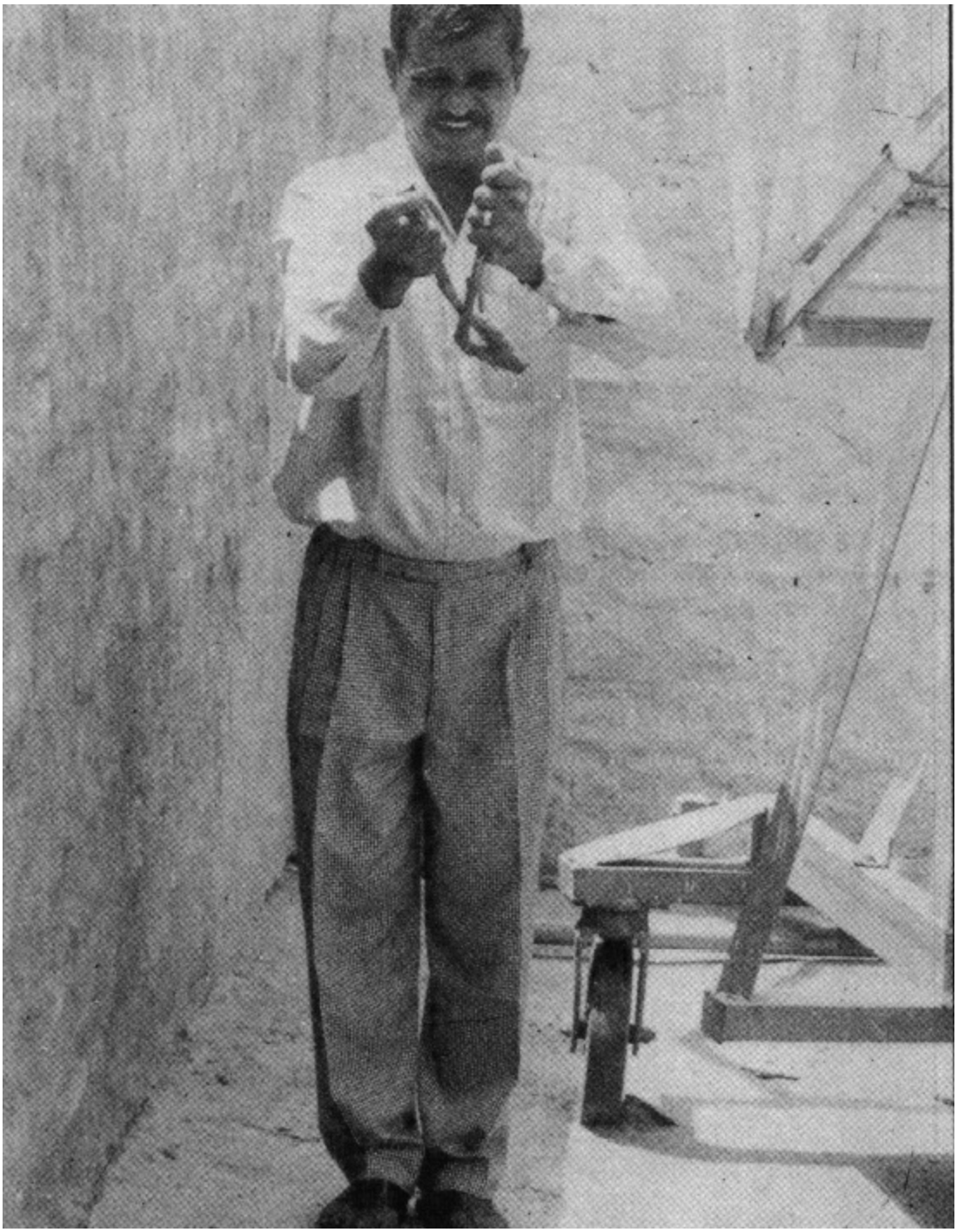
झड़ौदाकलां क्षेत्र में मीठे पानी के सोत

झड़ौदाकलां स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्र में बल के एक रसोइया त्रिलोक सिंह ने सिर्फ एक लकड़ी के डंडे के सहारे पीने योग्य पानी के जल स्रोत ढूंढ कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया है। उसने सी.आर.पी.एफ. परिसर में अलग–अलग तीन स्थानों पर लकड़ी से टोह लेकर मीठा पानी होने का दावा किया । उसके बताए

हुए स्थानों पर खुदाई करने पर सचमुच में जो पानी निकला वह पीने योग्य था, जबकि इस पूरे केन्द्र का पानी खारा है जिसे पीया नहीं जा सकता।

सी.आर.पी.एफ. के अतिरिक्त महानिदेशक गौतम कौल ने 30 मई, 98 को संवाददाताओं को बताया कि झड़ौदाकलां क्षेत्र में पीने के पानी की भारी किल्लत है। किल्लत का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि केन्द्र में रहने वाले सी.आर.पी.एफ. के जवानों तथा अधिकारियों को पिछले सात वर्षों से लगातार टेंकर से पीने का पानी उपलब्ध कराया जा रहा है जिस पर प्रति वर्ष 80 लाख रुपये खर्च हो रहे है।

मूलतः राजस्थान निवासी 31 वर्षीय त्रिलोक सिंह के जल स्रोत ढूंढने का तरीका किसी चमत्कार से कम नहीं कहा जा सकता, वह हाथ में एक लकड़ी लेकर धीरे–धीरे चलता है। जिस स्थान पर पीने योग्य पानी होता है वहां अपने आप लकडी "झटके" खाने लगती है। खुदाई करने पर वहां से निकला पानी मीठा होता है। श्री कौल ने बताया कि ऐसे तीन स्रोतों का पता त्रिलोक ने लगाया है वहां फिलहाल बोरिंग करा कर मोटरें लगा दी गई है। जिससे मन चाहा जल लोगों को प्राप्त हो रहा है।



पानी के स्रोत की और संकेत करता त्रिलोक सिंह



त्रिलोक सिंह द्वारा बताए गये स्थल से निकला मीठा पानी

त्रिलोक को यह शक्ति कहां से मिली? इसकी भी अपनी अलग कहानी है। त्रिलोक ने बताया कि जब वह बच्चा था तो अपने पिता के साथ राजस्थान से अजमेर जिले में पानी की तलाश में जा रहा था। तभी एक साधू ने उसे आवाज देकर अपने पास बुलाया तथा हाथ में एक लकड़ी देकर बोले, "जहां कहीं पानी का स्रोत होगा वहां तेरे हाथ की लकड़ी झटके खाने लगेगी। साधू ने त्रिलोक से यह भी कहा कि यह चमत्कार सिर्फ तेरे हाथों ही होगा क्योंकि तेरी राशि तथा ग्रहों का योग कुछ ऐसा है।"

251 एकड़ में फैले झड़ौदाकलां केन्द्र में लगभग 10 हजार लोग रहते हैं। यहां का पानी खारा है। पानी के स्रोतों की तलाश वर्षों से की जा रही थी। इसके लिए सी.पी.डब्ल्यू.डी. तथा एन.डी.एम. सी. आदि की सहायता से भी कई बार कई जगह सर्वे करवाया गया। प्रत्येक सर्वे पर तकरीबन 12 लाख रूपये खर्च किया गया लेकिन मामला ज्यों का त्यों रहा। तमाम वैज्ञानिक संसाधनों से लैस जो काम सरकारी एजेंसियां नहीं कर सकी उसे त्रिलोक जैसे मामूली व्यक्ति ने कर दिखाया। उसके बताए फिलहाल तीन स्थानों पर खुदाई की गई तथा 64 फीट पर मीठा पानी निकल आया।

श्री कौल ने बताया कि खारे पानी के इस रेगिस्तान में मीठे पानी के स्रोत का पता लगने से इस केन्द्र में रहने वाले लोगों में एक उम्मीद जगी है। इस पानी को ग्रुप केन्द्र के कोने–कोने में पहुंचाने की योजना पर विचार किया जा रहा है।

के.रि.पु. बल की महिला भारोत्तोलक सम्मानित



बल की भारोत्तोलक अपनी ट्राफियों के साथ महानिदेशक, अपर महानिदेशक तथा अन्य अधिकारियों के साथ

2अप्रैल, 1998 को बल के महानिदेशालय में बल की महिला भारत्तोलकों को सम्मानित करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने कहा कि वे देश और के.रि.पु. बल को रत्न हैं। श्री सभरवाल इन महिला भारोत्तोलकों द्वारा नारू में हुयी राष्ट्र बल भारोत्तोलन प्रतियोगिता में पदक जीतने पर इनके सम्मान में आयोजित एक समारोह में बोल रहे थे। श्री सभरवाल ने कहा कि गत दशक में के.रि.पु. बल ने खेल के क्षेत्र में देश को कई सितारे दिये हैं। के.रि.पु. बल हमेशा अपने यहां खेलों को प्रोत्साहन देता रहा है तथा इसने कई प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को आगे आने का मौका दिया है। महिला भारोत्तोलकों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि वे देश के अंदर महिला भारोत्तोलन को लोकप्रिय बनाने में सफल रही हैं।

नारू में हुयी राष्ट्रबल भारोत्तोलन प्रतियोगिता में सहायक कमांडेंट कुंजारानी देवी, सब इन्सपेक्टर टी. सोनामाचा चानू तथा सब इन्सपेक्टर नंदिनी देवी ने अपनी श्रेणी के स्पर्ण पदक जीते, जबकि हवलदार उजवला माने ने एक रजत पदक जीता। टी. सोनामाचा चानू प्रतियोगिता की सर्वश्रेष्ठ भारोत्तोलक घोषित की गयी तथा उन्हें 3000 डालर की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गयी।

इस मौके पर बल के अपर महानिदेशक एस.के. सेठी तथा गौतम कौल सहित

बल के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

माह अप्रैल, 1998 में मृत बल के कार्मिक

माह अप्रैल, 1998 में के.रि.पु. बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

धोबी रामसूरत (105 बटा.), हेड कां.एस.सी. भौमिक (129 बटा.), स.उ.नि.टी. रघुपत (3 सिंगनल बटा.), है.कां.नेना लामे (14 बटा.), है.कां./आरमोरर बी.के.एस. बाबू (42 बटा.), है.कां. मुंशी राम (21 बटा.), जल वाहक राम सिया पटेल (104 बटा.), कांस्टेबल हकीम दीन (98 बटा.),है. कां. दाता राम (5 बटा.), कां. मनोहर लाल (ग्रुप केन्द्र लखनऊ), कां. लालजीत (93 बटा.), लांस नायक राम मंजन सिंह (93 बटा.), लांस नायक चेतन लाल (39 बटा.), लांस नायक डी.एम. पाथी (52 बटा.), कां. बिगुलर वसीम खान (31 बटा.) तथा कां. पी.आर. बिच्छेवर (35बटा.)। इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह जनवरी, 98 में 43 बटा.के लांस नायक सी.आर. एंथोनी, माह फरवरी, 98 में 99 बटा. के नर्सिंग सहायक बी. अंजानेमालु, 126 बटा. के का. जय प्रकाश, 62 बटा. के उ.नि (मं) सुरेश कुमार तथा मार्च, 1998 में, 11 बटा. के कां. जे. मेटी, ग्रुप केन्द्र जालंधर के कां. भाया ओमप्रकाश, 11 बटा. के का. सत्याप्रकाश, 115 बटा. के लांस नायक राकेश कुमार तथा 96 बटा. के कां. राधे सिंह गोंद भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

28 बटालियन का 31वां स्थापना दिवस



महानिरीक्षक जम्मू कश्मीर पुलिस श्री पी.एस. गिल *28* बटा. की एफ कम्पनी के सहायक कमांडेंट जयचंद को सर्वश्रेष्ठ कम्पनी की ट्राफी प्रदान करते हुए ।

श्रीनगर, वजीरबाग स्थित 28वीं बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 1 अप्रैल, 1998 को बड़े धूम–धाम से अपने गठन दिवस का आयोजन किया । यह बटालियन पहले द्वितीय मालाबार विशेष पुलिस के नाम से जानी जाती थी । 1 अप्रैल, 1998 को नागालैंड में तैनाती के दौरान इसे के.रि.पु. बल में शामिल किया गया । उसके पश्चात से अब तक यह देश के लगभग सभी हिस्सों में सेवा कर चुकी है । यह वाहिनी पंजाब एवं पूर्वोत्तर राज्यों में उस समय तैनात रही है, जब इनमें उग्रवाद एवं विघटनकारी गतिविधियां अपनी चरम सीमा पर थी । इन स्थानों पर इसने भारी मात्रा में विस्फोटकों तथा विघटनकारी तत्वों को पकड़ा एवं उन पर काबू पाया और अपनी दक्षता का परिचय दिया ।

यह बटालियन मई 97 से श्रीनगर, वजीरबाग में तैनात है । इससे पहले पुनामल्ली उप कारागार, चैन्नई जहां पर स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी के हत्यारों को रखा गया था तथा राज्यपाल निवास स्थान की सुरक्षा हेतु तैनात थी । यहां आने पर इसे एक अलग प्रकार की प्रति–विद्रोही ड्यूटी को करना पड़ा । परन्तु इसने पंजाब एवं पूर्वोत्तर के प्राप्त पूर्व अनुभवों के आधार पर इसे तुरन्त अपना लिया तथा घाटी के गुमराह युवकों तथा विदेशी विघटनकारियों से निपटने के कार्य को बखूबी अंजाम दिया । इस छोटी सी अवधि में इसने घाटी की आम जनता के स्नेह एवं विश्वास को जीत लिया तथा जनता के बीच "घाटी में अमन के रखवाले" का खिताब अर्जित किया ।

गठन दिवस कार्यक्रमों की श्रृंखला में 31 मार्च, 1998 को के.रि.पु. बल रक्तदान शिविर पर आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन श्री सी.एम. पाण्डेय पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन), के.रि.पु. बल जम्मू एवं कश्मीर ने किया। श्री जी.डी.

पेवाल, कमाण्डेण्ट ने सबसे पहले रक्तदान करके इसकी अगुवाई की तथा श्री एस.पी. पोखरीयाल, द्वितीय कमान अधिकारी सहित सभी अधिकारियों ने इस में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

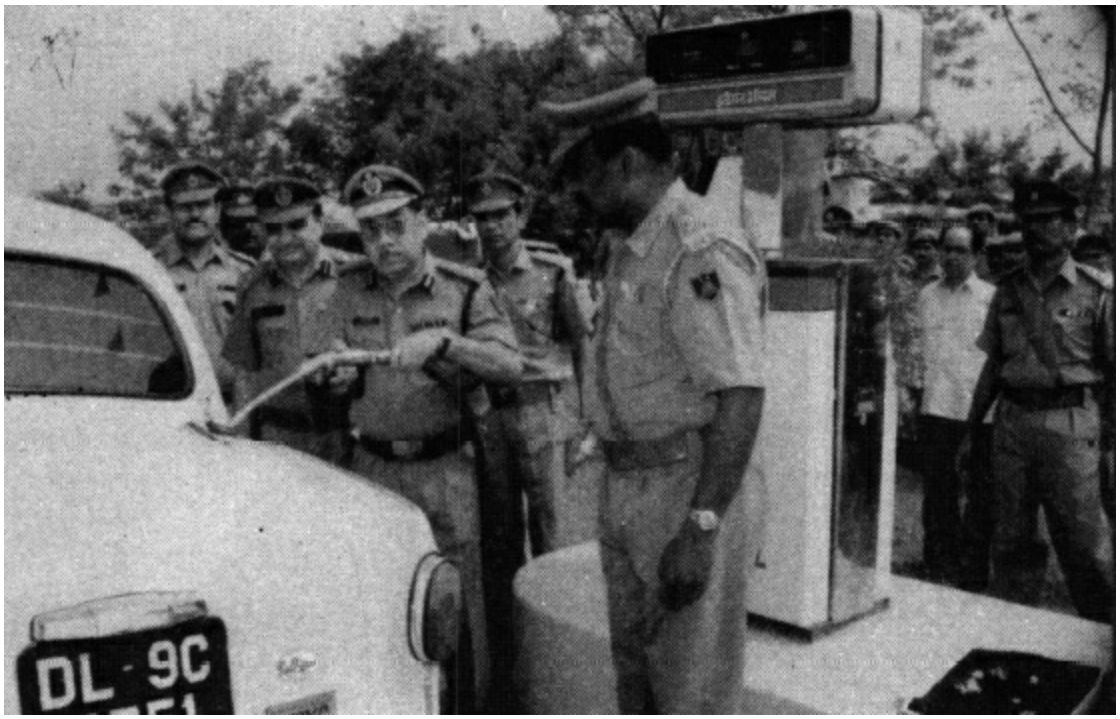
मंत्रालयिक केडर में पदोन्नतियां

वर्ष 1997-98 में मंत्रालयिक केडर के विभिन्न पदों में निम्न पदोन्नतियां की गईं :–

संयुक्त संहायक निदेशक	-10
प्रशासन/अनुभाग अधिकारी	-18
निजी सचिव	-02
सू. मेजर (कार्यालय अधीक्षक)	-29
निरीक्षक (मुख्य लिपिक)	-92
निरीक्षक स्टेनों	-06
उ. निरी. (मंत्रा)	-132

वर्ष 1998-99 के लिए निरीक्षक व उपनिरीक्षक के पदों के अतिरिक्त सभी पदों के लिए सूचियां तैयार कर ली गई हैं, जिससे किसी भी पद के रिक्त होने पर उसे तुरन्त भर लिया जाये। बल में इस प्रकार का यह प्रथम प्रयास है जो कार्यालय की कार्यक्षमता में प्रगति को ही नहीं दशार्ता है, बल्कि कार्मिकों के कल्याण में भी एक सराहनीय कदम है।

ग्रुप केन्द्र पूणे में पेट्रोल पम्प



एक कार में तेल डाल कर पेट्रोल पम्प का उद्घाटन करते महानिरीक्षक श्री नारायण मिश्रा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की ईकाईयों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, तलेगांव, पूणे में 15 मई 1998 को एक पेट्रोल पम्प का शभारम्भ किया गया हैं। तलेगांव से पूणे के बीच की दूरी को ध्यान में रखते हुए इस पेट्रोल पम्प का खोला जाना एक महत्वपूर्ण कार्य हैं।

इस पेट्रोल पम्प का उद्घाटन श्री नारायण मिश्रा, (भारतीय पुलिस सेवा), पुलिस महानिरीक्षक, पश्चिमी क्षेत्र, के.रि.पु. बल, नवीं मुम्बई के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस कार्य को अतिशीघ्र सफल बनाने में श्री उदयभान सिंह तेवतिया, अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, तलेगांव, पूणे ने काफी प्रयास किया, जिसके फलस्वरूप इस कार्य को अंतिम रूप दिया जा सका है।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल जोखिम निधि से माह मार्च, 98 में मृत्यु के 29 मामलों में कुल 21,02,500 रूपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार अक्षमता के छः मामलों में कुल 84,000 रूपये देने स्वीकृत किये।

जोखिम निधि "बी" से भी मार्च, 98 माह में इसके छः सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 2,10,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

माह अप्रैल, 98 में जोखिम निधि से 34 कार्मिकों की मृत्यु के मामलों में कुल 23,90,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। अक्षमता के छः मामलों में भी 82,500

रूपये देने स्वीकृत किये गये।

जोखिम निधि "बी" से भी इसके तीन सदस्यों की मृत्यु के मामले में 1,05,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

अपहृत बालक को बचाया

17 फरवरी, 1998 का लखनऊ के एक 13 वर्षीय विद्यार्थी का कुछ गुण्डों द्वारा अपहरण कर उसे गुवाहाटी ले जाया गया, किन्तु केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर स्थित आर.टी.ओ. की सूझबूझ तथा साहस से उस बालक को बचा लिया गया। 19 फरवरी, 1998 को ट्रेन के गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पहुंचने पर वह बालक अपहरणकर्ताओं से किसी प्रकार छूटकर मदद के लिए चिल्लाता हुआ के.रि.पु. बल कैम्प में आया, वहा ड्यूटी पर तैनात हवलदार राचन्दर दुबे ने भय ये कांपते उस बालक को सांत्वना देकर उससे उसका नाम पता पूछा। बालक ने उसे बताया कि जब वह स्कूल से आ रहा था तो दो पिस्तोलधारी युवकों ने उसका अपहरण कर लिया, बाद में उनके दो साथी और उनसे आ मिले। वे लोग उसे लखनऊ से बरौनी (बिहार) ले आये तथा वहा से अवध-आसाम एक्सप्रैस पकड़कर वे उसी सुबह गुवाहाटी पहुंचे। गुवाहाटी पहुंचने पर वह बालक लघुशंका का बहाना कर उनके चंगुल से भाग निकला।

हवलदार रामचन्दर दुबे ने बालक द्वारा बताये गये फोन नम्बर पर तत्काल लखनऊ उसके घर सम्पर्क कर बालक की सलामती की सूचना दी। बाद में बालक के घरवाले गुवाहाटी आकर बालक को अपने साथ वापस लखनऊ ले गये, उन्होंने हवलदार रामचन्दर दुबे की सूझ-बूझ तथा कर्तव्यपरायणता की भरपूर प्रशंसा की।

अखिल भारतीय स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता



प्रतियोगिता के दौरान खेले गये एक मैच का दृश्य

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा जालंधर में आयोजित अखिल भारतीय स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने कहा कि जहा एक ओर के.रि.पु. बल कानून व्यवस्था बनाए रखने, आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष तथा अन्य संवेदनशील कार्यों में व्यस्त है वहीं वह खेल के क्षेत्र में भी अद्वितीय प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहा है।

प्रतियोगिता का आयोजन 16 अप्रैल, 1998 से जालंधर के बर्लटन पार्क स्टेडियम में किया गया, इस मौके पर बोलते हुए श्री सभरवाल ने कहा कि के.रि.पु.बल ने देश को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी दिये है। उन्होंने कहा कि अर्जुन एवार्ड विजेता गुरूबचन सिंहरंधाता, हरिचंद, खजान सिंह, आर.एस. बल, तथा कुंजारानी देवी न केवल के.रि.पु. बल अपितु देश के गौरव हैं। स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता का आयोजन देश की आजादी की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में किया गया। प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर बल के पंजाब तथा चंडीगढ़ के महानिरीक्षक श्री तासी दावा भी मौजूद थे।

इस नौ दिवसीय टूर्नामेंट में राज्य तथा केन्द्रीय पुलिस बलों की टीमों ने भाग लिया। 25 अप्रैल, 1998 को खेले गये फाइनल मुकाबले में पंजाब पुलिस ने के.रि.पु. बल को हराकर प्रतियोगिता जीत ली।

प्रतियोगिता भारतीय हाकी फेडरेशन द्वारा निर्धारित नियमों की तहत खेली गयी तथा प्रतियोगिता के रैफरी तथा अन्य तकनीकी अधिकारी भी फेडरेशन द्वारा ही नियुक्त किये गये थे।

प्रतियोगिता सेमी फाइनल तक लीग आधार पर खेली गयी, जबकि उसके बाद का मुकाबला नाक आउट आधार पर खेला गया। प्रतियोगिता के अंतिम दिन पंजाब के

वित्त मंत्री कैप्टन कंवलजीत सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

जिन्दगी

यह जिन्दगी है हकीकत, पर एक फसाना,
चार दिन की है यह, कुछ नि का बचपना।
कब आई जवानी, मैने देखा बुढ़ापा,
एक दिन मिट्टी में है समा जाना।
क्या मेरा घर, क्या किसी का डेरा,
यहां तो कुछ भी नहीं है मेरा।
न जाता कोई सगा साथ में,
न ही जाता दौलत खजाना।
पर इस बेवफा जिन्दगी को,
हमें हैं हर हाल में निभाना।

- एस.सी निरवाल
भूतपूर्व सहा. नि. (गोपनीय)

बरबरा वन

के.रि.पु. बल की नवीन कार्य स्थली

डी.जी. महापात्र



के.रि.पु. बल चिकित्सा कक्ष में दवा लेने के लिए कतार लगाए आदिवासी

लगभग 5 वर्ष पूर्व 27 नवम्बर, 1993 को देश के सर्वाधिक पुराने अर्द्धसैनिक पुलिस बल, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इतिहास में एक नये अध्याय का समावेश हुआ। इस दिन के.रि.पु. बल ने उड़ीसा में सवंर्धन और संरक्षण के लिये बरबरा बन क्षेत्र को अंगीकृत किया, के.रि.पु. बल द्वारा अंगीकृत यह वन क्षेत्र बालू गांव से 35 किलोमीटर दूरी पर स्थित है, यह वन क्षेत्र 1900 शताब्दी में बनाये गये सर्वाधिक पुराने वन विभागों में से एक पुरी वन् विभाग के अन्तर्गत आता है। यह वन बरबरा वन आरक्षित वन के नाम से जा जाता है इसके अन्तर्गत 5 आरक्षित है खण्ड तथा 10 संरक्षित वन खण्ड शामिल है, सम्पूर्ण वन क्षेत्र का क्षेत्रफल कुल 23436 हेक्टेयर है। इस वन क्षेत्र अंगीकृत करने की औपचारिक स्वीकृती उड़ीसा के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बीजू पटनायक ने के.रि.पु. बल के ग्रुप केन्द्र में आयोजित एक समारोह के बीच प्रदान की थी, तभी से के.रि.पु. बल की एक कम्पनी अपने वाहनों, संचार साधनों तथा अन्य उपकरणों के साथ इस वन में तैनात हैं और पूरी मुश्तैदी के साथ इसकी सुरक्षा में लगी है। देश के अन्य वन्य क्षेत्रों की ही तरह यह वन क्षेत्र भी अवैध कटाई तथा शिकार के कारण विनाश के कगार पर पहुंच चुका था।

बरबरा वन क्षेत्र पहाड़ियों, घाटियों तथा तावा और अशोक के नाम से जाने जाने वाले दो नालों से युक्त एक दुगर्म किन्तु रोमांचक और मनमोहक वन क्षेत्र है, इस वन

क्षेत्र में जहाँ एक और टीक के जवान वृक्ष दिखायी देते हैं वहीं साल, आसन्न, अर्जुन, शीशों, बदाहदा जैसे पुराने वृक्षों के साथ–साथ कई तरह की बहुमूल्य जड़ी–बूटियों की झाड़ियों की भरमार है। साथ ही इस जंगल में चीते, तेंदुए, भालू, नीलगायों, हाथियों, सांभर तथा हिरणों की भरमार है। बरबरा वन क्षेत्र के निकट ही एक खूबसूरत झील भी स्थित है, बरबरा वन क्षेत्र में दो फोरेस्ट रेस्ट हाउस भी है इनमें से एक धनौली तथा दूसरा राजिन के नाम से जानी जाने वाली पहाड़ी पर स्थित है। इस वन क्षेत्र के आस–पास तथा कुछ वन के भीतर भी कई छोटी–छोटी बस्तियाँ तथा गांव भी स्थित हैं। पूरे जंगल में अलग–अलग दिशा में जाने वाली कच्ची–पक्की सड़कों का जाल बिछा है। यह सम्पूर्ण इलाका अपने आप में अद्भुत है। के.रि.पु. बल जैसी पुलिस फोर्स के लिए इस इलाके को, यहां के निवासियों को, पशु–पक्षियों को समझना एक चुनौती है। इस वन क्षेत्र ने के.रि.पु. बल को यह मौका दिया है कि वह साबित कर सकें कि वह न केवल मानव जगत के प्रति सहृदय है बल्कि उसकी यह सहृदयता प्रकृति के अन्य स्वरूपों के प्रति भी है।

बरबरा से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है प्रसिद्ध चिल्का झील, भारतीय नौ सेना का नाविक प्रशिक्षण केन्द्र आई.एन.एस. चिल्का भी बालू गांव के नजदीक ही स्थित है।

पिछले 35 सालों में अपने नजदीक भुवनेश्वर जैसे शहरों के विकास के कारण यह वन क्षेत्र भारी दबाव में है। इमारती तथा ईंधन के लिए बढ़ती लकड़ी की मांग के कारण इस वन क्षेत्र के बेरोजगार युवकों के लिए इस वन क्षेत्र से टीक व साल की लकड़ी को चोरी–छिपे काटकर भुवनेश्वर में बेच आना काफी सरल था। राज्य का वन विभाग पूरी सतर्कता के बावजूद इन पर रोक नहीं लगा पा रहा था, धीरे–धीरे इस वन क्षेत्र में घातक हथियारों के साथ तस्करों की घुसपैठ भी शुरू हो गयी। वन अधिकारियों के साथ उनकी मुठभेड़ होना एक आम बात हो गयी थी। परिणामस्वरूप जहाँ बरबरा वन क्षेत्र में अवैध कटाई दिनों–दिन बढ़ रही थी, वहीं जानवरों का शिकार भी जोरों पर था।

लेकिन के.रि.पु. बल की तैनाती के साथ ही इलाके में इन गतिविधियों पर तेजी से अंकुश लगा, तैनाती के बाद के.रि.पु. बल ने पूरे वन क्षेत्र के संवेदनशील इलाकों में अपनी टुकड़ियां तैनात कर दी इनमें से प्रत्येक टुकड़ी आठ हफ्ते तक बरबरा में तैनात रही है जिसमें से एक महीने उसे जंगल के भीतर तैनात रहना पड़ता है। 1993 से 41, 64 तथा 39 बटा. की कम्पनियां इस इलाके में तैनात रह चुकी है। इसके अलावा ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर की भी एक अस्थायी कम्पनी 3 महीने के लिए यहां तैनात रही थी।

अपनी तैनाती के बाद से ही के.रि.पु. बल के कार्मिकों ने वन विभाग के कर्मचारियों के साथ मिलकर न केवल वन सम्पदा की तस्करी पर रोक लगायी है, अपितु तस्करों से 6 करोड़ रुपये मूल्य की अवैध वन सम्पदा भी बरामद करने में वे सफल रहे हैं, उन्होंने यहां से भारी मात्रा में गाड़ियां, साइकिलें, आरें तथा भैंसे इत्यादि

बरामद की है साथ । ही लगभग 900 तस्करों को भी गिरफ्तार किया गया है । चूंकि यह क्षेत्र बुरी तरह से मलेरिया की चपेट में रहता है, अतः बल के जावन न केवल यहां के नागरिकों के बीच मलेरिया से सम्बन्धित जागरूकता अभियान चलाये रहते है, अपितु उन्हें चिकित्सकीय सुविधा भी उपलब्ध कराते है । परिणामस्वरूप जहाँ पहले ये आदिवासी लोग तस्करों के शोषण के शिकार थे, वही अब ये बल के कार्मिकों के सहयोग से अपने हाथ की बनी वस्तुएं उचित मूल्य पर बेचकर अपनी जीविका कमा रहे हैं ।

के.रि.पु. बल यहां न केवल अवैध तस्करी तथा शिकार को रोकने में कामयाब रहा है, अपितु उसने इस वन क्षेत्र के विकास के लिए भी पर्याप्त प्रयास कर जहाँ नये पौधे लगाये है वहीं कीटनाशक आदि दवाओं के छिड़काव से बीमार पौधों को मरने से भी बचाया है ।

बरबरा वन क्षेत्र में के.रि.पु. बल की भूमिका का महत्व पुरी के जिला वन अधिकारी के इन शब्दों से समझा जा सकता है :–

"जिस दिन के.रि.पु. बल के जवान यहां से हटा दिये जायेंगे बरबरा वन के बहुमूल्य वृक्ष भी उसी दिन से गायब होने शुरू हो जायेंगे" ।

प्रिय पाठको,

सी.आर.पी.एफ. समाचार केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में सभी यूनिटों, जवानों तथा अधिकारियों के बीच सूचनाओं के आदान–प्रदान का एक सशक्त माध्यम है, इसके माध्यम से जहाँ न केवल हम पाठकों को बल से संबंधित अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करने का प्रयास करते हैं वहीं पाठकों के लिए इसमें रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री का समावेश भी किया जाता है / किंतु अच्छी सामग्री के अभाव में पत्रिका के स्तर को बनाए रखने में वर्तमान में कुछ समस्या आ रही है /

अतः अपने पाठकों से हमारा निवेदन है कि अगर उनको लेखन में रूचि है तो वे अपनी कविताएं, कहानियां, लेख, संस्मरण तथा अन्य सामग्री हमें प्रकाशन के लिए भेजें / पत्रिका में हम अपने चिकित्सक साथियों से भी चिकित्सा संबंधी लेख आमंत्रित करते हैं, इससे न केवल हमारे पाठकों का ज्ञानवर्द्धन होगा, अपितु बल की इस पत्रिका को भी हम विचारों के आदान–प्रदान का एक उपयोगी मंच बना पाएंगे / आशा है पत्रिका के स्तर को सुधारने के लिए हमें पाठकों की ओर से शीघ्र ही उनकी रचनाएं प्राप्त होगी / प्रकाशित होने वाली रचनाओं के लिए उचित पारिश्रमिक की भी व्यवस्था है /

आपका

डी.जी. महापात्र

मुख्य संपादक, सी.आर.पी.एफ. समाचार

आशा के दीप

आपका खत आना क्यो बंद है,
डाकिया मर गया या डाक खाना बन्द है ।
कभी–कभी दिल करता है, खत लिखना बन्द कर दूं ।
मेरे खत का जवाब देने वाला कोई नहीं तब आशा करना छोड़ दूं ।
चल पड़ा हूं जिन्दगी की राहों में अकेला दर–दर भटकने के लिए ।
किसको मैं याद करूं, जीवन के सफर में साथ–साथ चलने के लिए ।
आशा थी आपकी, सपनों का महल सजाया था,
दिल में लगन है कुछ ऐसा काम कर दिखलाऊंगा ।
कांटों पर चल कर भी आने वालों के लिए
जिन्दगी की राहों में फूल बिछाऊंगा ।
गम नहीं है इस बात का आप सभी की छाया में,
रहने का सौभाग्य न मिला ।
माना कि मां की ममता का आँचल सबसे प्यारा है,
उसके आँचल का प्यार न मिला ।
पर खुश हूं मैं जो मुझे धरती मां का प्यार मिला ।
गर्व है मुझे इस बात का जन्म लिया इस धरती पर ।
जिस मिट्टी पर जन्म लिया उस माता पर बोझ न बना ।
इसकी सेवा के लिए नौकरी के रूप में काम मिला ।
कर्म ही पूजा स्वास्थ्य मेरा धन बना, अगर
इस धरती माता की सेवा में मुक्ति का द्वार मिला ।
सफल हो जाएगा मेरा जीना,
जिसके लिए मनुष्ययोनी में जीवन मिला ।
यह संसार मोह, माया की नगरी है ।
परिवार के बन्धन ने बांधा है ।
रिश्ते नातों को इस प्रकार जोड़ा,
जिसे मरते दम तक निभाना है ।
गम है सीने में ऐसा लगता है,

कट जाएगा दिल जैसे ।
गम को सीने में लिए दर–दर,
गली–गली कभी शहर कभी गांव जाता हूं ।
कुछ समय ऐसा आता है,
जंगलों के कांटेदार पत्थरों पर दिन बिताता हूं ।
याद आते हैं वह सपन सलोने,
बचपन की लोरियां जो सुना करता था ।
आंसू आते हैं, तब जब जंगलों के बीच सोता था ।
बचपन बीता जवानी आयी,
भूल जाऊंगा बचपन की हर बात,
जवानी का जो कर्म मिला उसको हर पल निभाऊंगा ।
सच्चाई और ईमानदारी के बल पर आगे बढ़ता जाऊंगा ।
झूठी और मक्कार बांतों के आगे सिर नहीं झुकाऊंगा,
जिस दिन हुई मेरी सच्चाई और ईमानदारी की बदनामी,
उस दिन अपना पद त्याग दूंगा ।
जब तक रहूंगा इस फोर्स के कार्य से जुड़ा,
के.रि.पु. बल का नाम ऊंचा उठाऊंगा ।
फर्ज है मेरा, जीवन का हर पल मैं निभाऊंगा ।
मेरा नाम है सि. बलराम सिंह,
कुछ नाम अपना छोड़ जाऊंगा ।

– सिपाही बलराम सिंह
***45* बटा.**



जालंधर में हुयी के.रि.पु. बल स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर बल के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ।

रजि. न. 4767/87



विश्व भारोत्तोलन प्रतियोगिता में जीते अपने पदक और ट्राफी महानिदेशक श्री सभरवाल को दिखाती बल की भारोत्तोलक।

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 12 अंक - 4

30 जून, 1998 9 आषाढ़, शक 1920





136 बटालियन की दीक्षांत परेड के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री फारूख अब्दुल्ला को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-12 अंक-4
30 जून, 1998
9 आषाढ़, शक 1920

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग
एम्बेस्डर प्रिंटिंग प्रेस
1810/4 ज्ञानी बाजार कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली-3 दूरभाष : 4697152, 4303105

प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279



इस अंक में

136 बटालियन की दीक्षांत परेड सम्पन्न

राजस्थान के राज्यपाल का के.रि.पु. बल अकादमी का दौरा

के.रि.पु. बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

शहीदों की आश्रिताओं को अनुग्रह राशि

बोस्निया में मेरा एक वर्ष

संक्षिप्त समाचार

वतन की पुकार

वीर वही है

प्रथम आवरण *:-132* बटालियन के एक शहीद कार्मिक की आश्रिता को अनुग्रह राशि

का चेक भेंट करते बिहार सेक्टर के महानिरीक्षक श्री तिलक काक।

अंतिम आवरण :- *136* बटालियन के जवान राष्ट्र ध्वज तथा के.रि.पु. बल ध्वज को छूकर देश एवं कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा की शपथ लेते हुए।

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

-संपादक

*136*वीं बटालियन की दीक्षान्त परेड सम्पन्न



दीक्षांत परेड का निरीक्षण करते हुए जम्मू कश्मीर के मुख्य मंत्री श्री फारूख अब्दुल्ला

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 136वीं बटालियन के 342 रंगरूटों ने 7 जून, 1998 को हुमामा स्थित रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-4 में देश तथा संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ ग्रहण कर दीक्षान्त परेड में भाग लिया। ज्ञातव्य है कि 136 बटालियन भावनाओं में बहकर दिग्भ्रमित हुए उन कश्मीरी युवकों की बटालियन है जिन्होंने बाद में आत्मसर्मपण कर देश की मुख्य धारा में शामिल होने की इच्छा जाहिर की थी।

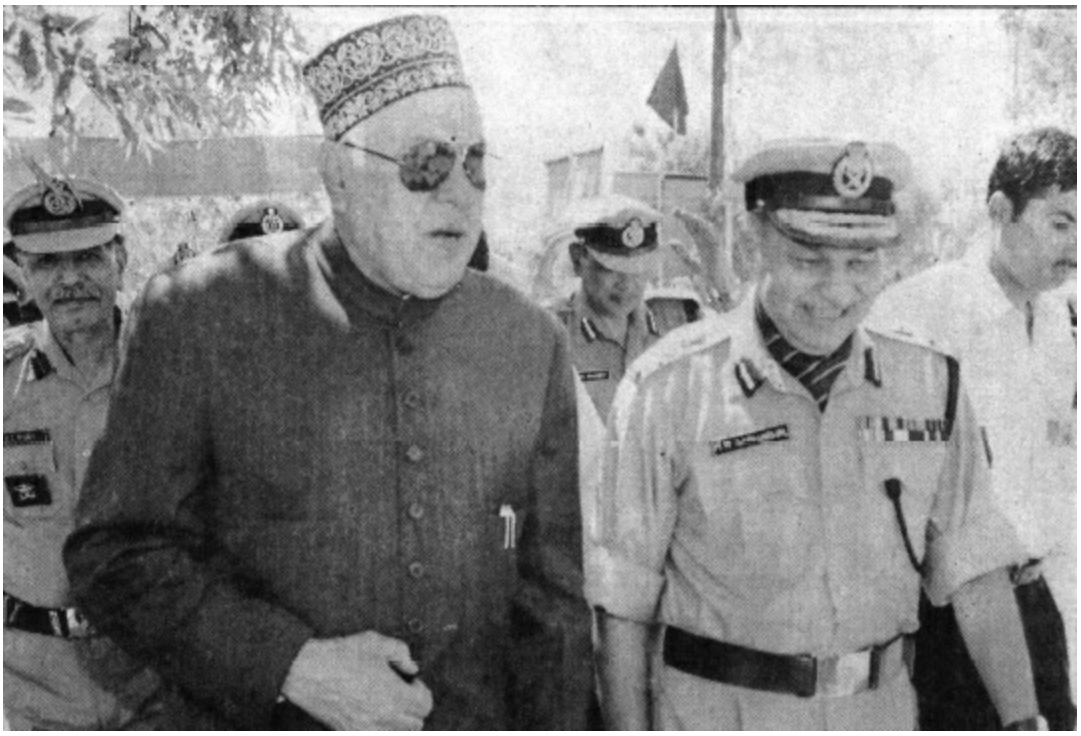
जम्मू-कश्मीर के मुख्य मंत्री डा. फारूख अब्दुल्ला इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने परेड का निरीक्षण कर उसकी सलामी ली। इस मौके पर इन जवानों को संम्बोधित करते हुए डा. फारूख अब्दुल्ला ने उम्मीद जाहिर की कि इन नौजवानों ने देश और संविधान के प्रति निष्ठा की जो कसम आज खाई है, उसे वे समझेंगे और उस पर अमल करेंगे। उन्होंने कहा कि इन युवकों ने बहकावे में आकर पहले जो रास्ता अख्तियार किया था, उसने कश्मीर को बरबादी के मुहाने पर पहुंचा दिया है, अब कश्मीर को इस मुसीबत से बाहर निकालने की जिम्मेदारी उन्हीं पर है, उन्होंने आगे कहा कि हम अमन पसंद हैं, मगर हमारी अमन पसन्दी का मतलब हमारी कमजोरी या बुजदिली नहीं है। उन्होंने जवानों से कहा कि अमन को बनाये रखने और नागरिकों की इज्जत की हिफाजत करना उनका दायित्व है।

डा. फारूख अब्दुल्ला ने इस अवसर पर बटालियन को कल्याण कार्यक्रमों के लिए दस लाख रूपये की अनुदान राशि भी प्रदान करने की घोषणा की। इससे पहले मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने कहा कि इन नौजवानों के बल में शामिल होने से आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई में अधिक मजबूती आयेगी, उन्होंने उम्मीद जाहिर की कि 136 बटालियन के सभी जवान अपना किरदार और अनुशासन उत्तम दर्जे का बनाये

रखेंगे। इस मौके पर बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने मुख्य आतिथि को बल की ओर से एक स्मृति चिन्ह भी भेंट किया।

आतंक की राह छोड़कर देश की मुख्य धारा में शामिल होने के इच्छुक युवकों को लेकर गृह मंत्रालय के आदेशानुसार जम्मू-कश्मीर में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 136 बटालियन का गठन किया गया। राह में भटके इन युवकों को मुख्य धारा में शामिल करने के इस प्रयास की हर वर्ग द्वारा सराहना की गयी। के.रि.पु. बल में शामिल करने के लिए इन आत्मसमर्पित युवकों का चयन एक उच्च स्तरीय कमेटी ने किया। जिसकी अध्यक्षता पुलिस महानिरीक्षक के.रि.पु. बल जम्मू-कश्मीर ने की। ये सभी वे युवक थे जिन्होंने केंद्र या राज्य अधिकारियों के समक्ष जनवरी से मार्च, 1997 के बीच आत्मसमपर्ण किया था। इन सभी ने देश की मुख्य धारा में शामिल होने की इच्छा प्रकट की थी। इसी उद्देश्य से 14 अप्रैल, 1997 को कमांडेट प्रितपाल सिंह के नेतृत्व में के.रि.पु. बल की 136 बटालियन का गठन ग्रुप केन्द्र, बनतलाब, जम्मू में किया गया। बटालियन गठन के प्रथम चरण में 30 जून, 1997 से 377 युवकों का प्रशिक्षण शुरू किया गया, दूसरे चरण में 1 सितंबर, '97 से 145 युवकों तथा तीसरे चरण में 6 अप्रैल, 1998 से 87 यवकों का प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया।

के.रि.पु. बल के मानक के अनुसार उन्हें 36 सप्ताह की ट्रेनिंग दी गई जिसके दौरान अत्याधुनिक हथियारों का प्रशिक्षण व फायरिंग का अभ्यास कराया गया। शारीरिक रूप से मजबूत करने हेतु उन्हें पी.टी., बिना हथियारों की लडाई आदि से प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त जंगल प्रवास के दौरान छद्म युद्ध के सारे अभ्यास, आक्रमण बचाव, घात, छानबीन, नाका, तलाशी, उग्र भीड़ से निबटना, नक्शों को पढ़ना व उनको अमल में लाना, कर्तव्य के दौरान आने वाली मानवाधिकार सम्बन्धी जानकारी व उसका सख्ती से पालन करना, इत्यादि का अथक प्रशिक्षण देकर उन्हें एक सक्षम सिपाही बनाया गया है।

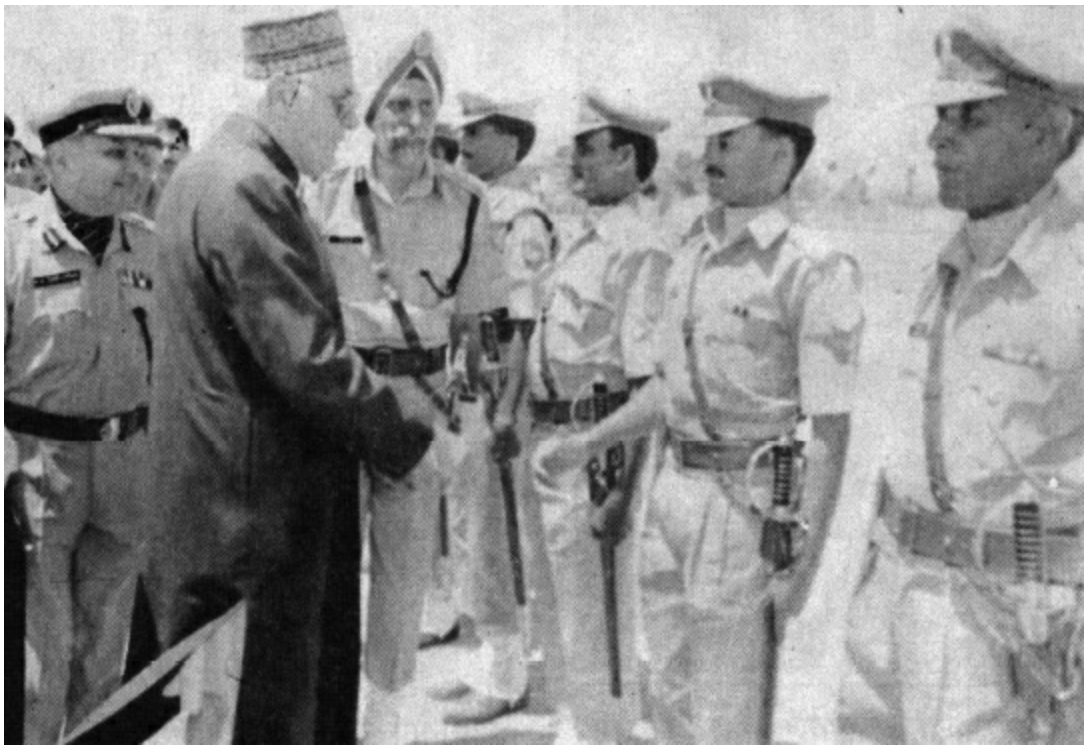


136 बटालियन की दीक्षांत परेड की सलामी लेने के लिए सलामी मंच की ओर आते श्री फारूख अब्दुल्ला

पूरा प्रशिक्षण उच्च स्तर पर तथा सुचारू रूप से प्रदान किया गया। इस दौरान एक घटना को छोड़कर किसी प्रकार की कोई समस्या या अप्रिय घटना नहीं घटी। प्रशिक्षण के दौरान 136 बटालियन का एक प्रशिक्षु सिपाही इकबाल खान छुट्टी पर बरामूला के बांदीपुरा थाने के अंतर्गत पड़ने वाले अपने गांव कुदरा गया था, जहां कुछ विदेशी आतंकवादियों ने उसका अपहरण कर उसकी हत्या कर दी। उसने आतंक के रास्ते पर पुनः लौटने के लिए मना कर दिया था।

मगर हस घटना का बटालियन के प्रशिक्षु जवानों पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा और वे पूर्ण समर्पण के साथ अपने प्रशिक्षण में जुटे रहे। अपने 36 सप्ताह के प्रशिक्षण के बाद बटालियन के 342 जवानों ने 7 जून; 1998 को श्रीनगर में दीक्षांत परेड में भाग लिया।

परेड का नेतृत्व 136 बटालियन के कमांडेन्ट श्री प्रितपाल सिंह ने किया। इस मौके पर महानिरीक्षक (परिचालन); के.रि.पु. बल जम्मू-कश्मीर श्री सी.एम. पाण्डे सहित घाटी स्थित सुरक्षा बलों के वरिष्ठ अधिकारी, नागरिक अधिकारी और अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।



परेड कमांडरों का परिचय प्राप्त करते श्री अब्दुल्ला

परेड में भाग लेने वाले 342 युवकों का यह प्रथम बैच था जो अपना 36 सप्ताह का प्रशिक्षण पूरा कर चुके हैं। अभी इसी बटालियन के 232 और युवक प्रशिक्षणरत हैं।

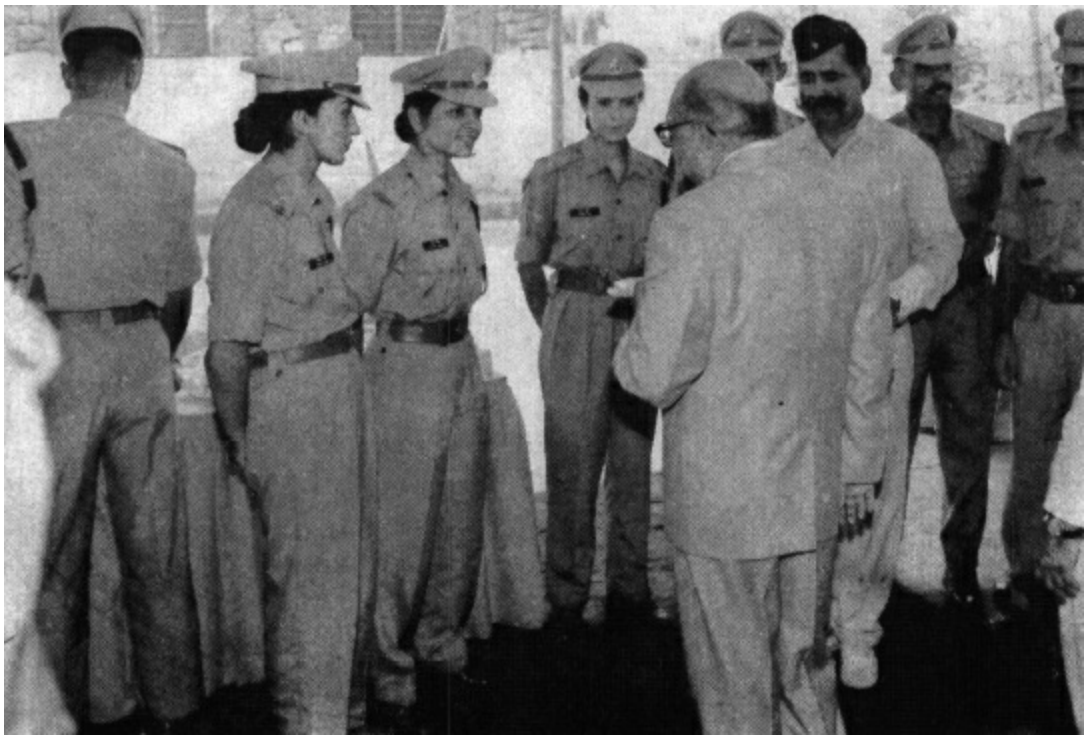
राजस्थान के राज्यपाल का के.रि.पु. बल अकादमी का दौरा

24 जून 1998 को राजस्थान के राज्यपाल श्री एन.एल. टिबरेवाल ने माउंट आबू स्थित बल की आंतरिक सुरक्षा अकादमी का दौरा कर सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 29वें प्रशिक्षणरत बैच को संबोधित किया। इससे पूर्व अकादमी के निदेशक श्री डी.के. सूरी ने राज्यपाल को अकादमी का परिचय देते हुए बताया कि अकादमी की स्थापना फरवरी, 1975 को की गयी थी।



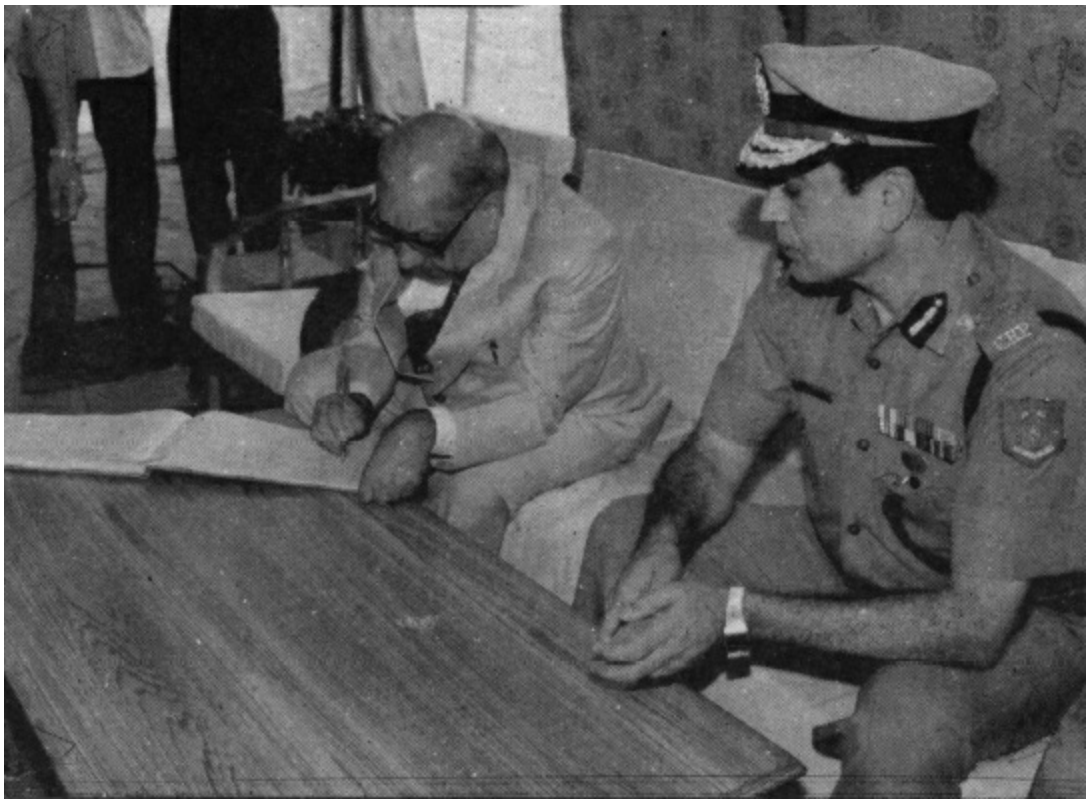
प्रशिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए राज्यपाल

उन्होंने कहा कि अकादमी को उत्कृष्ट केंद्र घोषित किया गया है और इसके लिए पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो की मदद से चरणबद्ध रूप से इसके लिए जरूरी मूलभूत ढांचा तैयार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अकादमी में अब तक 352 उप महानिरीक्षक, 1004 वरीष्ठ अधीक्षक और जिला मजिस्ट्रेट, 1963 उपाधीक्षक और सहायक कमांडेट विभिन्न कोर्स में भाग ले चुके हैं। इनमें केंद्रीय पुलिस संगठनों सहित अन्य राज्यों के अधिकारी भी शामिल हैं।



प्रशिक्षार्थियों के साथ विचार विमर्श करते राज्यपाल

श्री सूरी ने सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 29वें बैच का परिचय देते हुए बताया कि 5 जनवरी, 98 को बल के परिवार में शामिल हुए इन 62 अधिकारियों में तीन महिला अधिकारी भी शामिल हैं। इन अधिकारियों में पूरे देश में आए अधिकारी शामिल हैं। इनमें 12 विवाहित एवं 50 अविवाहित अधिकारी हैं। इनमें से 22 स्नातकोत्तर तथा 40 स्नातक हैं । इनके 57 सप्ताह के प्रशिक्षण में इनडोर, आउटडोर ट्रेनिंग सहित, प्रबंध तथा मानवाधिकारों का विशेष प्रशिक्षण भी शामिल है।



अकादमी के निदेशक श्री डी.के. सूरी के साथ राज्यपाल

राज्यपाल महोदय ने प्रशिक्षु अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रशिक्षण सतत चलने वाली प्रक्रिया है, क्योंकि जीवन में सीखने का कोई अंत नहीं है। उन्होंने प्रशिक्षु अधिकारियों का आह्वान किया कि वे अपने प्रशिक्षण अपनी व्यवसायिक दक्षता, तथा नेतृत्व के गुणों को बढ़ा कर संगठन द्वारा स्थापित जन सेवा के उद्देश्यों को प्राप्त करें। उन्होंने कहा कि आज देश अघोषित युद्ध, आतंकवाद, सांप्रदायिकता तथा अलगाववाद तथा प्राकृतिक विभीषिकाओं जैसी कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, अतः आज के पुलिस अधिकारियों को इन चुनौतियों का सामना करने के लिए उचित प्रशिक्षण लेकर स्वयं को तैयार करना चाहिए।

उन्होंने पंजाब में शांति कायम करने तथा जम्मू-कश्मीर और उत्तरपूर्व में आतंकवाद का सामना करने में के.रि. पु. बल द्वारा निभायी गयी भूमिका की प्रशंसा की। उन्होंने कर्तव्य पर शहीद हुए बल के कार्मिकों को याद करते हुए प्रशिक्षु अधिकारियों का आह्वान किया कि वे निजि हित की अपेक्षा सदैव देश हित को सर्वोपरि रखें।

के.रि.पु. बल के जवान

थार के रेगिस्तान में लोग,

हारेयाली की आशा नहीं करते।
अगर चढ़ गये बार्डर पर हम,
तो परिवार का ख्याल नहीं करते।
गर दुश्मन के सामने निहत्थे हों तो क्या,
जंग में अपनी जान की परवाह नहीं करते।
भौंरे हैं हम तितलियां तो नहीं,
जो उड़ गये चमन से तो फूलों की परवाह नहीं करते।

अजय कुमार राय, स.उ.नि. (म)
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, भोपाल

के.रि.पु. बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को 30 जून, 1998 को के.रि.पु. बल मुख्यालय, नई दिल्ली में संबोधित करते हुए केन्द्रीय गृह सचिव श्री बी.पी. सिंह ने कहा कि "गंभीर परिस्थितियों के अतिरिक्त और वह भी अगर यह परिस्थितियां देश की आंतरिक सुरक्षा से संबंधित हों तो, बल के कार्मिकों के प्रशिक्षण के क्षेत्र में कोई भी समझौता नहीं किया जा सकता।"

श्री सिंह ने कहा कि सरकार बल के सदस्यों की समस्याओं के प्रति जागरूक है, साथ ही वह उस तनाव और दबाव से भी अवगत है, जो अतिरिक्त तैनाती के कारण बल के सदस्यों को झेलना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार बल की संचालनिक दक्षता को सुधारने के लिए कदम उठा रही है।

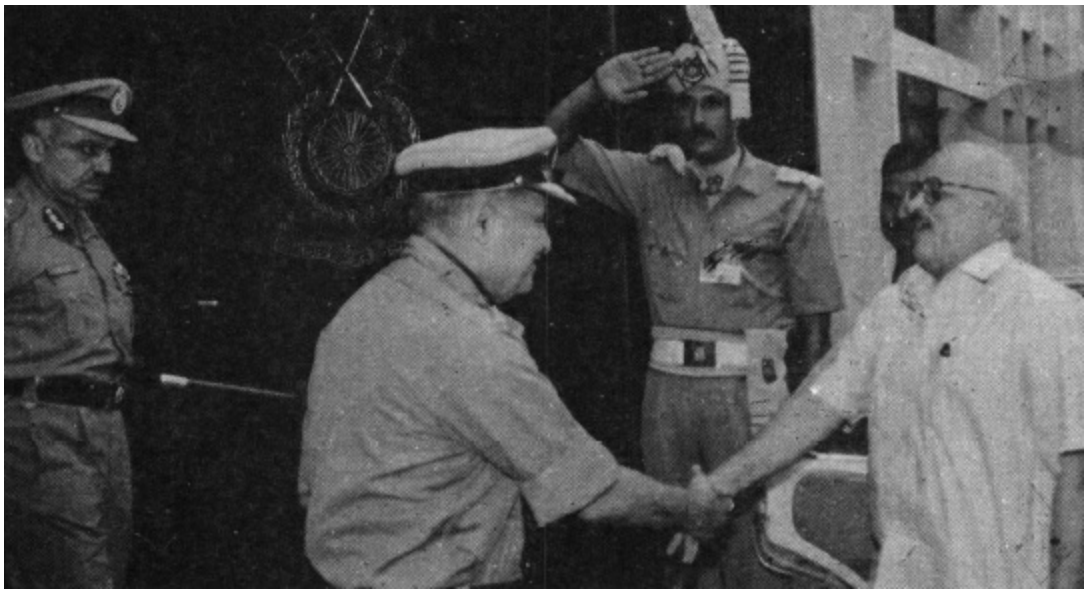
उन्होंने बल के फील्डकमांडरों का आह्वान किया कि वह बल के सदस्यों के नैतिक बल को ऊंचा बनाए रखने के लिए अपनी मानवीय और मनोवैज्ञानिक भूमिका को स्वयं समीक्षा करें। श्री सिंह ने परिचालनिक क्षेत्र में अधिक अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए बल को और अधिक स्वायत्तता प्रदान किये जाने की जरूरत पर बल दिया। पूरे देश में आंतरिक सुरक्षा के संबंध में के.रि.पु. बल द्वारा निभायी जा रही भूमिका की विशेष रूप से प्रशंसा करते हुए उन्होंने देश भर में चुनावों के दौरान के.रि.पु. बल द्वारा निभायी गयी भूमिका की भी सराहना की। उन्होंने आतंकवाद प्रभावित क्षेत्रों में प्रशिक्षण और व्यवसायिक दक्षता बढ़ाने पर जोर दिया।

इससे पूर्व गृहसचिव का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल ने गृह सचिव को बल के आधुनिकीकरण से जुड़ी समस्याओं के साथ-साथ,

बल के सदस्यों की आवासीय समस्याओं आदि के विषय में भी जानकारी दी।



वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए गृह सचिव



गृह सचिव श्री बी.पी. सिंह की के.रि.पु. बल महानिदेशालय में आगवानी करते हुए महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

इस कानफ्रेंस में के.रि.पु. बल के पूरे देश से आए सभी सेक्टरों के महानिरीक्षको ने भाग लिया और देश के वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य पर विचार के साथ-साथ संचालनिक और प्रशासनिक विषयों पर भी विचार किया।

शहीदों की आश्रिताओं को अनुग्रह राशि

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, बिहार सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक, श्री तिलक काक, भा.पु.से. ने 19 मार्च, '98 को ग्रुप केन्द्र के.रि.पु. बल मोकामाघाट के मनोरंजन सभागार में आयोजित विधवा कल्याण दिवस के अवसर पर उपस्थित समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि असम या देश के किसी कोने में शहीद जवानों के आश्रितों को दी जाने वाली कोई भी सहायता अथवा पदक उनके बलिदान अथवा राष्ट्र के लिए उत्सर्ग की कीमत नहीं हो सकती।

श्री काक ने कहा कि शहीदों की विधवाओं एवं आश्रितों के कल्याणर्थ हम हर स्तर पर कृतसंकल्प हैं। जवानों के त्याग एवं बलिदान को कभी पूरा नहीं किया जा सकता। इस अवसर पर एक सादे समारोह में असम में धनश्री से डीफु के बीच उग्रवादियों से डटकर लोहा लेते हुए 132 बटा. के शहीद आर.डी.सिंह, सहायक कमाण्डेट की विधवा श्रीमती गुलाबो देवी, हवलदार राम प्रसाद की विधवा श्रीमती लालमुनी देवी एवं मनोज कुमार की विधवा श्रीमती रीना देवी को पुलिस महानिरीक्षक श्री काक ने दो-दो लाख रूपये का चैक प्रदान कर सम्मानित किया। यह राशि असम सरकार ने वीर बांकुरे अधिकारी एवं जवानों के आश्रितों को अनुग्रह अनुदान के रूप में प्रदान की है।

उल्लेखनीय है उग्रवादियों की विध्वंसक कार्रवाईयों को नाकाम करने के लिए सहायक कमाण्डेट श्री आर.डी. सिंह के नेतृत्व में गत 23 जून, 1997 को सुबह 16 जवानों का दल पेट्रोलिंग ड्यूटी पर असम में धनश्री से डीफू जा रहा था तो उग्रवादियों ने रास्ते में अचानक भारी गोला-बारी शुरू कर दी। दुर्भाग्यवश जिस जीप पर श्री आर.डी. सिह अपने तीन जवानों सहित सवार थे, उसी जीप पर निशाना बनाकर उग्रवादियों ने गोली चलाई। फलस्वरूप, उस जीप के चालक सिपाही अनिल कुमार को गोली लगी और गंभीर रूप से घायल होते हुए भी चालक ने अधिकारी सहित सवार तीन जवानों को बचाने के लिए जीप को काफी तेजी से चलाने की कोशिश की। लेकिन उग्रवादियों ने जीप पर गोलियों की वर्षा शुरू कर दी, जिससे अधिकारी सहित हवलदार राम प्रसाद, सिपाही मनोज कुमार एवं सिपाही डी. श्रीनिवासुलू घटनास्थल पर ही शहीद हो गये।





शहीदों की आश्रिताओं को अनुग्रह राशि के चैक भेंट करते बिहार सेक्टर के महानिरीक्षक श्री तिलक काक

बोस्निया में मेरा एक वर्ष

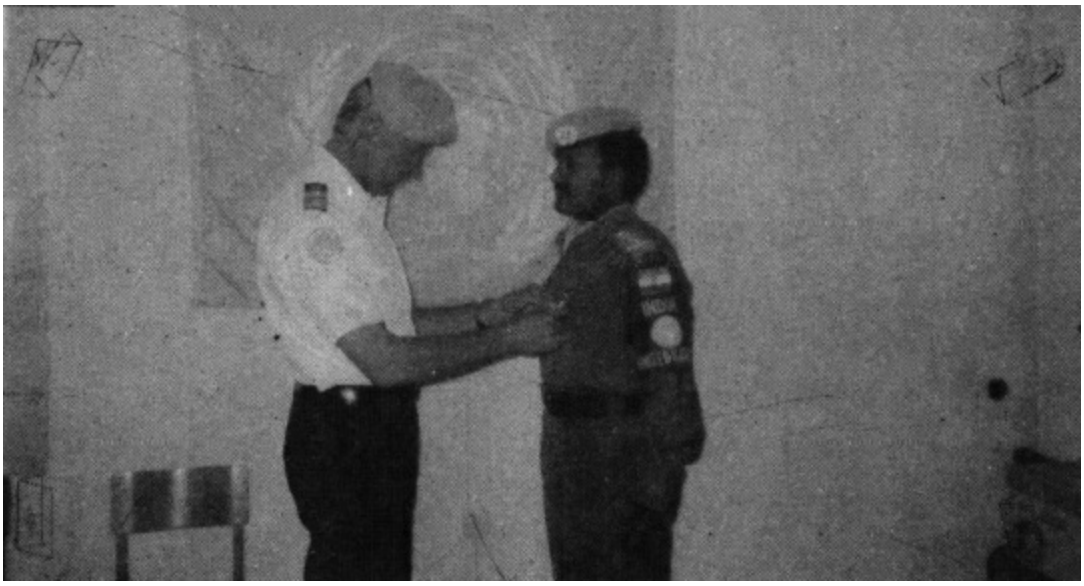
- निरीक्षक आर.के. गुप्ता

संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व में मानव के कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहा है। 1945 में अपने अस्तित्व में आने के पश्चात् विश्व के किसी भी भाग, पर होने वाली अशांति व आपदा के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ सदैव आगे रहा है। मूलतः विश्व में शान्ति अनाए रखना ही संयुक्त राष्ट्र का मुख्य उद्देश्य है। हालांकि इसकी अनेक संस्थाएं अन्य विकास कार्यो में भी लगी हुई है ।

विश्व के किसी भी देश में राजनैतिक उथल-पुथल, मानवाधिकारों का उल्लंघन व युद्ध की स्थिति में या जब कोई अन्य देश किसी अन्य देश की प्रभुसत्ता का अतिक्रमण करता है तो संयुक्त राष्ट्र संघ ऐसे मामलों में हस्तक्षेप करके वहां शांति कायम करने का प्रयास करता है। इस प्रयास में संयुक्त राष्ट्र संघ वहां पर शांति सेना जो कि विभिन्न देशों के सैनिकों को मिलाकर संयुक्त राष्ट्र शांति सेना कहलाती है को भेजता है व साथ में अर्न्तराष्ट्रीय पुलिस कार्यबल (शांति पुलिस) भेजता है।

अपने जन्म के पश्चात् संयुक्त राष्ट्र ने कई देशों में शान्तिसेना व पुलिस तैनात की है व लक्षित उद्देश्य को प्राप्त किया है। चाहे वह अफ्रिकन देश सोमालिया, इथोपिया, नाइजीरीया व अंगोला हो या अमेरीकन देश, कम्बोडिया या युरोपियन देश सलोबेनिया, क्रोशिया, बुल्गारिया, अलगांथा व बोस्निया हो । संयुक्त राष्ट्र संघ यहां सदैव तुरंत हस्तक्षेप करके शांति स्थापित करने में सक्षम रहा है।

यूरोपियन देश बोस्निया–हर्जीगोबिना (पूर्व युगोस्लाविया का भाग) में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा शान्ति स्थापित करने के लिए तैनात अर्न्तराष्ट्रीय पुलिस कार्य बल में कार्य करने के लिए जाने वाले भारतीय पुलिस दल में जाने का मौका मुझे, 1997-98 में प्राप्त हुआ। काफी जटिल परीक्षा, जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा भेजी गयी चयन समिति द्वारा दिल्ली में ली गई थी, के बाद मेरा व अन्य दो निरीक्षकों धीरज मोहन मिश्रा और शक्ति सिंह का चयन कर लिया गया। समस्त भारत से 145 पुलिस अधिकारियों का चयन किया गया जिसमें केरिपुबल, सीमा सुरक्षा बल, के.औ.सु. बल, भा.ति.सी.पु. सहित लगभग सभी राज्यों के पुलिस अधिकारी शामिल थे, इस दल के अन्दर पुलिस अधीक्षक रैंक तक के भारतीय पुलिस सेवा अधिकारियों से लेकर निरीक्षक रेंक के अधिकारी शामिल थे। के.रि.पु. बल का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य हम तीन निरीक्षकों का मिला, दल में सबसे बड़ा प्रतिनिधित्व सीमा सुरक्षा बल का था जिसमें करीब 40 अधिकारी शामिल थे।



श्री गुप्ता बोस्निया में संयुक्त राष्ट्र के क्षेत्रीय कमांडर से यू.एन. मंडल प्राप्त करते हुए

20 जून दोपहर 2.30 (भारतीय समय के अनुसार) पर हम लोगों ने विशेष यान द्वारा इन्दिरा गांधी अर्न्तराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ने के पश्चात् हम लोग क्रोशियाई की राजधानी जैगरेव में लगभग शाम के 2230 बजे (भारतीय समय) उतरे। हालांकि उस समय वहां पर क्रोशियन समय शाम के 7 बजे थे अर्थात भारतीय समय युरोपियन समय से 3.50 घण्टे आगे रहता है। इस लम्बी यात्रा के दौरान हमारा यान पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, तुर्की, बुल्गारिया, युगोस्लाविया और अरब सागर के ऊपर से गुजरा ।

यों तो मुझे इससे पहले राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड में कार्य करने के दौरान कई बार देश के अन्दर यान द्वारा यात्रा करने का मौका मिला लेकिन इतनी लंबी यात्रा करने का यह पहला अवसर था जो कि बहुत रोमांचकारी रहा ।

जेंगरेंब में उतरने के बाद वहां का मौसम बसंत ऋतु की तरह था, हमसे पहले यहां पर तैनात भारतीय पुलिस के एक अधिकारी व संयुक्त राष्ट्र संघ के (आई.पी.टी.एफ.) के कुछ और अधिकारी हमारे स्वागत के लिए एयरपोर्ट पर तैयार थे। हमें लगभग सात दिन के लिए जंगरेब में एक तीन तारा होटल में रखा गया, इस दौरान हमें बोस्निया में आई.पी.टी.एफ. का कार्य संयुक्त राष्ट्र का कार्य व वहां का वातावरण, कार्य करने का वातावरण तथा हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्य के बारे में प्रशिक्षण दिया गया इसके साथ-साथ हमारा चालक टेस्ट भी हुआ। सौभाग्य से सभी भारतीय दल के सदस्य इस टेस्ट को पास कर गए। तत्पश्चात् हम सभी को बोस्निया में हमारे विभिन्न कार्य स्थानों पर भेज दिया गया ।

अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस कार्य बल के कार्य को करने के लिए सम्पूर्ण बोस्निया हर्जेगोविना को सात रैंज में बांटा गया था। संयुक्त राष्ट्र पुलिस मुख्यालय बोस्निया की राजधानी सरायेवों में था। मुझे अन्य साथियों के साथ तुजला रोजन में भेजा गया जहां से मुझे जाविदोविचो स्टेशन पर भेज दिया गया | जाविदोविची स्टेशन से भी मुझे

अलग टीम जो कि एक छोटे कस्बे मगुलइ में तैनात थी, में भेज दिया गया। जहां पर मैंने पांच जुलाई को कार्य संभाला।

मगुलई में आई.पी.टी.एफ. टीम में मैंने ड्यूटी 5 जुलाई, '97 को शुरू की, इस टीम में मुझे मिलाकर सात पुलिस आफीसर व दो महिला दुभाषिए थे।

बोस्निया में अपने एक वर्ष के कार्यकाल के दौरान मुझे विभिन्न स्तरों पर एवं विभिन्न पदों पर कार्य करने का मौका प्राप्त हुआ जिसको मुख्यतः तीन भागों में बांटा जा सकता है :-

1. टीम स्तर पर 2. स्टेशन स्तर पर 3. रीजनल स्तर पर

बोस्निया में लोगों का खाने-पीने का तौर-तरीका हमारे भारत से अलग है, वहां पर खाने में ज्यादातर मांस का इस्तेमाल होता है वह भी गोमांस का, लोग शराब, सिगरेट व मांस के ज्यादा आदी है। अगर कहा जाए की 100 प्रतिशत आबादी इन तीनों का सेवन करती है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। घरों में व दुकानों पर लोग रोटी का इस्तेमाल नहीं करते बल्कि बड़े-बड़े ब्रेड ही इस्तेमाल करते है जो कि साधारणतः बेकरी में बनते हैं। बोस्निया ही नहीं बल्कि पूरे युरोपिय देशों में खान-पान का एक सा ही तरीका था, हालांकि कुछ देशों में जैसे जर्मनी, इंग्लैण्ड, कनाडा, हालैंड आदि में भारतीय रेस्तरां व खान-पान का सामान मिल जाता था।



यू.एन. मिशन बोस्निया से प्राप्त स्मृति चिह्न महानिदेशक की भेंट करते बोस्निया से लौटे निरीक्षक

बोस्निया में लोगों का रहन-सहन बहुत ऊंचे स्तर का है। वहां के लोगों को जो कुछ आय होती है उसका शतः प्रतिशत मकान के रख-रखाव,खाने-पीने व पहनने पर खर्च करते है लगभग सभी परिवारों के पास कारें है। वहां छोटे वाहन जैसे स्कूटर, मोटर साईकिल रिक्शा,आटो-रिक्शा बिल्कुल नहीं है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता सभी लोगों में है, छोटे बच्चों से लेकर बड़े बूढ़े तक सभी खेल प्रेमी है व कोई न कोई खेल जरूरत खेलते हैं।

राष्ट्रभक्ति, इमानदारी लोगों में कूट-कूट कर भरी है। वहां के लोगों का व्यवहार ईमानदारी, सामाजिक न्याय व्यवस्था, आदि देखकर यदि कहा जाए कि यूरोप स्वर्ग की तरह है तो कोई गलत नहीं है ।

वास्तव में मानवाधिकारों का जो स्तर व महत्व बोस्निया (यूरोप) में देखने को मिला उसके मुकाबले हमारे देश में अभी उतना महत्व नहीं दिया जा रहा। यहां लोग बहुत ही मृदुभाषी व व्यवहार कुशल है, आपको अपने घरों में किराएदार की भांति वही बल्कि बेटों व भाई की भांति रखते है, भारतीय कहावत मेहमान भगवान होता हैं" को यदि सत्य में देखना है तो यूरोप में देखा जा सकता है ।

एक वर्ष का कार्यकाल बोस्निया में व्यतीत करने के दौरान मुझे इस बात का गर्व अवश्य है कि मेरे हिन्दुस्तान को वहां के लोग चाहे बच्चा ही क्यों न हो भली-भांति जानते हैं। विशेषकर जब वह लोग हमारे राष्ट्रीय नेताओं, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी तथा राजीव गांधी नाम लेते है तो सीना गर्व से ऊंचा हो जाता है। मैंने तो यह पाया कि बोस्निया ही नहीं यूरोप के किसी भी देश में यदि आप हिन्दुस्तान का नाम लेंगे तो लोग आपका बहुत आदर करते है और आप खुद को गर्वान्वित महसूस करते हैं। विशेषकर पूर्व युगोस्लाविया के सभी हिस्सों में, जहां लोग स्वर्गीय मार्शल टीटो का नाम भारतीय नेताओं के साथ साथ लेने के भारत युगोस्लाविया की दोस्ती का जिक्र भी गर्व से करते है।

मुझे गर्व है कि के.रि.पु. बल की तरफ से मुझे अपने देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला व दुनिया के लगभग 84 देशों के पुलिस व अन्य अधिकारियों के साथ काम करने का मौका मिला, जहां पर मुझे अपने देश के विषय में उन लोगों को पुख्ता जानकारी देकर उनके भ्रम को दूर करने का मौका मिला ।

यह जानकर पाठकों को आश्चर्य हुआ होगा कि मिशन में हम भारतीयों के सबसे करीब दोस्त थे हमारे पाकिस्तानी भाई। ऐसा लगता था जैसे भारत और पाकिस्तान दो देश नहीं है, एक खान-पान, एक भाषा, एक संस्कृति विशेषकर विदेशियों को तो आश्चर्य होता था जब वह हमें एक साथ उठते-बैठते, खाते-पीते देखते थे ।

संक्षिप्त समाचार

35 बटा. द्वारा मुफ्त चिकित्सा शिविर

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की युनिटों द्वारा उत्तर पूर्वी राज्यों में अपनी तैनाती के दौरान स्थानीय नागरिकों के साथ सामजस्य बैठाने तथा उनकी समस्याएं जानने और उनके संभव निदान के लिए समय-समय पर सिविक एक्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है, इसी श्रृंखला में मणिपुर स्थित 35 बटा. ने लोथाल में एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया ।

चिकित्सा कैंप का उदघाटन स्थानीय पुलिस अधीक्षक एस. मंगलेमजाओं ने किया ।

कैंप में स्थानीय नागरिकों को मुफ्त दवाओं का वितरण किया गया तथा बल के साथ-साथ प्रशासन के डाक्टरों ने भी रोगियों की जांच की ।

सराहनीय कार्यों के लिए राजभाषा शील्ड

वर्ष 1996-97 के दौरान सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय द्वारा ग्रुप केन्द्र, इम्फाल को प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया तथा 27 मार्च, 98 को रांची स्थित "मयूरी प्रेक्षागृह" में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में ग्रुप केन्द्र को राजभाषा शील्ड व प्रशिस्त पत्र प्रदान किए गए ।

देवयानी डे को राष्ट्रीय पुरस्कार

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 1997 की परीक्षाओं में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने पर सी.आर.पी.एफ. स्कूल की छात्रा देवयानी डे का चयन केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए किया गया । इस पुरस्कार में देवयानी को सौ रूपये नकद के अतिरिक्त एक प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया ।

इसके अतिरिक्त हिंदूजा फाउंडेशन ने भी देवयानी को धरम हिंदूजा मेरिट कम मीन्स स्कोलरशिप एवार्ड से सम्मानित किया है ।

आर.ए.एफ. द्वारा राहत कार्य

तटवर्ती सौराष्ट्र और कच्छ क्षेत्रों में 9 जून, '98 को आये चक्रवाती तूफान से हुई तबाही के बाद राज्य सरकार द्वारा चलाये गये राहत एवं बचाव कार्यों में सेना और आर.ए.एफ.के जवान रात-दिन नागरिकों की मद्द में जुटे रहे ।

सेना के तीनों अंगों थल सेना, वायुसेना और नौसेना के अलावा आर.ए.एफ. के जवान बचाव एवं राहत कार्यों में प्रशासन के साथ दिन-रात सहयोग करते रहे ।

प्रभावित क्षेत्रों के लिये नौसेना के तीन विशेष जहाज और हेलीकाप्टर और थलसेना ने अपने जवान भेजे, वायुसेना ने क्षेत्रों में राहत सामग्री पहुंचाने में मदद की ।

वायुसेना के हेलीकाप्टरों ने तूफान प्रभावित सैनिक छावनियों से तीन सौ से ज्यादा जवानों और अधिकारियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। जामनगर, भूज और गांधीधाम छावनियां तूफान से बुरी तरह प्रभावित हुई ।

सेना के जवानों आर.ए.एफ. ने तूफान से उखड़े पेड़ों, बिजली और टेलीफाने के खंभों से अवरूद्ध सड़कों को साफ किया। आर.ए.एफ. के जवानों ने तूफान प्रभावितों को चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने एवं खाद्य वस्तुओं के वितरण का भी कार्य किया ।

आर.ए.एफ. के जवानों ने प्रभावित क्षेत्रों में पौने का पानी पहुंचाने और स्थानीय नागरिकों के साथ पुनर्निमाण कार्यों में भी सहयोग किया।

माह मई, '98 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह मई, '98 में मृत्यु को प्राप्त हुए सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल अशोक कुमार (68 बटा), उ.नि.एम.डी. सादिक खान (108 बटा.), है. का.के.जी. सैमुअल (39 बटा.), कां. बी.एम. जमातिया (52 बटा.), ला. नायक रोकमंगल सिंह (26 बटा.), ला. नायक मोहम्मद फजल (53 बटा.), कां. एन. सुभाष चंद (ग्रुप केन्द्र इम्फाल), कां. एम.डी. बर्मन (134 बटा.), कुक प्रकाश चंद्र (3 बटा.), का. टी.सी. गोदा (107 बटा.), सफाई कर्मचारी हंसराज (ग्रुप केन्द्र गांधीनगर), कां. शंभु प्रसाद (133 बटा.), नायक ए.डी. वर्मा (14 बटा.), है. का. एन.के. सिंह (ग्रुप केन्द्र इम्फाल), है.कां. जुल्फीकार हुसैन (54 बटा.), तथा है.कां./ड्राईवर राजदीप सिंह (102 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार दिसंबर, '97 में 136 बटा. के रंगरूट मोहम्मद इकबाल खान, मार्च, '98 में 16 बटा. के का. मोहम्मद मुंशी तथा 14 बटा. के कां. एम. किशोर कुमार सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह मई, '98 में मृत्यु के 22 मामलों में कुल 12,85,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। अक्षमता के एक मामले में भी 15,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

जोखिम निधि "बी" से भी इसके आठ सदस्यों की मृत्यु के मामले में 2,80,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

वतन की पुकार

जब कभी मैं लिखने बैठती हूं या मैं देश की वर्तमान स्थिति पर गौर करती हूं तो मेरी आंखें नम हो जाती हैं।

आज हमारा वतन एक बार फिर बरबादी की ओर अग्रसर है। इसलिए नहीं कि हम पर बाहरी आक्रमण हो रहें हैं या कोई प्राकृतिक विपदा आ गई हो। आज मेरा वतन स्वयं की लगायी आग से ही झुलस रहा है।

इतिहास गवाह है कि जब कभी देश पर बाहरी आक्रमण हुए है तब हम सबने

मिलकर उनका मुंह तोड़ जवाब दिया है, जब-जब सरहदों पर विपदाओं के बादल मंडराए है तब-तब देश की हवाओं ने एक जुट होकर उन बादलों का रूख मोड़ा है, परन्तु आज . . . आज परिस्थितियां भिन्न हैं, क्योंकि आज आग में जलता घर भी हमारा है और आग लगाने वाले भी भारतीय हैं।

क्या पश्चिम की नई संस्कृति व सभ्यता, हमारी सैकड़ों वर्षों पुरानी सभ्यता से सुन्दर सुदृढ़ है? क्या हमारे वेद-पुराण-उपनिषद पाश्चात्य लेखनी के सामने कमजोर हैं ?

हमारा देश 25 राज्यों तथा 9 केन्द्रशासित प्रदेशी से मिलकर बना "संघीय राज्य है इसमें अनेकों भाषाएं संस्कृतियां, उपभाषाएं पाई जाती हैं, किन्तु कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ की खाड़ी से नागालैंड तक केवल एक और सिर्फ एक भाषा अर्थात "हिन्दी" का सभी आदर करते है, यह भाषा हमारे देश की एकता, अखण्डता का जीता-जागता सबूत है। जैसे एक माला मैं अनेकों फूल होते है किन्तु फिर भी माला एक ही है उसी प्रकार भिन्न-भिन्न भाषाएं संस्कृतियां, भारतीय ध्वज तले एक हैं, सभी हिन्दुस्तानी हैं।

लेकिन ना जाने किसकी बुरी नजर लग गई है मेरे वतन को। आज कोई राम के नाम पर लड़ रहा है तो कोई खुदा के लिए लड़ रहा है। कोई खालिस्तान मांग रहा है तो काई बोड़ो लैंड, यहां तक कि परमेश्वर द्वारा प्रदत्त पवित्र नदियों के पानी के बटवारें तक को लेकर संसद में हंगामा मंच रहा है ?

यदि प्रगतिशील विचार धाराओं को कुछ क्षणों के लिए रोके तथा फिर अपने आप से पूछे कि हम क्यों लड़ रहे हैं, . . . तो हम यही उत्तर अपनी अंर्तात्म से पाएंगे कि हम सब बहकावे में आकर अपने ही देश के साथ खिलवाड़ कर रहें हैं। हम अपने ही हाथों से अपनी धरती को कभी राम के नाम पर तो कभी अल्लाह के नाम पर बांट रहें है, और वह दिन शीघ्र ही आएगा जब बटतें-बटतें हमारे पास कुछ नहीं रह जाएगा।

क्या प्रगति हमें यही सिखाती है कि हम अपने की हाथों अपने ही देश का सर्वनाश कर दे, क्या आधुनिक शिक्षा हमें यही पढ़ाती है कि हम अपनी संस्कृति अपनी भाषा, अपने रिवाजों को छोड़ कर विदेशी रंगों में रंग जाएं।

यदि आज की आधुनिकता यही है तो छोड़ देना चाहिए इसे जो हमें गुमराह करती है . . . यदि आधुनिक समाज यही है, तो छोड़ देना चाहिए ऐसे समाज को।

आज देश में सम्प्रदाय, भाषावाद, व्यक्तिवाद, अफसरशाही का भीषण तांडव हो रहा है। क्या इसी लिए बिस्मिल फांसी पर झूल गए थे , क्या इसीलिए गांधी शहीद हुए थे ?

इन महान वीरों की शहादत केवल पंजाब या कश्मीर या केवल बंगाल के लिए नहीं थी, इनकी शहादत एक वतन के लिए थी, इनकी शहादत "भारत वर्ष" के लिए थी।

मैं निवेदन करती हूं उन शिक्षित नवयुवकों से जो गुमराह हो गए हैं, या गुमराह किए जा रहे है कि वो जाग उठे क्योंकि कल उनका है. प्रातः काल की लालिमा उन्हें

विजयश्री देने के लिए बेचैन है।

मैं निवेदन करती हूं भारत के युवा वर्ग से कि वे आगे बढ़े तथा इस देश के विकास में एकजुट हो जाएं।

यदि ऐसा ना हुआ तो भविष्य में आने वाली पीढ़ियां हमें क्षमा नहीं करेगी तथा इतिहास हमें धिक्कारेगा। हमसे बड़ा खुश-नसीब कौन होगा कि हमें भारत जैसे देश में जन्म मिला, जहां पांच नदियों का संगम है, जहां छह मौसम बदलते हैं, जहां 18 भाषाओं में भी एकता है, जहां एक संघीय राज्य है।

अतः आओ एक बार फिर प्रण करे कि हम इस झुलसते वतन को अपनी मेहनत के पसीने से शांत करेंगे। हम प्रण करे कि अब कोई घर नहीं जलने देंगे। हम प्रण करें कि हम जातिवाद, साम्प्रदायिता और अलगाववाद की आग से जलते देश को अपनी मेहनत और निष्ठा से विकास के एक नये मार्ग की और अग्रसर करेंगे। यही वतन की पुकार है, आज के युवाओं के लिए।

स.उ.नि. (म) अनिता मीणा
ग्रुप केन्द्र-दो, के.रि.पु. बल,
अजमेर (राजस्थान)

"वीर वही है"

वीर वहीं है जिसका जीवन मातृभूमि को अर्पित है,
वीर वही जो जन्मभूमि की रक्षा हेतु समर्पित है /
वीर वही जो झांसी वाली रानी बनकर प्रमुदित है,
वीर वहीं जो वीर कुंअर सम बलिदानी है पुलकित है /
वीर वही जो देश भक्ति का अनुपम बना दीवाना है,
वीर वही है जिसके सिर पर बंधा केसरिया बना है /
वीर वही है जिसकी गणना उन वीरों में होती है,
वीर वही जिसके अभाव में वसुन्धरा भी रोती है /
वीर वही जो मातृभूमि हित मंगल पाण्डे बन जाए,
वीर वही जो बलि वेदी पर हंसते हंसते चढ़ जाए /
वीर वही जो तिलक गोखले का अभिमान बचा रखे,
वीर वही जो गांधी नेहरू के सम सत्य बना रखे /
वीर वही जो विस्मिल भगत सरीखा अपने प्राण लुटाये,

वीर वही जो शेखर रास बिहारी बन शूली चढ़ जाये ।
वीर वही जो मृत्यु वरण कर, राष्ट्र ध्वजा नभ फहराये,
वीर वही जिसका भुजबल नित मातृभूमि के हित में आये।

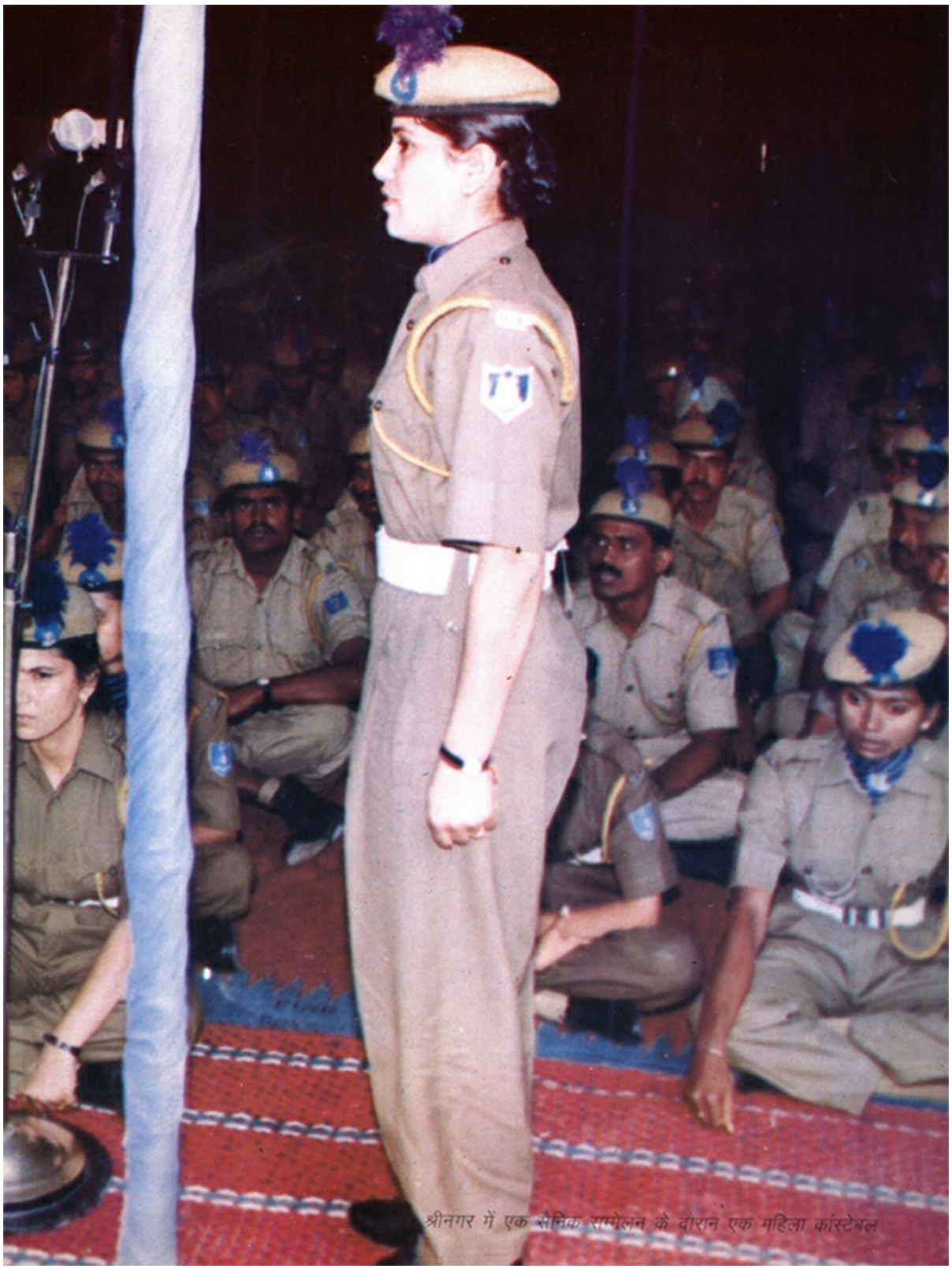
उ.नि. (म) हंसराज ओझा (प्रभात),
ग्रुप केन्द्र, मोकामाघाट

प्रिय पाठको

सी.आर.पी.एफ. समाचार केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में सभी यूनिटों, जवानों तथा अधिकारियों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है, इसके माध्यम से जहां न केवल हम पाठकों को बल से संबंधित अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करने का प्रयास करते हैं वहीं पाठकों के लिए इसमें रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री का समावेश भी किया जाता है। किंतु अच्छी सामग्री के अभाव में पत्रिका के स्तर को बनाए रखने में वर्तमान में कुछ समस्या आ रही है ।

अतः अपने पाठकों से हमारा निवेदन है कि अगर उनकी लेखन में रूचि है तो वे अपनी कविताएं, कहानियां, लेख, संस्मरण तथा अन्य सामग्री हमें प्रकाशन के लिए भेजें। पत्रिका में हम अपने चिकित्सक साथियों से भी चिकित्सा संबंधी लेख आमंत्रित करते हैं, इससे न केवल हमारे पाठकों का ज्ञानवर्द्धन होगा, अपितु बल की इस पत्रिका को भी हम विचारों के आदान-प्रदान का एक उपयोगी मंच बना पाएंगे। आशा है पत्रिका के स्तर को सुधारने के लिए हमें पाठकों की ओर से शीघ्र ही उनकी रचनाएं प्राप्त होंगी। प्रकाशित होने वाली रचनाओं के लिए उचित पारिश्रमिक की भी व्यवस्था है ।

आपका,
डी.जी. महापात्र
मुख्य संपादक, सी.आर.पी.एफ. समाचार



श्रीनगर में एक सैनिक सम्मेलन के दौरान एक महिला कांस्टेबल


रजि. न. 4767/87

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 12 अंक - 5 31 अगस्त, 1998, 9 भाद्रपद, शक 1920





'के.रि.पु. बल *2003* में' विषय पर आयोजित समारोह का उद्घाटन भाषण करते हुए पूर्व मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–12 अंक–5
31 अगस्त, 1998
9 भाद्रपद, शक 1920

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली–2 दूरभाष : 3262279



इस अंक में

350 के.रि.पु. बल कार्मिकों द्वारा रक्तदान

आश्रितों को अनुदान

के.रि.पु.बल के 26 कार्मिक पदकों से सम्मानित

सेमिनार – के.रि.पु. बल – 2003

13वें बैच के अधिकारियों का पुनर्मिलन

अमरनाथ यात्रा

आलू की आत्मकथा

कांवेताएं

प्रथम आवरण – महानिरीक्षक पूर्वी सेक्टर श्री आर.पी. सिंह नायक ड्राइवर एस. एम. करीम की विधवा अंजुमन आरा बेगम को अनुग्रह राशि का चैक भेंट करते हुए ।

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं । सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं ।

–संपादक

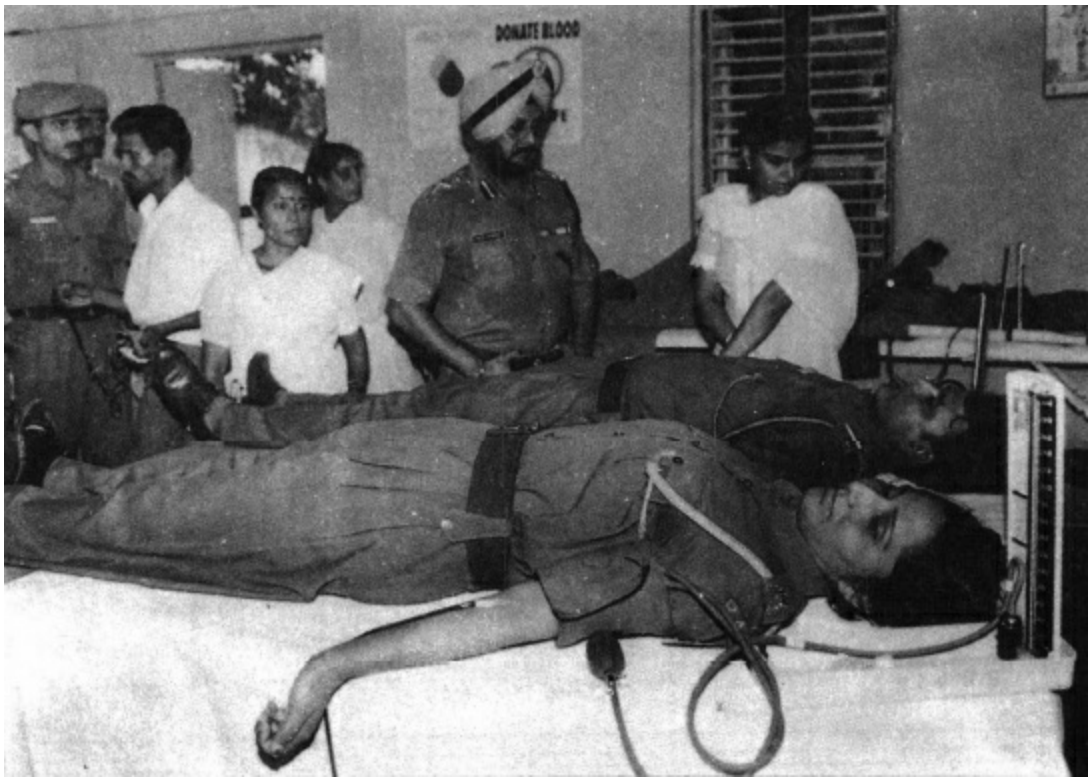
350 के.रि.पु. बल कार्मिकों द्वारा रक्तदान

केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल अस्पताल, आर.के.पुरम्, नई दिल्ली में आयोजित एक रक्तदान शिविर में बल के 350 से अधिक कार्मिकों ने रक्तदान किया। बेस अस्पताल नई दिल्ली द्वारा रेड क्रास के सहयोग से आयोजित किये गये इस रक्तदान शिविर का उद्घाटन बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने किया।

इस मौके पर रक्तदान करने वाले वरिष्ठ अधिकारियों में स्पेशल सेक्टर के उप महानिरीक्षक श्री पी.सी. जोशी, ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली के अपर उप महानिरीक्षक एम.पी. चिटनिस, आर.ए.एफ. के सहायक निदेशक श्री आर.के. सिंह तथा सहायक कमांडेट रजनीश अहलावत शामिल थे। रक्तदान करने वाले कार्मिकों में बहुत से कार्मिक ऐसे थे जो पहले भी कई बार रक्तदान कर चुके हैं।



रक्तदान करते अपर उप महानिरीक्षक (ग्रुप केंद्र नई दिल्ली) श्री एम.पी. चिटनिस



बल के कार्मिक रक्तदान करते हुए

के.रि.पु. बल अर्द्ध शताब्दी से भी अधिक समय से देश की सेवा में कानून व्यवस्था की स्थितियों को बनाए रखने के लिए तैनात किया जाता रहा है, लेकिन बल के कार्मिक अपनी समान्य ड्युटियों के अतिरिक्त मानवीय कार्यों में भी सदैव अग्रणी रहे हैं, चाहे वह प्राकृतिक आपदाओं, अग्निकांड व दुर्घटनाओं के समय बचाव व राहत कार्य हों या फिर रक्तदान।

अनुदान राशि जवानों के बलिदान की कीमत नहीं : सिंह

सरकार की ओर से मिलने वाली अनुदान राशि जवानों के बलिदान की कीमत नहीं है। यह तो मृत जवान के परिवार के भरण–पोषण के लिए दी जाती है। यह कहना है केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (पूर्वी क्षेत्र) के महानिरीक्षक आर.पी. सिंह का। वे 22 जून, 1998 को साल्टलेक के के.रि.पु. बल भवन में तीन मृत जवानों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए आयोजित समारोह में बोल रहे थे। पश्चिम बंगाल के तीन जवान 1996 और 1997 के दौरान सरकारी ड्यूटी करते हुए शहीद हो गए थे।

हुगली जिले के गढ़मंदरन में जन्मे एस.एम. करीम 1976 में के.रि.पु. बल में भर्ती हुए थे और 84 बटालियन में सेवारत थे। तीन अक्टूबर 1997 को सुबह छः बजे

नायक/चालक एस.एम. करीम 29 कामैयों के साथ सी/84 मुख्यालयस्थल गंधटोप से दो गाड़ियों में उधमपुर से क्लासीफिकेशन फायरिंग के लिए यात्रा कर रहे थे। गाड़ियां मझोरी से करीब चार किलोमीटर की दूरी पर पहुंची तो सड़क के किनारे एक शिलाखंड (गोला पत्थर) में स्थापित अत्याधुनिक विस्फोटक यंत्र को आतंकवादियों ने रिमोट कंट्रोल से उड़ा दिया। जिसमें नायक चालक एस.एम. करीम बुरी तरह घायल हो गए। उन्हें रामनगर सिविल अस्पताल में भर्ती किया गया। जहां उसी दिन उनकी मौत हो गई।

अनुग्रह राशि के भुगतान के लिए दो लाख रूपए का चैक और सामूहिक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना के मद में एक लाख दस हजार रूपए की राशि एस.एम. करीम की विधवा अंजुमन आरा बेगम को के.रि.पु. बल (पूर्वी क्षेत्र) के महानिरीक्षक आर.पी. सिंह ने प्रदान की।



अनुग्रह राशि के चैक स्वीकार करने के बाद बल के मृत कार्मिकों के आश्रित महानिरीक्षक पूर्वी सेक्टर श्री आर.पी. सिंह के साथ

उन्होंने योगेंद्र नाथ राय की विधवा दीपाली राय को अनुग्रह राशि दो लाख रूपए का बैंक ड्राफ्ट प्रदान किया। इससे पहले उन्हें पांच लाख रूपए की अनुदान राशि असम सरकार दे चुकी है। श्री राय असम में उल्फा उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ में मारे गए थे।

12 बटालियन के सिपाही हरिचरण मंडल मालदा जिले के इंगलिश बाजार के रहने वाले थे। ये छह दिसंबर 1990 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती हुए थे। 25 जुलाई, 1996 को गुनडाला पुलिस स्टेशन के डामारयोग गांव के एक स्कूल में संतरी ड्यूटी पर तैनात थे।

रात दो बजे मनुगुर डालमस के पीपुल वार ग्रुप के करीब 60 हथियार बंद भूमिगत

सदस्यों ने एक हथगोला स्कूल भवन पर फेंक दिया जो फट गया। हथगोला फटने की आवाज सुनकर हरिचरण मंडल शत्रु के ऊपर जवाबी कार्रवाई के लिए तत्काल बाहर आए लेकिन उग्रवादियों ने गोली मार कर उन्हें मौत के घाट उतार दिया। आंध्रप्रदेश सरकार ने मृतक के उत्तराधिकारी को एक लाख रूपए की अनुग्रह राशि दी। जिसे मृतक की मां राधारानी मंडल को दिया जाएगा। बीमार होने की वजह से हरिचरण मंडल की मां समारोह में नहीं आ सकी। यह राशि उनके पास उनके घर भेज दी गयी ।

समारोह में महानिरीक्षक आर.पी. सिंह के अलावा डी.आई.जी. महेंद्र प्रसाद, डी.आई.जी. चंद्रमोहन बहुगुणा और सहायक निदेशक आर.सी. शर्मा मौजूद थे।

स्वतंत्रता दिवस पर के.रि.पु. बल के 26 कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 26 अधिकारियों एवं कार्मिकों को उनकी अद्वितीय सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। इनमें से दो अधिकारियों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा 24 अधिकारियों एवं कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किया गया है। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक निम्न हैं :–

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



अपर उप महानिरीक्षक जय प्रकाश (ग्रुप केंद्र लखनऊ)



अपर उप महानिरीक्षक बी.आर. शर्मा *(ग्रुप केंद्र मोकामाघाट)*

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक



सहायक निदेशक *(एम.टी.)* श्रीकांत *(महानिदेशालय)*



सहायक निदेशक *(संभरण)* बी.के. कौशल *(महानिदेशालय)*



कमांडेट ए.एस. मलिक *(30* बटा.*)*



कमांडेट एच.एस. नेगी *(*महानिरीक्षक कार्यालय स्पेशल सेक्टर*)*



सहायक निदेशक *(*स्थापना-*2)* बी.एन. चटर्जी *(*महानिदेशालय*)*



द्वितीय कमान अधिकारी बी.के. चक्रवर्ती *(122* बटा.*)*



द्वितीय कमान अधिकारी आर.एस. मेहरा *(53* बटा.*)*



मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा.जी.सी. महंती *(*बेस अस्पताल-*1,* नई दिल्ली*)*



उप कमांडेट पी.सी. बंगा *(5* बटा.*)*



उप कमांडेट इजबिंदर सिंह *(*ग्रुप केंद्र बनतलाब*)*



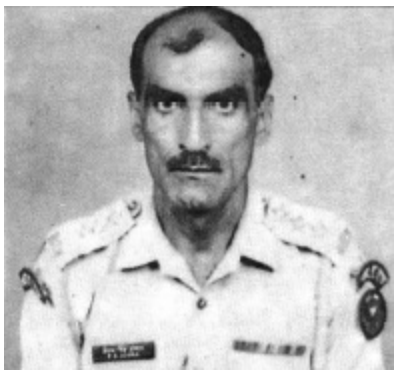
उप कमांडेट आर.एस. यादव *(सी.टी.सी.-1)*



सहायक कमांडेट एस.नेल्सन *(ग्रुप केंद्र पल्लिपुरम)*



सूबेदार मेजर मनोहर लाल *(118 बटा.)*



इंस्पेक्टर पी.सी. डोगरा *(103)* बटा.



इंस्पेक्टर रामपत सिंह *(20* बटा.*)*



इंस्पेक्टर क्रिष्टो पी. बालाकृष्णन *(2* सिंग. बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर पूरनचंद *(*ग्रुप केंद्र जालंधर*)*



सब इंस्पेक्टर आइ.डी. मिश्रा *(38* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर बिशन दास *(113* बटा.*)*



सब इंस्पेक्टर वाई ए. खान *(106* बटा.*)*



है. कां. वरीयाम सिंह *(12* बटा.*)*



है.कां. एस.बी. थापा *(38* बटा.*)*



है.कां. ए.सुकुमारन नायर *(35* बटा.*)*



है.कां./ड्रा. आई.ए.खान *(*आर.टी.सी.*-2)*

सेमीनार

“के.रि.पु. बल *2003*” विषय पर सम्मेलन



के.रि.पु. बल *2003* में गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए पंजाब पुलिस के पूर्व महानिदेशक श्री के.पी.एस. गिल ,जबकि मंच पर बैठे हैं *(*क्रमशः बाएं से दाएं*)* बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल, संविधान विशेषज्ञ श्री के.टी.एस. तुलसी तथा अपर महानिदेशक श्री वाई.एन. श्रीवास्तव

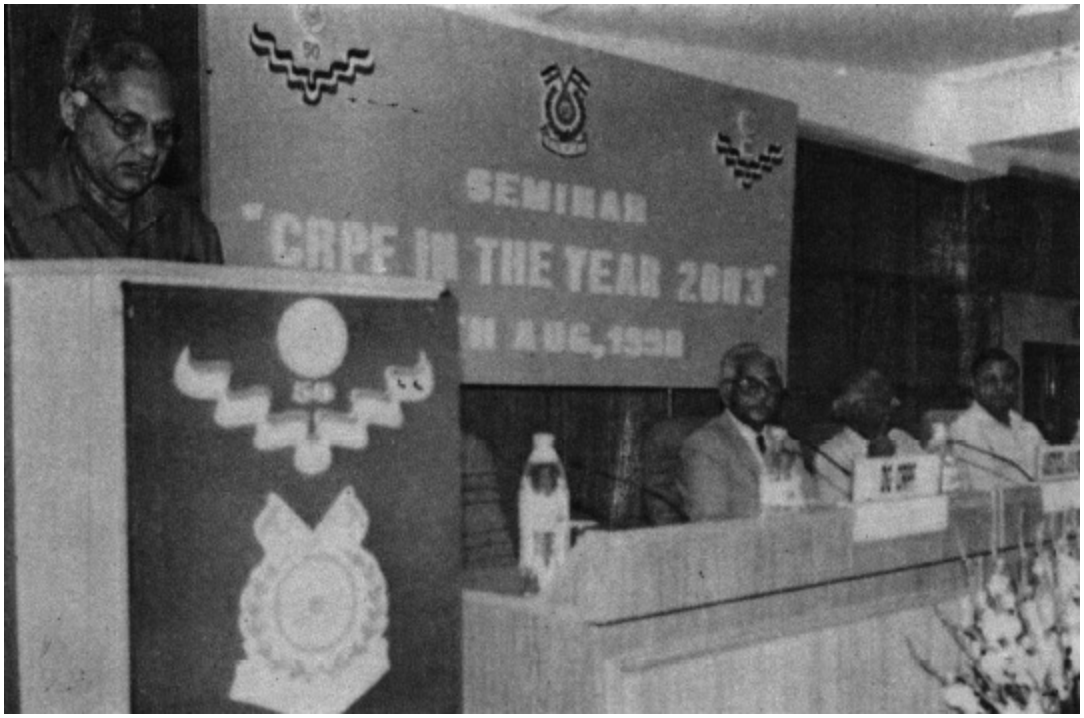
"आपको नागरिकों के मानवाधिकारों तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने के कार्य के बीच एक स्वस्थ संतुलन बनाए रखना है"। 8 अगस्त, 1998 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में "के.रि.पु. बल–2003 में" विषय पर आयोजित एक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भारत के पूर्व मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति जे.एस. वर्मा ने कहा कि अपनी आरक्षित प्रवृत्ति के कारण आंतरिक सुरक्षा ड्यूटियों के दौरान के.रि.पु. बल ने देश में काफी ख्याति अर्जित की है। उन्होंने कहा कि यह एक अनुशासनात्मक बल है जो आदर्श सिद्धान्तों पर कार्य करता है । के.रि.पु. बल की भूमिका की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि कठिन परिस्थितियों में कार्य करते हुए भी इस बल ने अच्छी प्रतिष्ठा तथा जन विश्वास अर्जित किया है।

भारत के पूर्व अतिरिक्त सोलीसीटर जनरल श्री के.टी.एस. तुलसी ने इस अवसर पर बोलते हुए बल की भूमिका एवं शक्तियों से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों का उल्लेख किया । सम्मेलन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए पंजाब पुलिस के पूर्व महानिदेशक श्री के.पी.एस. गिल ने कहा कि देश में के.रि.पु. बल ही एक मात्र ऐसा बल है जिसका राजनीतिकरण नहीं हुआ ।और नागरिकों का इस बल में विश्वास है। उन्होंने कहा कि देश इस समय एक कठिन दौर से गुजर रहा है, जिसमें के.रि.पु. बल को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

"भारत का 2003 में सुरक्षा परिदृश्य - और उसके लिए के.रि.पु. बल की तैयारी विषय पर बोलते हुए इंस्टीट्यूट आफ डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसेस के निदेशक

एयर कमाडोर श्री जसजीत सिंह ने कहा कि उभरती सुरक्षा परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए के.रि.पु.बल को भविष्य के लिए एक दीर्घकालीन सुरक्षा रणनीति तैयार करनी चाहिए।

सम्मेलन के दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए बल के पूर्व महानिदेशक श्री एस. सुब्रह्मण्यम ने कहा कि चूंकि आगे हमें और भी जटिल सुरक्षा समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, अतः यह हमारे हित में होगा कि हम पहले से ही उसके लिए स्वयं को तैयार करें। पूर्व में के.रि.पु. बल की गौरवशाली परंपराओं की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी पूरी तरह बल पर छोड़कर, उसे इसके लिए तैयार करना चाहिए। इसके लिए लक्ष्यों के निर्धारण, इस बल का पुनर्गठन, सांगठनिक ढांचे में परिवर्तन, आधुनिक उपकरण तथा पोजोटिव मैन मैनेजमेंट की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया।



बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने अतिथियों का स्वागत करने के साथ साथ उन्हें बल का परिचय भी दिया

स्टेट्समैन के पूर्व सम्पादक श्री एस. सहाय, प्रोफेसर के.आर. कमल, प्रो.सी.पी. भाम्बरी, दैनिक हिंदुस्तान के कार्यकारी सम्पादक श्री आलोक मेहता ने भी विषय के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार रखे।



एयर कमाडोर जसजीत सिंह सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

सम्मेलन के प्रारंभ में बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने उपस्थित समुदाय को विषय की जानकारी देते हुए देश के वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य और इसमें के.रि.पु. बल की भूमिका की जानकारी दी। सम्मेलन के अंत में बल के अपर महानिदेशक श्री वाई.एन. श्रीवास्तव ने कहा कि सम्मेलन में व्यक्त किये गये विचार निश्चित रूप से बल को नागरिकों की अपेक्षाओं के अनुरूप स्वयं को ढालने में मदद देगें।

*13*वें बैच के अधिकारियों की नीमच में पुनर्मिलन गोष्ठी

देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था जैसी थी वैसी ही बनी हुई है और इससे असरदार ढंग से निपटने के लिए वर्तमान तैनाती को यथावत बनाए रखा जाना चाहिये। यह हमारे उच्चाधिकारियों के लिए नेतृत्व की खुली चुनौती है। 27 जुलाई, 1998 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 13वें बैच के अधिकारियों की पुनर्मिलन गोष्ठी को संबोधित करते हुए श्री एम.एन. सभरवाल, पुलिस महानिदेशक, के.रि.पु. बल ने कहा कि "आप लोगों ने बल के त्वरित फैलाव व तैनाती से आतंकवादियों से असरदार तरीके से मुकाबला करते हुए मुंहतोड़ जवाब दिया है।

आपने 25 वर्ष की कठिन, जोखिम भरे मुश्किल हालातों में निरन्तर त्यागपूर्ण सेवा

की है, इसके लिए मैं आपको मुबारकवाद देता हूं। श्री सभरवाल, महानिदेशक ने कहा कि इस गोष्ठी का आयोजन एक स्वागत योग्य कदम है। इसके माध्यम से सभी अधिकारियों को एक साथ अपने सहयोगियों से मिलने का सुअवसर मिलता है एवं साथ ही साथ पुरानी यादें भी ताजा हो जाती हैं। इसके अलावा इस मिलने से दूसरा महत्वपूर्ण लाभ यह होगा कि जो उच्चाधिकारी अपनी सेवा पूर्ण करके जा रहे हैं और जिन्होंने इस महान बल का नेतृत्व कुशलतापूर्वक किया है, उनके अनुभव से बल को अवश्य ही लाभ होगा। उन्होंने आगे कहा कि यह गोष्ठी जो कि आपके फायदे के लिये आयोजित की गई है, इससे बल को रचनात्मक ढंग से और मजबूत बनाने में सहायता मिलेगी। साथ ही साथ यह बल की उन्नति से जुड़े अन्य पहलुओं को मजबूती प्रदान करेगी।

पुनर्मिलन सेमिनार के दूसरे दिन श्री डी.पी. सिन्हा, पु.म.नि. उत्तरी एवं स्पेशल सेक्टर ने अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि "अभी पिछले दिनों में बल पर दबाव का विस्तार एवं बोझ अत्यधिक बढ़ गया है। इसलिए यह परम आवश्यक है कि इस विषय पर सही प्रकार खोज करके इसका निराकरण किया जाए। सही प्रकार के रख-रखाव हेतु दबाव को कम करने हेतु व्यक्तिगत एवं संगठन स्तर पर उपयुक्त उपयोग खोजने होंगें। के.रि.पु. के कार्मिकों द्वारा स्वयं के रख-रखाव को दबाव के दौरान असरदार बनाने हेतु कार्य करना होगा। संगठन को भी इस दबाव को कम करने हेतु उपयुक्त तरीके अपनाने होगें। आपने कहा कि कार्मिकों एवं संगठन को भी स्वयं के रख-रखाव के द्वारा अभ्यास करके उसे उपयुक्त बनाना होगा, क्योंकि के.रि.पु. बल आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था कायम रखने हेतु प्रमुख भूमिका निभा रहा है। के.रि.पु. बल को समय-समय में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना अनिवार्य होता है। किन्तु बल का मनोबल तथा दक्षता को बनाये रखने हेतु यह अति आवश्यक है कि परिचालन को कम से कम करने के लिए उपयुक्त योजना को लागू किया जाए।



नीमच में नव आरक्षी केंद्र के प्रशासनिक भवन का उद्घाटन करते हुए महानिदेशक

सेमिनार के अन्त में उन्होंने कहा कि सरकार आपकी समस्याओं के प्रति जागरूक हैं। समस्याएं अपनी जगह विद्यमान है, क्योंकि अल्प समयावधि में परिचालन बना ही रहेगा। चूंकि हमारा बल एक परिचालन फोर्स है। इसको हमें एक चुनौती के रूप में ग्रहण करना चाहिए। सेमिनार में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों को उन्होंने मुबारकबाद देते हुए कहा कि इस कार्य के लक्ष्य को उन्नत बनाने के लिए हमें सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिए।

इसके पश्चात् श्री गोविंद गोपाल रेरी शर्मा, पु.उप.म.नि., के.रि.पु. बल नीमच ने सेमिनार में उपस्थित सभी अधिकारियों का धन्यवाद दिया।

13वें बैच के ये 33 अधिकारी 1973 में बल के परिवार में सहायक कमांडेट के रूप में शामिल हुए थे। अपनी सेवा के 25 वर्षों के बाद ये सभी अधिकारी इस समय बल में तथा प्रतिनियुक्ति पर अन्य विभागों में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर रहे हैं। इस बैच के एक अधिकारी डिप्टी कमांडेट अवतार सिंह कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए शहीद हो चुके हैं।

नीमच से प्रस्थान करने से पूर्व 28 जुलाई, 1998 को श्री एम.एन. सभरवाल, महानिदेशक; के.रि.पु. बल, ने नव आरक्षी केन्द्र के प्रशासनिक ब्लाक का शिलान्यास किया। बाद में उन्होंने सी.टी.सी.-I के तकनीकी क्षेत्र तथा आर.टी.सी.-I के क्वाटर गारद का दौरा किया। उन्होंने 4 सिगनल बटा. एवं स्टेशन अस्पताल का भी दौरा किया तथा सैनिक सम्मेलन को संबोधित किया। इस अवसर पर ब्रिगेडियर गोविंद जी मिश्रा, प्राचार्य (पु.उप.म.नि.) सी.टी.सी.-I एवं श्री नरेन्द्र कुमार अवस्थी, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल नीमच भी उपस्थित थे।

अमरनाथ यात्रा

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उनके आवास, चिकित्सा तथा अन्य प्रबंधों की भी व्यवस्था की। आतंकवादियों की धमकियों के कारण केरिपु बल कर्मियों ने यात्रियों को जम्मू से लेकर पवित्र गुफा तक और वापसी में सुरक्षा प्रदान की, अपनी यात्रा के पहले चरण में 8-10 घंटे की कठिन यात्रा के बाद पहलगाम पहुंचने पर केरिपु बल ने यात्रियों का स्वागत अपनी ओर से एक गर्म चाय के प्याले और नाश्ते के साथ किया। बल यात्रियों के लिए पहलगाम और चंदनबाड़ी में कई सूचना केंद्र स्थापित करने के साथ-साथ उन्हें यात्रा की पूरी जानकारी भी प्रदान कर रहा था। साथ ही सुरक्षा को दृष्टि में रखते हुए प्रत्येक यात्री के सामान की जांच पड़ताल का जिम्मा भी केरिपु बल के ही पास था। इस के लिए बल की महिला कर्मियों तथा श्वान दस्ते की भी सहायता ली जा रही थी। पहलगाम में प्रतिदिन औसतन 4 से 6 हजार यात्रियों की

जांच पड़ताल की गयी।

सुरक्षा के साथ-साथ इस यात्रा के दौरान केरिपु बल वृहद तौर पर सिविक एक्शन कार्य में भी जुटा रहा। बल के डाक्टरों की एक टीम तथा पहलगाम और चंदनबाड़ी में दो दस बिस्तरों वाले अस्पताल रात-दिन यात्रियों की सेवा में जुटे रहे। साथ ही यात्रियों की सुविधा के लिए विभिन्न केंद्रों के बीच एक एम्बुलैंस भी बराबर गतिवान थी। इन चिकित्सा केंद्रों में लगभग 6 हजार यात्रियों को निशुल्क चिकित्सा सुविधा प्रदान की गयी।

स्थानीय प्रशासन को व्यवस्था बनाए रखने के लिए मदद देने की दृष्टि से बल ने तम्बुओं में आवास का भी प्रबंध किया। जिसमें लगभग 700 यात्रियों ने प्रतिदिन विश्राम किया। बल ने उन्हें कम्बल तथा गद्दे भी प्रदान किये। यात्रा शुरू करने से पूर्व बल ने यात्रियों को सुबह की चाय भी उपलब्ध करायी। उनकी सुरक्षा के लिए पहलगाम की तरफ आने वाले सभी मार्ग सील कर दिये गये थे। अमरनाथ यात्रा के दौरान बल की लगभग 16 कम्पनियों को तैनात किया गया था।

यात्रा के दौरान कार्यरत विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों के बीच समन्वय स्थापित करने का काम भी केरिपु बल अधिकारियों ने कुशलतापूर्वक किया।

माह जुलाई, 1998 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह जुलाई, '98 में मृत्यु को प्राप्त हुए। केरिपु बल समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हैं।

कांस्टेबल चंद्रशेखर (ग्रुप केन्द्र इलाहाबाद), है.कां. सोम प्रकाश मिश्रा (19 बटा.), बारबर नंद किशोर शर्मा (35 बटा.), कां. पी.सी.के. पुलैया (5 बटा.), सफाई कर्मचारी अशोक कुमार (123 बटा.), कां. बिगुलर शेर बहादुर (ग्रुप केन्द्र, लखनऊ), ला. नायक गंधर्व सिंह (111 बटा.), कां. बिगुलर बनवारी लाल (3 बटा.), कां. यू.के. चक्रवर्ती (10 बटा.), ला. नायक धरमबीर सिंह (71 बटा.), है. कां. के.पी. हब्बास (99 आर.ए.एफ. बटा.), है. कां. आई.एस. दुजुर (ग्रु.के. रंगारेड्डी), मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. पी.सी. दूबे (ग्रुप केन्द्र नागपुर), उ.नि. खड़क सिंह (आर. टी.सी.-2), कां. मोची प्रेम नाथ (82 बटा.), है.कां. प्रकाश चंद (132 बटा.), है.कां. मारियास खालको 9 बटा.), है.कां. इंदर देव सिंह (65 बटा.), नि. (म.) ए.सी. जोसफ (ग्रुप केन्द्र गांधीनगर), है.कां. रस बिहारी तिवारी (12 बटा.), है.कां. कमल कांत यादव (12 बटा.).ला. लायक विजयन सी.डी. (12 बटा.), कां. मनिंदर सिंह (12 बटा.), कां. ए.ई. मोहन दासन (12 बटा.). कां. जी. राजशेखरन (12 बटा.), कां. एस. रमेश (12 बटा.), कां. प्रह्लाद सैनी (12 बटा.), कां. मोहन सिंह (ग्रुप केंन्द्र-1 अजमेर) तथा कां. अमरजीत सिंह (86 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह अप्रैल, '98 में 117 बटा.

के कां. एम.एल. नोल कुमार, मई, ’98 में 69 बटा. के हे.कां. सूरजभान, तथा 77 बटा. के कां. बी. भरत कुमार, जून ’98 में 92 बटा. के कां. श्याम नारायण ओझा 33 बटा. के हे. कां. बोधराज, 85 बटा. के कां. ए. अशोक कुमार, 116 बटा. के कां. एस. ठाकुरैया, 4 बटा. के कांस्टेबल कशमीर सिंह तथा 128 बटा. के कां. पोगला सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

आलू की आत्मकथा

- श्योनाथ सिंह, हिन्दी अधिकारी

आज मुझे कौन नहीं जानता? सब्जियों का सिरमौर हूँ मैं। लेकिन एक समय वह भी था जब लोग मुझे छूने से भी घबराते थे। वे दिन याद आते हैं तो मन रो उठता है। क्या-क्या नहीं सहा मैंने। दुःखों से भरी है मेरी कहानी। फिर भी मैंने कभी हिम्मत नहीं हारी बस, इसी का मीठा फल आज मुझे मिल रहा है।

मैं सुदूर दक्षिण अमेरिका में पैदा हुआ। पेरू और बोलीविया में प्राचीनकाल से मेरी खेती की जा रही थी। वहां के लोग हजारों साल से मुझे प्यार से उगा रहे थे। सन् 1492 में कोलंबस ने नई दुनिया की खोज की। जब कोलंबस पूरू पहुंचा तो उसकी नजर मुझ पर पड़ी। मुझे देखते ही वह चकित रह गया। मैं जमीन के भीतर पैदा होता हूँ ना, बस इसी बात से उसे आश्चर्य हुआ था शकरकद को वहां लोग “बटाटा” कहते थे। मैं भी कंद ही था, इसलिए मुझे “पटाटा” कहने लगे।

फिर मेरी मातृभूमि पर स्पेन के निवासियों ने कब्जा कर लिया। पेरू में स्पेनी सेना के विजयी सेनापति फ्रैंसिस्को पिजारो का एक पादरी मुझे सन् 1534 में स्पेन ले गया। मुझे अपनी जन्मभूमि की याद बहुत सताती थी लेकिन क्या करता। मन मसोस कर रहा जाता था। सन् 1565 में सन जॉन हाकिंस मुझे आयरलैण्ड, फिर जर्मनी और उसके बाद फ्रांस ले गये। अंग्रेजों ने अपनी अटपटी जुबान में मुझे “पटाटा” के बदले “पोटेटो” कहना शुरू कर दिया। मिट्टी के भीतरी पैदा होने के कारण यूरोप के लोगों ने मुझे “ईड एपिल” भी कहना शुरू किया था। इसका अर्थ है “मिट्टी का सेब” भला फ्रांसीसी लोग क्यों पीछे रहते, वे भी मुझे “पोमे द तेरे” अर्थात् मिट्टी का सेब कहने लगे।

लेकिन, नाम से क्या होता। कहां सेब की वह शान-शौकत और कहां मेरी दुर्गति। क्या-क्या दोष नहीं मढ़े मेरे सिर पर जहां जाता दुत्कार दिया जाता। कोई कहता इसको खाने से बीमारी हो जाती है तो कोई कहता बाइबिल में इसका नाम ही नहीं है। इसी कारण 1728 में स्काटलैण्ड में मेरी खेती पर पाबंदी लगा दी गई। बस यों समझो जितने मुंह उतनी बातें । मैं भला किस-किस का मुंह बंद करता? कोई खाता तो खुद

हो मुंह बंद हो जाता। तुम सोच सकते हो पेरू में उतने लाड़ प्यार से पला मैं, यहां कितने दुःख झेलता रहा।

लेकिन दुनिया में नेक लोगों की कमी नहीं है। जर्मनी के सम्राट फ्रेडरिक ने मुझे अपने बच्चों की तरह प्यार किया। सन् 1744 में उसने चारों ओर घोषणा कर दी कि जो किसान आलू नहीं बोएगा उसके नाक-कान काट लिए जाएंगे। लड़ाई के दिन थे। अनाज की कमी पड़ रही थी। ऐसे कठिन समय में सम्राट ने मेरा बीज मुफ्त बंटवाया। लेकिन हाय री किस्मत। लोगों ने वह भी लौटा दिया। कहने लगे इसमें तो कोई स्वाद ही नहीं। मैं पड़ा-पड़ा अपने भाग्य पर रोता रहा। उधर इंग्लैंण्ड के लोग भी मेरी जान के पीछे पड़े थे। एक बार वहां की संसद के चुनाव चल रहे थे । एक नेताजी ने चुनाव जीतने के लिए नारा लगाया-आलू की खेती नहीं चलेगी।

इतना विरोध होने पर भी फ्रांस में एक आदमी था जिसने मुझे मुंह लगाया। उसका नाम था- पारमेतियर। लड़ाई में जर्मनी की फौज ने पकड़ कर उसे जेल में ठूंस दिया था। कैदी को क्या देते? बस, आलू खाने को दिया। मगर परमेंतियर को मैं बहुत पसंद आया। इतना पसंद कि जेल से छूटने के बाद उसने मेरी खेती शुरू कर दी। लेकिन, लोगों ने मुझे फिर भी मुँह नहीं लगाया। भला हो फ्रांस के राजा लुई सोलहवें का उन्होंने मेरी बहुत मदद की और स्नेह दिया। ऐसी-ऐसी दावतें उन्होंने दी जिनमें हर व्यंजन मेरा ही बनाया जाता। वे दावतों में बड़े नामी-गिरामी लोगों को आमंत्रित करते। बैंजामिन फ्रैंकलिन और लेवोएजियर जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिकों को भी उन्होंने मेरी दावत दी। फिर भी लोगों ने मुझे नहीं अपनाया। तब राजा साहब ने बहुत चतुर चाल चली। पेरिस शहर के बाहर एक खेत में उन्होंने मेरा बीज बो दिया। जब मेरी फसल तैयार हो गई तो दिन में उन्होंने पहरे पर सिपाही बैठा दिए। रात में उन्हें हटा लिया जाता था। लोग इस चाल की चपेट में आ गए। उन्होंने सोचा, जरूर यहां राजा साहब ने कोई कीमती और खास चीज लगाई है। रातों में चुपके-चुपके आकर लोग मुझे चुरा कर ले जाने लगे। बस इसी तरह चुराते-खाते में उनके मुंह लग गया और सारे फ्रांस में फैल गया। रानी एंतोइने ने भी मुझ पर बहुत कृपा की। उन्होंने मेरे फूल अपने जूड़े में लगा लिए। राजा-रानी की देखा-देखी और लोग भी मुझे चाहने लगे। फिर तो उन्हें मेरा स्वाद ऐसा भाया कि हर किसान मुझे उगाने लगा। फ्रांस के विश्व प्रसिद्ध चित्रकार वान गॉग ने अप्रैल 1885 में अपना प्रख्यात चित्र "आलू खाते लोग" बना कर मुझे उगाने-खाने वालों को अमर बना दिया।

यूरोप भर में मेरी खेती होने लगी। आयरलैण्ड के लोगों ने आगे बढ़कर मुझे गले लगाया। वहां तो कहावत ही बन गई कि "एक आलू खाओ, एक छीलो, एक मुट्ठी में और नजर चोरी आलू पर रहे।" मैं वहां खूब फूला-फला। इसी बीच क्रामवैल ने आयरलैण्ड पर हमला कर दिया। उसके सैनिकों ने गांव-गांव में मेरी फसल रौंद डाली। उन्होंने सोचा फसल रौंद कर वे आयरलैण्ड के निवासियों को भूख से तड़पा देंगे। लेकिन, उन्हें क्या पता था कि फसल रौंदने के बाद भी मैं जमीन में सही-सलामत रहूंगा। इस तरह मैंने आयरलैण्ड के अपने चहेते लोगों की जान बचाई। 1845 में मैं

बीमार पड़ा जिससे वहां अकाल पड़ गया। लाखों लोगों की जानें गइ। उधर इंग्लैण्ड में लोग मुझे पसंद करने लगे। फेरी वाले गलियों में आवाज लगाने लगे – "उबले आलू ले लो"।

सन् 1978 में जर्मनी और आस्ट्रिया के बीच एक भीषण युद्ध छिड़ा। इसे "आलू युद्ध" कहा गया। इस युद्ध में रसद की कमी पड़ने पर दोनों ओर की सेनाओं ने एक-दूसरे के देश का आलू खत्म कर दिया था।

सत्रहवीं सदी में पुर्तगालियों के साथ मैं भारत पहुंचा। यहां की जलवायु मुझे बहुत रास आई और जल्दी ही मेरी फसल लहलहा उठी। अजमेर में सन् 1615 में सर थामस रो को मेरी शानदार दावत दी गई थी। यहां कंद की फसलें संस्कृत में "आलू" कहलाती थी सो मुझे "आलू" कहा जाने लगा। एक युवा मेजर यंग ने मुझे सुरम्य शैल-शिखरों तक पहुंचा दिया। पिछली सदी में मेजर यंग मसूरी की पहाड़ियों में चढ़ा और वहां उसने मेरा बीज बो दिया । ठण्ड मुझे बहुत पसंद है, इसलिए वहां मैं खूब फलता-फूलता चला गया वहां से मैं तिब्बत पहुंचा।

आज मैं दुनिया के हर कोने में फैल चुका हूं। राजा से लेकर रंक तक सभी की थाली में मुझे बराबर सम्मान मिल रहा है। फिर भी मैं अपने संघर्ष के दिन भूला नहीं हूं। यह सदा याद रखना चाहिए कि सब्र का फल बहुत मीठा होता है। आज दुनिया के 130 देशों में मेरी खेती की जा रही है।

लोग अपने मोटापे का दोष मेरे सिर पर मढ़ देते हैं। यह देखकर मुझे बड़ा दुःख होता है। अगर ऐसा होता तो आयरलैण्ड और पौलेण्ड के लोग दुनिया में सबसे मोटे होते। वे मेरे सबसे अधिक शौकीन हैं। सारे यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में लोग मेरा भरपेट आहार कर रहे हैं और यहां मुझ पर आरोप लगाया जा रहा है कि मैं मोटापा बढ़ा रहा हूं।

सच मानों तो मैं पोषण गुणों में अनाजों से पीछे नहीं हूं। मेरे 100 ग्राम में 1.6 ग्राम बढ़िया प्रोटीन, 18-22 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 0.1 ग्राम चिकनाई, 9.7 मिलीग्राम लोहा 10 मिलीग्राम कैल्शियम और पर्याप्त मात्रा में विटामिन "ए", "बी", "सी" होते हैं। मेरा आधा किलोग्राम आहार कोई करे तो विटामिन-सी की दिन भर की जरूरत पूरी हो सकती है। कई वैज्ञानिकों ने यहां तक कहा है कि एक दिन में कोई अगर मेरा तीन किलो आहार करे तो उसकी दैनिक प्रोटीन और शक्ति की आवश्यकता पूरी हो जाती है।

अब बुढ़ापे में "बेढ़ब" जी को कौन बताता कि मैं भी कोई मामूली आहार नहीं हूं बल्कि पोषक तत्वों से भरपूर हूं। वरना वे क्यों लिखते :

बाद मरने के मेरे कब्र पर आलू बोना हश्र तक यह मेरे ब्रेकफास्ट के सामां होंगे,
उम्र सारी तो कटी घिसते कलम ए बेढब आखिरी वक्त में क्या खाक पहलवां होंगे।

कविताएं

दक्षता

व्यवहार आचरण में आ जाओगे,
दक्षता पा जाओगे।
सामाजिक जीवन में शिष्टाचार आ जायेगा,
आचरण में निखार छा जायेगा।
अपने कर्तव्य को समझ जाओगे,
अपने मित्रों के और करीब आओगे।
बुद्धिमान परिश्रम व नवीनता अपनाओगे,
सहास, आत्म विश्वास व सहयोग के करीब आओगे।
अपने छोटों के प्रति सहानुभूति दर्शाओगे,
अधिक सम्मान पाओगे।
सम्पन्नता, जिम्मेदारी व विश्वास के करीब आओगे,
सच्चे मायने में मानव कहलाओगे।
मानव के कल्याण व सुरक्षा में रूची लीजिए,
व्यवहारिक ज्ञान का अध्ययन कीजिए।
कार्य निष्पादन में दक्षता हासिल कीजिए,
समझदारी से शीघ्र निर्णय लीजिए।
जब चुनौतियों को समझ जाओगे,
प्रशासन में योग्यता के धनी कहलाओगे।
ऐसे उदाहरण प्रस्तुत कर जाओगे,
उंचे दर्जे की निष्ठा पाओगे।
नवीन तकनीकी प्रबन्ध का प्रयोग कीजिए,
प्रशिक्षण, स्वास्थ्य व खेल में रूचि लीजिए।
प्रभावी कमाण्ड व नियन्त्रण सुनिश्चित कीजिए,
आत्म विश्वास व ईमानदारी में रूचि लीजिए।
दक्षता पहचानी जायगी,
बात कलम की मानी जाएगी।
जब बुद्धिमानी, व्यवहार, नवीनता में रूचि आ जायेगी,

जीवन में चारों ओर दक्षता से खुशहाली छा जायेगी।

मीना राम यादव, सूबेदार मेजर
सी.टी.सी.-*1*, केरिपुबल, नीमच

पैंतरेबाजी

जब काम नहीं होता या कम होता है,
जब काम का उचित मुआवजा नहीं मिलता।
जब हिकारत की नजरों से काम देखा जाता है,
जब हिम्मत बढ़ाने वाला कोई नहीं होता।
जब चारों तरफ से विरोध होने लगता है,
जब अपने आत्म सम्मान को ठेस लगती है।
जब आदमी अपने कार्य से घृणा करने लगता है,
जब व्यवस्था में कहीं कुछ बिखराव आने लगता है।
तब एक आक्रोश पैदा होता है,
पैंतरेबाजी करने की कला आ जाती है।
कुंठा ग्रस्त हो जाता है,
भीरू हो जाता है वह।
जो भीतर से और बाहर से कायर हो,
जो चापलूसी और आगे पीछे चक्कर काटता हो।
वह अपनी अस्मिता खो देता है,
अपनी कीमत भी खो देता है।
और अस्तित्वहीन होकर वह,
बेलगाम, बेतरतीब, बेसुरा बदहवास।
अर्थहीन, अनमयस्क, आवारा,
घूमता रहता है, रचना विहिन।

डी.डी. पंत, द्वितीय कमान अधिकारी,
ग्रुप केन्द्र, हैदराबाद



केरिपु बल द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान करते बल के कार्मिक

रजि. न. 4767/87



अधिकारियों के पुनर्मिलन समारोह के दौरान 13वें बैच के अधिकारियों के साथ महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल एवं महानिदेशक उत्तरी क्षेत्र श्री डी.पी. सिन्हा



पुनर्मिलन समारोह के दौरान महानिदेशक महोदय ने अधिकारियों को स्मृति चिह्न भी भेंट किये

खंड - 12 अंक - 6

30 सितम्बर, 1998 8 आश्विन, शक 1920

सी.आर.पी.एफ. समाचार



हिंदी दिवस
पर
विशेष

संकल्प

राजभाषा के संबंधित संसद द्वारा पारित निम्नलिखित संकल्प आम जानकारी के लिए प्रस्तुत है :–

जबकि संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिन्दी भाषा की प्रसार–वृद्धि करना और उसका विकास करना ताकि वह भारत के समाज तथा संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, संघ का कर्तव्य है, यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उत्तरोत्तर इसके प्रयोग के हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किये जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद की दोनों सभाओं के पटल पर रखी जाएगी, और सब राज्य सरकारों को भेजी जायेगी।

जबकि संविधान को आठवीं अनुसूची में हिन्दी के अतिरिक्त भारत की 14 मुख्य भाषाओं का उल्लेख किया गया है, और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाय किये जाने चाहिए।

यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी के साथ–साथ इन सब भाषाओं के समन्वित विकास के हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जायेगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा, ताकि वे शीघ्र समृद्ध हों और आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बनें।

जबकि एकता की भावना के संवर्धन तथा देश के विभिन्न भागों में जनता में संचार की सुविधा के हेतु यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किये त्रैभाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णतः कार्यान्वित करने के लिए प्रभावी उपाय किये जाने चाहिए।

यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त आधुनिक भारतीय भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हुए और अहिन्दी भाषी क्षेत्र में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी के अध्ययन के लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबंध किया जाना चाहिए।

और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों के लोगों के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण परित्राण किया जाए।

यह सभा संकल्प करती है :–

(क) कि उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़ कर जिनके लिए ऐसी किसी सेवा

अथवा पद के कर्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन के हेतु केवल अंग्रेजी अथवा केवल हिन्दी अथवा दोनों जैसी कि स्थिति हो, का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए संघ सेवाओं अथवा पदों के लिए भर्ती करने के हेतु उम्मीदवारों के चयन के समय हिन्दी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यतः अपेक्षित होगा, और

(ख) कि परीक्षाओं की भावी योजना, प्रक्रिया सम्बन्धी पहलुओं एवं समय के विषय में संघ लोक आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्चतर केन्द्रीय सेवाओं सम्बन्धी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी का वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमति होगी।

(सं. 5/8/85–राजभाषा, भारत सरकार, गृह मंत्रालय नई दिल्ली 1, दिनांक 18 जनवरी, 1968, 28 पौष, 1889)

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–12 अंक–6
30 सितम्बर, 1998

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72

कम्पोजिंग
एम्बेस्डर प्रिंटिंग प्रेस
1810/4 ज्ञानी बाजार कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली–3
दूरभाष : 4697152, 4303105

प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस
1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली–2 दूरभाष : 3262279

सांध्य रवि ने कहा, मेरा काम लेगा कौन ?
रह गया सुनकर, सारा जगत निरुत्तर मौन ।
एक माटी के दिये ने, कहा नम्रता के साथ ।
जितना बन सकेगा, मैं करूंगा नाथ ।।

–रवीन्द्र नाथ टैगोर

इस अंक में

महानिदेशक का राजभाषा संदेश

हिंदी में कार्य करने के लिए पुरस्कार

आवश्यकता अपना गौरव पहचानने की है

साढ़ी सोणी हिंदी

नव वर्ष – विक्रमी सम्वत चेत्रा शुक्ल प्रतिपक्ष का महत्व

हिंदी के बारे में ऐतिहासिक तथ्य

कविताएं

राजभाषा नियम

प्रथम आवरण :– हिंदी में श्रेष्ठ कार्य के लिए गृह सचिव से शील्ड प्राप्त करते हुए महानिरीक्षक (संभरण एवं संचार) श्री एस.एम. कैरे ।

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक



महानिदेशक का राजभाषा सन्देश

मुझे खुशी है कि 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं, संगोष्ठियों व कार्यशालाओं के माध्यम से सरकारी काम–काज में राजभाषा प्रयोग बढ़ाने हेतु, कार्मिकों को उत्साहित करने की कोशिश की जा रही है । देश के इतिहास में 14 सितम्बर का एक विशेष महत्व है, क्योंकि इसी दिन सन् 1949 में संविधान सभा ने हिन्दी को देश की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की थी । आज राजभाषा विभाग, केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, हिन्दी अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा अधिनियम व नियम, हिन्दी अधिकारी, हिन्दी सप्ताह, हिन्दी दिवस, हिन्दी गोष्ठियां सभी कुछ हैं परन्तु इन पचास वर्षों में जो प्रगति होनी चाहिए थी, वह नहीं हो पाई । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जिस प्रकार सभी फिरंगी ध्वजों को हटाकर सभी जगह तिरंगे ध्वज फहरा दिए गए थे, उसी प्रकार सरकारी काम–काज में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बंद कर राजभाषा हिन्दी का प्रयोग लागू हो जाना चाहिए था जो नहीं हुआ । बल्कि यह निर्णय लिया गया कि राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए और अधिक प्रयास किए जाएं और जब तक राजभाषा हिन्दी, अंग्रेजी का पूरी तरह स्थान नहीं ले लेती तब तक अंग्रेजी का सरकारी काम–काज में सहभाषा के रूप में प्रयोग जारी रखा जाए । यह स्थिति अभी तक बनी हुई है और यदि इसमें परिवर्तन लाना है तो हम सभी को अपने–अपने स्तर पर सघन प्रयास कर हर क्षेत्र में हिन्दी प्रयोग बढ़ाना होगा, तभी हिन्दी पूरी तरह अंग्रेजी का स्थान ले सकती है ।

जहां तक अपने बल में काम–काज में हिन्दी प्रयोग की बात है, हम जिस प्रकार राष्ट्र सुरक्षा में आगे हैं उसी तरह इस कार्य में भी आगे होना चाहिए । हाल ही में कुछ दिन पूर्व, दिल्ली में आयोजित एक समारोह में गृह सचिव ने उन संगठनों को राजभाषा शील्ड प्रदान की थी, जिन्होंने वर्ष में राजभाषा हिन्दी प्रयोग बढ़ाने में

सर्वोत्तम कार्य किए थे। इस समारोह में के.रि.पु.बल को तृतीय स्थान पाने के लिए राजभाषा शील्ड मिली थी, जबकि इससे पूर्व के.रि.पु.बल को प्रथम स्थान के लिए राजभाषा शील्ड मिल चुकी है। मैं चाहूँगा कि भविष्य में पुनः प्रथम स्थान प्राप्त किया जाए और उसके लिए जिन अधिकारियों के पास हिन्दी स्टेनोग्राफर हैं वे हिन्दी में डिक्टेशन देने की आदत डालें। जो कर्मचारी हिन्दी में प्रवीण हैं वे अपना सारा काम–काज केवल हिंदी में निपटाएं।

आज कल के सभी कार्यालयों में हिन्दी जानने वाले, व हिन्दी में काम करने के लिए सभी सुविधाएं मौजूद हैं, नियमों में हिन्दी प्रयोग की खुली छूट दी गई है, अतः मैं चाहूँगा कि कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधान इनका बेहतर इस्तेमाल करते हुए सरकारी काम–काज में राजभाषा प्रयोग बढ़ाने पर बल देंगे और हिन्दी के उत्थान के लिए क्रान्ति लाएंगे।

इस शुभ अवसर पर बल के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को मेरी शुभकामनाएं।

महेन्द्र सभरवाल

(एम.एन. सभरवाल)
महानिदेशक

हिन्दी में कार्य करने के लिए पुरस्कार



राजधानी के विज्ञान भवन में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित विभिन्न केंद्रीय पुलिस संगठनों के प्रमुख

वर्ष 1994–95 के दौरान सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए के.रि.पु.बल को गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड प्रोत्साहन योजना के तहत तृतीय स्थान के पुरस्कार हेतु चुना गया तथा दिनांक 17.7.98 विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित समारोह में के.रि.पु.बल को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई तथा श्री सी.जे.एस. हीरा कमान्डेन्ट व निरीक्षक (मं.) राम व्यास राय को प्रशिस्ति पत्र प्रदान किए गए। श्री एस. एम. कैरे, पुलिस महानिरीक्षक ने शील्ड ग्रहण की।

वर्ष 1996 के दौरान सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन तथा सर्वोत्तम निष्पादन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति हैदराबाद द्वारा ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, हैदराबाद को रोलिंग शील्ड तथा नराकास कलकत्ता द्वारा पूर्वी सैक्टर मुख्यालय कलकत्ता को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

वर्ष 1996–97 के दौरान सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल इम्फाल (मणिपुर) को क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र) द्वारा प्रथम स्थान के पुरस्कार हेतु चयन किया गया तथा रांची स्थित "मयूरी प्रेक्षागृह" में दिनांक 27 मार्च '98 को आयोजित राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद नई दिल्ली की अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में श्री टी.आर. अरोड़ा, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक को अधिकारी पुरस्कार के लिए चयन किया गया तथा नकद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इसी प्रकार वर्ष 1997 की 32वीं अखिल भारतीय हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त

करने पर निरीक्षक (मं.) राम व्यास राय को 201/- रु. का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

केन्द्रीय हिन्दी अनुवाद ब्यूरो कलकत्ता द्वारा दिनांक 1.7.97 से 30.9.97 तक चलाए गए त्रैमासिक हिन्दी अनुवाद प्रशिक्षण में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक) तेजवीर सिंह ढाका ने स्वर्ण पदक अर्जित किया।

वर्ष 1996–97 के दौरान सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन् तथा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की उत्तरोतर वृद्धि में सक्रिय योगदान के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नीमच (म.प्र.) द्वारा ग्रुप केन्द्र के.रि.पु.बल नीमच को चल वैजयंती प्रदान की गई।

वर्ष 1995–96 के दौरान सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय अनुसंधान कार्यालय (उत्तर) द्वारा ग्रुप केन्द्र बनतलाब (जम्मू) को प्रथम स्थान के पुरस्कार के लिए चयन किया गया तथा दिनांक 23/12/97 को राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ (उ.प्र.) द्वारा वर्ष 1997 के दौरान आयोजित की गई हिन्दी कार्यशाला में शामिल हुए अधिकारियों/कर्मचारियों के सराहनीय प्रयासों के प्रति मध्य सैक्टर मुख्यालय केरिपुबल लखनऊ को दिनांक 2.2.98 को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। प्रमाण पत्र श्री प्रीतम सिंह, अपर पुलिस उप-महानिरीक्षक (प्रशा.) ने ग्रहण किया।

ध्यान रहे !

कार्यालय से जारी होने वाले सभी परिपत्र, आदेश, ज्ञापन आदि द्विभाषी - अर्थात् हिंदी और अंग्रेजी में होने चाहिए/

* * *

ये सभी द्विभाषी जारी होते हैं यह देखने की जिम्मेदारी उन पर हस्ताक्षर करने वालों की है/

* * *

कहीं से भी प्राप्त हिंदी पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिए जाने चाहिए/

* * *

जिस पत्र पर हिंदी में हस्ताक्षर हों, उसका उत्तर भी हिंदी में ही दिया जाना चाहिए/

आवश्यकता अपना गौरव पहचानने की है।

एस.एन. सिंह, हिन्दी अधिकारी, महानिदेशालय

कुछ समय पूर्व समाचार में छपा था कि फेडरल ब्यरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन भारत में भी अपना कार्यालय खोलने जा रहा है ताकि पेटेन्ट कानून का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई कर गिरफ्तार किया जा सके और संयुक्त राज्य अमेरिका भेजकर मुकदमा चलाया जा सके । चन्द माह शेष है कि भारत में आयुर्वेदिक नुस्खे, वैद्य की दवाएं, घरेलू उपचार जैसे नीम, तुलसी, हल्दी आदि का प्रयोग करने वाले व्यक्ति, संस्था आदि को अमेरिका के सिक्योरिटी एजेंट भारत में गिरफ्तार करेंगे और अमेरिका ले जाएंगे। इस कार्य में भारतीय पुलिस उनकी मदद करने को बाध्य होगी। स्थिति स्पष्ट है कि अभी तक हम अपने पैरों पर खड़ा होने का आत्म विश्वास जगा नहीं पाए हैं।

परमाणु विस्फोट के बाद अमेरिका द्वारा जो प्रतिक्रियाएं की गई हैं, उनसे उक्त तथ्य सही साबित होते हैं। क्या आज भारत के नागरिकों में अपनी सम्प्रभुता अपनी सांस्कृतिक धरोहर और बौद्धिक सम्पदा पर इन विदेशी आक्रमणों को रोकने की रूचि है ? क्या ऐसा कदम उठाने की इच्छा है ? और सबसे बड़ी बात है कि क्या वैधानिक रूप से हम ऐसा कर पाने की पात्रता और स्थिति को उपलब्ध हो सकेंगे?

भारतीय भाषाएं तो पहले से ही अंग्रेजी की बंधुआ है, लाख कोशिशें के बाद हम उनके हाथों को नहीं खोल पा रहे हैं। अब सांस्कृतिक धरोहर पर भी हमला हो रहा है। क्या सचिवालय व अन्य सम्बद्ध व अधीनस्थ कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारी इस देश की संस्कृति को समझते नहीं, संस्कृति की गरिमा व महत्ता को मानते नहीं तो वे हमारी संप्रभुता की रक्षा क्या करेंगे? अन्यथा क्या कारण है कि "योग" हमारे देश से जाकर फिर विलायत से लौटा है योगा बनकर, मेरा राम और अशोक भी विलायत की हवा से रामा व अशोका बनकर रह गए। माता-पिता,भाई-बहिन, चाचा-चाची, ताई-ताऊ सब अंकल, अंटी, मम्मा, डैड में सिमट कर रह गए हैं। ब्रदर इन-लॉ, सिस्टर इन-लॉ आदि किसका प्रतीक है, भारतीय संस्कृति के तीन-तीन प्रतीकों में से ये शब्द किसके लिए सम्बोधित हैं, समझ से परे की बातें हैं।

अपने ही घर में आज हिन्दी का जो हाल है, सबको पता है। जिस अपमान और उपेक्षा के दौर से आज हिन्दी गजर रही है उसकी मिसाल स्वयं दूरदर्शन और रेडियो हैं। कहने को बताया जाता है कि जबसे दूरदर्शन आया है, हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। सच्चाई तो यह है कि हिन्दी के मनोरंजन कार्यक्रम देखने वालों की संख्या बढ़ी है, किन्तु सवाल है उनमें से कितने व्यक्ति लिखाई, पढ़ाई व परीक्षा में हिन्दी के माध्यम के रूप में अपना रहे हैं ? अभी भी परीक्षा में अंग्रेजी माध्यम अपनाने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है। साफ है कि प्रोत्साहन व प्रेरणा देने की जितनी कोशिशें

हो रही हैं या तो वे ऊपरी मन से हैं, केवल दिखावा है या मात्र सरकारी औपचारिकताएं हैं। यह तिरस्कार और हिकारत उसे उन लोगों से मिल रही है जो उसके अपने हैं। उसे उसकी जमीन पर बेगाना बनाने की साजिशें हर पल जारी हैं।

देश की जनता, देश की भाषा को नहीं समझें, देश की भाषा में काम करना तौहीन समझे तो वह दिन दूर नहीं रह गया है कि जब हमारी युवा पीढ़ी अपनी भाषा, संस्कृति से भटककर पश्चिमी सभ्यता के तीव्र बहाव बह जाएगी। भिन्न-भिन्न भाषाओं व संस्कृतियों को जोड़ने का काम राजभाषा/संपर्क भाषा का होता है। जितनी हमारी राजभाषा/संपर्क भाषा संशक्त होगी उतनी ही भाषाए, धर्म व संस्कृतियां एक दूसरे के नजदीक आएगी, उनमें सामंजस्य बढ़ेगा, देश की एकता व अखण्डता मजबूत होगी। विदेशी भाषा में इतनी अभिव्यक्ति व तादात्म्य पैदा करने की शक्ति कभी हो ही नहीं सकती कि भिन्न-भिन्न भाषाओं, धर्मों व संस्कृतियों के बीच कड़ी का काम कर सके । अर्थात् सवाल ज्ञान विज्ञान का हो या देश की एकता व अखण्डता का, विदेशी भाषा की भूमिका मात्र एक खिड़की की हो सकती है, दरवाजे की नहीं।

सच है कि दूसरे का घर हमेशा सुन्दर दिखाई देता है, कारण कि हमारा ध्यान दूसरों पर रहता है, अपने पर नहीं। आकर्षण हमेशा दूसरों के प्रति रहता है, स्वयं के प्रति नहीं, आंखें दूसरों को ही देख पाती हैं, अपने आप को नहीं, कान दूसरों को ही सुना करते हैं, अपने को नहीं सुनते, कारण कि हमें अपने बारे में पता कुछ भी नहीं। हमारी तीव्र इच्छा रहती है कि अधिक से अधिक लोग दूसरे के बारे में जानें, हम लोकप्रिय व प्रसिद्ध हों, पर हम अपने आपको जानने की कोशिश कभी नहीं करते । शताब्दियों से चली आ रही हमारी परम्पराएं, ज्ञान, संस्कृति व भाषाएं कितनी मूल्यवान, अपार शक्ति व अद्भुत संभावनाएं छिपाए हुए हैं, हमें इसकी खबर नहीं, बिल्कुल अनभिज्ञ हैं।

जब तक पाश्चात्य संस्कृति में लिपटते जा रहे हैं, नवयुवक का मोहभंग नहीं होगा, न राष्ट्र के चरित्र का निर्माण होगा व आदर्शों की स्थापना । एक समय था जब अपने देश की संस्कृति जिधर भी नजर दौड़ाएं सब ओर तपोमयी थी, भारत भूमि त्यागमयी, आध्यात्मिक दृष्टि वाली थी किन्तु आज इसका स्थान भौतिकता ने ले लिया है और यही कारण है कि राष्ट्र का पतन होता जा रहा है, लूटपाट, आगजनी, डकैती, राजहनी, बलात्कार, हत्याओं का दौर गर्मा रहा है। रिश्वत की परिभाषा सर्विस चार्ज हो गई है, करोड़ों का घोटाला करने की राजनीति बड़प्पन की निशानी बन गई है, डकैती, राहजनी व बलात्कार करने वाले गली-कूँचों के हीरो बन गए हैं। महिलाओं के सतीत्व की रक्षा करने वालों का सम्मान होने की जगह गोली दागी जाती है। अहिंसा के पुजारियों पर हिंसा की जाती है। आज हर देशवासी को सच्चरित्रता व नैतिकता की महत्ता विदेशी चश्मे से नहीं अपनी भाषा व संस्कृति के माध्यम से समझनी होगी बल्कि इन गुणों को अपनाना भी होगा। तभी हमारा राष्ट्र स्वस्थ, सुखी और खुशहाल हो सकेगा। सच ही कहा है कि राह से जो एक बार भटक जाता है, वह जितना ही चलता है, उतना ही अपनी मंजिल से दूर होता जाता है।

हाल ही में, भारत व पाकिस्तान दोनों देशों ने अपनी एटमी शक्ति परीक्षण के पांच-पांच व छः-छः न्यूक्लिअर विस्फोट किए। उद्देश्य जो भी रहा हो, विस्फोटों के बाद पश्चिमी देशों ने जो भी प्रतिक्रियाएं की हैं तथा दोनों के खिलाफ अमरीका सहित अन्य राष्ट्रों ने जो भी प्रतिबंध लगाए हैं इनसे स्पष्ट है कि पश्चिमी सभ्यता व ठाठ-बाठ पाने की होड़ में जिस चकाचौंध के मार्ग पर हम जा रहे थे या अभी भी जा रहे हैं, वह मार्ग हमें सच्ची प्रगति की ओर नहीं ले जाता। इन रास्तों पर चलकर हमारी संस्कृति, भाषा व समाज सभी प्रदूषित हो रहे हैं। वस्त्र व आयातित वस्तुओं व सभ्यता से प्रभावित रेडियो, टी.वी. ने हमारी सभी रिश्तों को ताक में रखकर भ्रष्टाचार व अपराधों के ऐसे गर्त में धकेल दिया है कि चारित्रिक मूल्य शून्य हो गए हैं। हम आज जैसे बीज बो रहे हैं कल को हमारी नई पीढ़ी वैसी ही फसल काटेगी। तब वह हमारे बारे में क्या सोचेंगी। आज इस बात पर चिन्तन-मनन करना और फिर आवश्यक कदम उठाना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

साढ़ी सोणी हिंदी

कित्ती सोणी भाषा, रब ने बनाई,
दिल करे बोलदा रहवां।
मुहावरे की इसमें लगाई मलाई,
पर्यायवाची, विलोम शब्द की कलई
चढ़ाई
दिल करे बोलदा रहवां।
हर दिल में हिंदी है मुस्काई,
थोड़ी खट्टी ते, थोड़ी है मिठाई।
दिल करे बोलदा रहवां।
जन-जन ने सिर-आंखो से लगाई,
तत्सम, तद्भव की है चतुराई।
दिल करे बोलदा रहवां।
बार-बार कहे "आसिफ" हिंदी साढ़ी,
है सबतों न्यारी,
शैली, लोकोक्तियां लगती सबको है प्यारी।
दिलां बीच हस-हस के हर्षाई
दिल करे बोलदा रहवां।
कित्ती सोणी भाषा रब ने बनाई।

ादेल करे बोलदा रहवां।

रचनाकर - उ.नि. (म.)
ए.एच. बेग
ग्रुप केंद्र भुवनेश्वर

नव-वर्ष

विक्रमी सम्वत् चैत्रा शुक्ल प्रतिपक्ष का महत्व

बडा है कि हम अपनी संस्कृति व परम्परा से दिन-प्रतिदिन दूर होते जा रहे हैं अन्यथा कितने लोगों को पता है कि हमारा नव-वर्ष विक्रमी सम्वत् कब शुरू होता है। प्रथम जनवरी नव वर्ष की शुरूआत का दिवस है यह सब जानते हैं, क्यों ? क्योंकि हजारों बच्चों को जन्म से ही किताबों, घर में नव वर्ष दिवस प्रथम जनवरी बताया गया है किन्तु कभी भी अपनी संस्कृति की ओर उन्मुख करने की नींव डालने की कोशिश नहीं की, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का महत्व नहीं बताया। जन्म से ही मैकाले की जीवन पद्धति व भाषा सिखाने पर जोर देते रहते हैं। प्रथम जनवरी का इतिवृत में कोई महत्व रहा है, शायद ही कोई कह पाने में समर्थ हो । किन्तु इस दिवस के आने से 15 दिन पूर्व ही बाजार सजाए जाने लगते हैं, पार्टियों के दौर शुरू हो जाते हैं, प्रथम दिवस के नाम पर क्यां नंगा नाच नहीं होता ? सभी गर्म-जोशी में होते हैं, मुबारकबाद की, "हैप्पी न्यू ईयर की।" शायद पूरे वर्ष में टेलीफोन इतने नहीं बजते होंगे जितने कि प्रथम दिवस को।

क्या हमारे पास इस महत्व का एक भी दिवस नहीं, जरूर है, हममें कमी है विश्वास, धैर्य, आश्वस्तता, अपनत्व, निजी विशेषताओं पर ध्यान न देने की अन्यथा भारतीय संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण दिवस विक्रमी सम्वत् चैत्र-शुक्ल प्रतिपदा इस तरह हर वर्ष खामोशी नहीं साधे रहता। इस दिन का कितना महत्व है, इसकी कुछ विशेषताएं/महत्व निम्न प्रकार है :-

1. ब्रह्माजी द्वारा सृष्टि की रचना तथा संवत्सरों का प्रथम दिवस ।
2. महाराजा विक्रमादित्य द्वारा विक्रमी सम्वत् का शुभारम्भ।
3. प्रभु रामचन्द्रजी का राज्याभिषेक दिवस
4. महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना।
5. देव-भगवान झेलेलाल जी का जन्म दिवस।

राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत करने वाले इस दिवस पर हम सभी अपने राष्ट्र को

सामाथ्यशाली बनाने का संकल्प लें। चैत्र शुक्ल प्रांतेपदा को नव-वर्ष के रूप में मनाएं।

भाव पुष्प

हिंदी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।

–राहुल सांकृत्यायन

* * *

यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है तो यह जनता की भाषा में ही चलाना होगा।

–काका कालेलकर

* * *

अंग्रेजी और हिन्दी को साथ-साथ रखना बाघ और बकरी को एक साथ बैठाना है।

–गंगाशरण सिंह

* * *

कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।

–महात्मा गांधी

* * *

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा।

–महादेवी वर्मा

हिंदी के बारे में ऐतिहासिक तथ्य

- हिंदी का प्रथम प्रामाणिक ग्रन्थ स्वयंभू की “पउम चरिऊ” या “पदमचरित” नाम की रामायण है।
- हिंदी का प्रथम व्याकरण “डच” भाषा में हालैण्ड निवासी श्री जानजेशुआ केटेलर ने “हिन्दुस्तानी भाषा” शीर्षक से 1685 में लिखा था।
- नागरी का टाईप सबसे पहले यूरोप में बना। सन् 1716 में एमस्टरडम में प्रकाशित चाईना इलेस्ट्रेता पुस्तक में नागरी के कुछ अक्षर पहली बार छापे गए।

- विदेशों में पहली बार हिन्दी में बाइबेल (अनुवाद के रूप में) पूर्वी जर्मनी में 1745 में हाले नगर में छपा।
- हिन्दी की पहली कहानी लेखिका राजेन्द्र बोला देव (राजेन्द्रबाला घोष) (1882-1949 ई.) थी। इनकी "कुसुम संग्रह" पुस्तक कहानी संग्रह है और "दुलाईवाली" इनकी सर्वश्रेष्ठ कहानी है।
- हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र उदंत मार्तण्ड 30 मई 1826 को कलकत्ता से निकला।
- हिन्दी प्रदेशों से छपने वाला हिन्दी का पहला अखबार "बनारस अखबार" 1845 में काशी में छपा था। इसका प्रकाशन राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द ने शुरू किया था।
- हिन्दी का पहला दैनिक समाचार "सुधावर्ष" कलकत्ता से 1854 में प्रकाशित हुआ। इसके संपादक श्याम सुन्दर सेन थे। बच्चों के लिए देश में हिन्दी में छपने वाली पहली पत्रिका "हरिशचन्द्र चंद्रिका" थी जिसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने काशी से 1874 में शुरू किया था।
- महिलाओं के लिए हिन्दी की पहली पत्रिका "बाला बंधिनी" बनारस से 1 जून 1874 को भारतेन्दु हरिशचन्द्र बाबू ने शुरू की। यह मासिक पत्रिका थी।
- भारत में पहली बार 1881 में नागरी टाइप बनाए गए।
- हिन्दी भाषी क्षेत्र से निकलने वाला पहला हिन्दी दैनिक "हिन्दोस्तान" है जो 1885 में प्रताप कालाकांकर के राजा राम पाल सिंह ने निकाला और इसके संपादक पंडित मदन मोहन मालवीय थे।
- हिन्दी की पहली विज्ञान पत्रिका "आयुर्वेद महासम्मेलन" है जो 1913 से प्रकाशित हो रही है और दूसरी पत्रिका इलाहाबाद से प्रकाशित "विज्ञान" है जो 1915 से प्रकाशित हो रही है।
- हिन्दी में पहला विश्वकोशी 1915–31 ई. में 25 खण्डों में नगेन्द्र नाथ बसु ने प्रकाशित किया।
- हिन्दी में स्नातकोत्तर कक्षाएं (एम.ए.) सर्व-प्रथम कलकत्ता विश्वविद्यालय में सन् 1948 में प्रारम्भ हुई।
- हिन्दी विषय में सर्वप्रथम शोध प्रबंध सन् 1918 में लंदन विश्वविद्यालय में जे.एन. कारपेन्टर ने जमा किया।
- भारत में सर्वप्रथम हिन्दी में एम.ए. की परीक्षा 1921 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में श्री नलिनी मोहन सान्याल ने 60 वर्ष की आयु में उत्तीर्ण की।
- हिन्दी को सबसे पहले उत्तर प्रदेश राज्य ने अक्तूबर 1947 में विधान परिषद में एक प्रस्ताव पारित कर राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की।
- भारत में पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर में 10 से 14 जनवरी 1975 को संपन्न हुआ।
- हिन्दी पत्रकारों के पहले संघ का जन्म 1940 में काशी में "काशी पत्रकार संघ" के रूप में हुआ और इसके पहले अध्यक्ष पं. कमलापति त्रिपाठी थे।

- हिन्दी भाषा पर पहला डाक टिकट प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर 10 जनवरी 1975 में जारी किया गया जिसका मूल्य 25 पैसे था तथा वह गहरे भूरे व लाल रंग में छपा था। उसमें सरस्वती जी का चित्र अंकित है।
- विदेशों में पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन मारीशस में 28 अगस्त 1976 में संपन्न हुआ जिसे द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन कहा जाता है।
- पहली बार दृष्टिहीनों के लिए हिन्दी ब्रेल आशुलिपि जुलाई 1981 में दृष्टिबाधित राष्ट्रीय संस्थान देहरादून ने तैयार किया और उसे ब्रेल विशेषज्ञों तथा भाषाविदों द्वारा स्वीकृति दी गई।
- हिन्दी को योजना के विषय के रूप में सन् 1982 में शामिल किया गया।
- हिन्दी में पहला शोध ग्रन्थ तकनीकी क्षेत्रों में प्रस्तुत करने वाले भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली के छात्र श्री श्याम रूद्र पाठक हैं, जिन्होंने 1987 में बायोगैस पर शोध कार्य किया।
- हिन्दी माध्यम से पहली बार एम.डी. की डिग्री लेने वाले डा. मुनीश्वर गुप्ता हैं जिन्होंने सन् 1987 में डिग्री प्राप्त की। उन्होंने डॉ. सरोजिनी नायडु चिकित्सा कालेज आगरा में “विकिरण चिकित्सा” पर शोध किया है।

कविताएं

यादें

उनकी यादों के तूफान बहुत
हम दिल में, दबाये बैठे हैं।
कोई चुरा न ले वो याद कहीं
जो हम याद, चुराये बैठे है।

इजहार कभी भी कर न सके,
उस राज का उनसे, हम लेकिन
पर प्यार बहुत सा उनके लिए
हम अब भी, बचाये बैठे हैं।

नित रात नये बन जाते हैं।
वो ख्वाब पुराने ख्वाबों में
अब मन्दिर बना उन यादों का
उसमें दीप जलाये बैठे है।

बुझ जाये न झंझावातो में

उनकी यादों का वो दीप कहीं
इसलिए मधुर उन यादों का
एक गीत बनाये बैठे हैं।

सिपाही अजय कुमार सिंह
43 बटालियन केरिपुबल,
ईटानगर *(*अरूणाचल प्रदेश*)*

चला संजोएं आशाएं

मेरी अन्तरमनः स्थिति,
जिसे लिए मैं चला अकेला।
बूंद-बूंद रस मिश्रण उसमे,
जैसे कुन्दन चन्दन सा,
है अनजान पथिक एक ऐसा,
जिसके आगे राह नहीं।
चला संजोएं आशाएं,
जिस पर होगी आज विजय

-स.उ.नि. *(*मं.*)* रमाकान्त त्रिपाठी
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, गांधीनगर।

स्वार्थ

आज हर आदमी स्वार्थ की दहलिज पर खड़ा नजर आता है।
नित्य अखबारों में हमारा करतूत छपा नजर आता है।
कोई पैसे तो काई धर्म के आगे मजबूर नजर आता है।
कहीं गोरखालैंड तो कहीं खालिस्तान का तीर भारत के मर्म में चभा नजर आता है।
देश तो देश नहीं कोई रोटी का टुकड़ा नजर आता हैं।
न कर्ण और न कहीं अर्जुन का पुरूषार्थ नजर आता है।
सीर्फ विधवाओं की धुली मांग और माताओं का सूना आंचल नजर आता है।
आज हमारे आगे जानवर भी सकुचाया नजर आता है।
हिंदी हैं हम हिन्दोस्तां हमारा के आगे प्रश्न चिन्ह लगा नजर आता है।

आज हर आदमी स्वार्थ की दहलीज पर खड़ा नजर आता है।

-स.उ.नि. *(*मं*)* बीरेन्द्र कुमार, *105* बटा. द्र.क.ब.

राजभाषा हिन्दी

भारत के भावों का माध्यम है हिन्दी।
लिपि जिसकी, है देवनागरी।
14 सितम्बर पावन पर्व, है इसका।
संविधान संरक्षक, है जिसका।
धारा 351 है, खाद इसकी।
राजभाषा नियम है जान जिसकी।
नियम 5 का पालन करना।
हिन्दी में ही पत्रों का उत्तर देना।
नियम 10 की अनुकम्पा से ज्ञान लेना।
हिन्दी आत्मा है भारत की, यह जान लेना।
धारा 3(3) का पालन करना।
संकल्प, आदेश, नियम द्विभाषी जारी करना।
करे कोई अपील हिन्दी में।
नियम 7 के अनुसार पड़ेगा, उत्तर देना हिन्दी में ।
“हिन्दी” एक सूत्र में बांधे।
वैर भाव, वैमनस्यता दूर भगाए।
“मनोज” का है, जगत से इतना, ही कहना।
हिन्दी को अपना कर देश को आगे बढ़ाना।

-मनोज कुमार दीक्षित, स.उ.नि. *(*मं.*)*
महानिदेशालय *(*प्रशा.*2*, कल्याण*)*

सौतन हो गई मैं

घर की मालकिन, दासी होकर,
आज तड़पती अपने घर में
अंग्रेजी रानी बन बैठी,
सेंध लगा, हिन्दी के घर में ।

भारत को बना दिया इंडेया
भारतवासी मौन रहे,
यही तमाशा देख रहे सब
मन की व्यथा को कौन कहे,
चिन्तन दर्शन बदल चुका है,
छाई पाश्चात्य सभ्यता नर-नर में
अजब तमाशा बन बैठे हम
नग्न नृत्य करती महिलाएं
बदन ढांपने में, कमसिन सी,
आधुनिक कन्या शर्माए
बॉब कटिंग में बाल कटाती
जो चुन्नी लेती थी सर में ।
जीगर तड़पता है भारत का
देख दुर्दशा हिन्दी की।
न जाने कब हालत सुधरे
मेरी प्यारी हिन्दी की।
कब आएगा वो दिवस दोस्तों
जब हिन्दी फैले घर-घर में ।
हम वतनों को जिस दिन से ही
अंग्रेजी बैरन से प्यार हुआ,
मेरी प्यारी भारती का
भारत में बंटाधार हुआ
हम भी दोषी तुम भी दोषी
जो आज स्थिति दफ्तर में ।
सजल नयन मैंने देखा है,
पीड़ित शोषित हिन्दी को।
दीन दुखी अबला जैसी,
बेचारी दुखियारी हिन्दी को।
गले लगाकर प्यार करे हम,
इस पावन से अवसर में।

निरो. (हिन्दी-अनुवादक), ग्रुप केन्द्र, कोरेपुबल
गुवाहाटी-23 (असम)

हिन्दी बोलो

जब भी बोलो हिन्दी बोलो।
मित्र सदा ही हिन्दी बोलो।
पंजाब, सिंध, गुजरात, आन्ध्रा,
तमिल, केरला और मराठा।
सभी प्रांतो ने पुकारा,
हिन्दी भाषा का नारा।
जब भी बोलो हिन्दी बोलो।
मित्र सदा ही हिन्दी बोलो।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गांगा,
द्राविड़, उत्कल, गंगा।
सबकी लहरों में पाया,
हिन्दी भाषा का साया ।
जब भी बोलो हिन्दी बोलो।
मित्र सदा ही हिन्दी बोलो।
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
हिन्दी सबने ही अपनाई।
उसके पीछे चलकर ही,
हमने देश में एकता पाई।
उस भाषा की जय बोलो।
मित्र सदा ही हिन्दी बोलो।
जग में ऊंचा जिसका भाल,
हिन्दी भाषा एक मिसाल।
हम सब संकल्प करेंगे,
सब काम हिन्दी में करेंगे।
खुद को भी उनसे तोलो।
मित्र सदा ही हिन्दी बोलो।

स.उ.नि. (मं.) संजय कदम,
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल
भुवनेश्वर (उड़ीसा)

प्यारी हिन्दी

मेरी हिंदी, प्यारी हिंदी
राष्ट्र का सम्मान है।
देश में ही नहीं वरन्
विश्व में तेरी पहचान है।
गांधी, लाजपत, सुभाष सभी का
तुझ पर अति विश्वास था।
तेरे ही माध्यम से उनका
देश को एक रखने का प्रयास था।
अंग्रेजों के आने से
तेरा बहुत अपमान हुआ।
तेरे ही बच्चों ने भी
अंग्रेजी का पांव छुआ।
पुनः हमारे महापुरूषों ने
तुझ पर ही विश्वास किया।
अंग्रेजी को ठोकर देकर
तुझे ही सलाम किया।
इन्हीं महापुरूषों के अथक प्रयत्न से
तुम्हें सम्मान पुनः प्राप्त हुआ।
हिंदी से ही पुनः हिन्द का
विकास मार्ग आसान हुआ।
मेरी हिंदी, प्यारी हिंदी
राष्ट्र का सम्मान है।
देश में ही नहीं वरन्
विश्व में तेरी पहचान है।

देवेन्द्र कुमार पन्त
सहायक उप निरीक्षक (मं.)

प्रशाशन-दो अनुभाग, महानिदेशालय, केरेपुबल

मेरा सपना

आओ सब बोलो बोली एक
आगे से सब खेलें होली एक
हम सबका दाता एक हो
हमारी माता एक हो
हिन्दुस्तानी धर्म एक हो
हर किसी के कर्म नेक हो
देश में पूरब पश्चिम एक हो
भावना में उत्तर दक्षिण एक हो
बूझें मानव से मानव की भाषा
समझ में न कोई मतभेद हो
हर भाषा ज्ञान की सहधर्मी
परन्तु मातृभाषा देश की सहकर्मी।
हमारी सर्पक भाषा कुछ भी रहे
जन-जन की भाषा बस एक हो
कामकाजी भाषा हिंदी अपनाओ
तथा हिंदी के प्रति सम्मान जताओ
अपने प्रदेश में अपनी भाषा बोलो
मगर हिंदी को कभी न छोड़ो
अपना शुद्ध हिंदी ज्ञान बढ़ाओ
देश को ऊँचा नाम दिलाओ
सब मिल गायें यही एक गीत
पढ़ें हिन्दी, बोलें हिन्दी, लिखे हिन्दी
हिन्दी है हमारी जनमों की मीत
तभी होगा उत्पन्न सबमें प्यार का संगीत।

– डी.डी. पंत,
द्वितीय कमान अधिकारी
ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, हैदराबाद

राजभाषा नियम

जिनका हमें पालन करना है

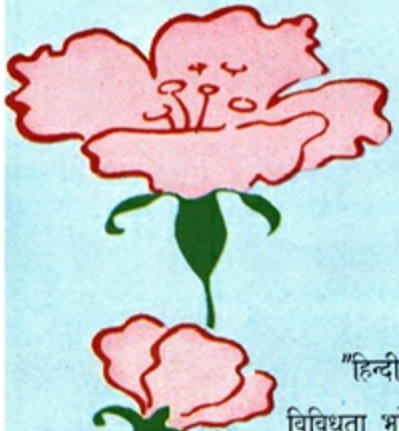
1. शाखा/विभाग में आये प्रत्येक हिन्दी पत्र का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाना चाहिये।
2. कार्यालय द्वारा 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों को शतप्रतिशत पत्र हिन्दी में ही लिखे जाने चाहिए।
3. कम से कम 60 प्रतिशत चैक व तार हिन्दी में भेजे जाने चाहिये।
4. कार्यालय के सभी साइनबोर्ड व नाम पट्ट द्विभाषी तैयार किये जाने चाहिये।
5. सभी प्रपत्र (फार्म) व परिपत्र (सर्कुलर) द्विभाषी अर्थात् हिन्दी तथा अंग्रेजी में ही तैयार किये जाने चाहिये।
6. निम्नलिखित कागजातों में हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाना चाहिए :-

    1. संकल्प (रिजोल्यूशन्स)
    2. सामान्य आदेश (जनरल आर्डर्स)
    3. नियम (रूल्स)
    4. अधिसूचना (नोटीफिकेशन्स)
    5. परिपत्र (सर्कुलर),
    6. प्रेस विज्ञप्तियां
    7. संविदा (कान्ट्रेक्ट्स)
    8. करार (एग्रीमेन्ट)
    9. लाइसेंस
    10. परमिट
    11. टेण्डर मंगाने के नोटिस और
    12. प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट (एडमिनिस्ट्रेटिव व अन्य रिपोर्ट),

7. सभी रबर की मोहरें (स्टेंप) द्विभाषी अर्थात् हिन्दी तथा अंग्रेजी में ही बनाई जानी चाहिये।
8. रजिस्टरों के शीर्षनाम हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखने चाहिये।
9. लिफाफों पर पते हिन्दी में लिखे जाने चाहिये।
10. सम्मेलनों की बैठकों के नामपट्ट द्विभाषी रूप में तैयार किये जाने चाहिये।

11. प्रत्येक शाखा की राजभाषा उपसमिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में करके उसका कार्यवृत्त तैयार करना चाहिये।
12. हिन्दी के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी शाखा/विभाग के प्रमुख की ही होती है। उन्हें इन कार्यों में विशेष रूचि लेना चाहिये।

रजि. न. 4767/87



"हिन्दी भाषा अनेक प्रादेशिक भाषाओं की सहोदरा और एक विस्तृत विविधता भरे प्रदेश में अनेक देशज बोलियों के साथ पल कर बड़ी हुई है।

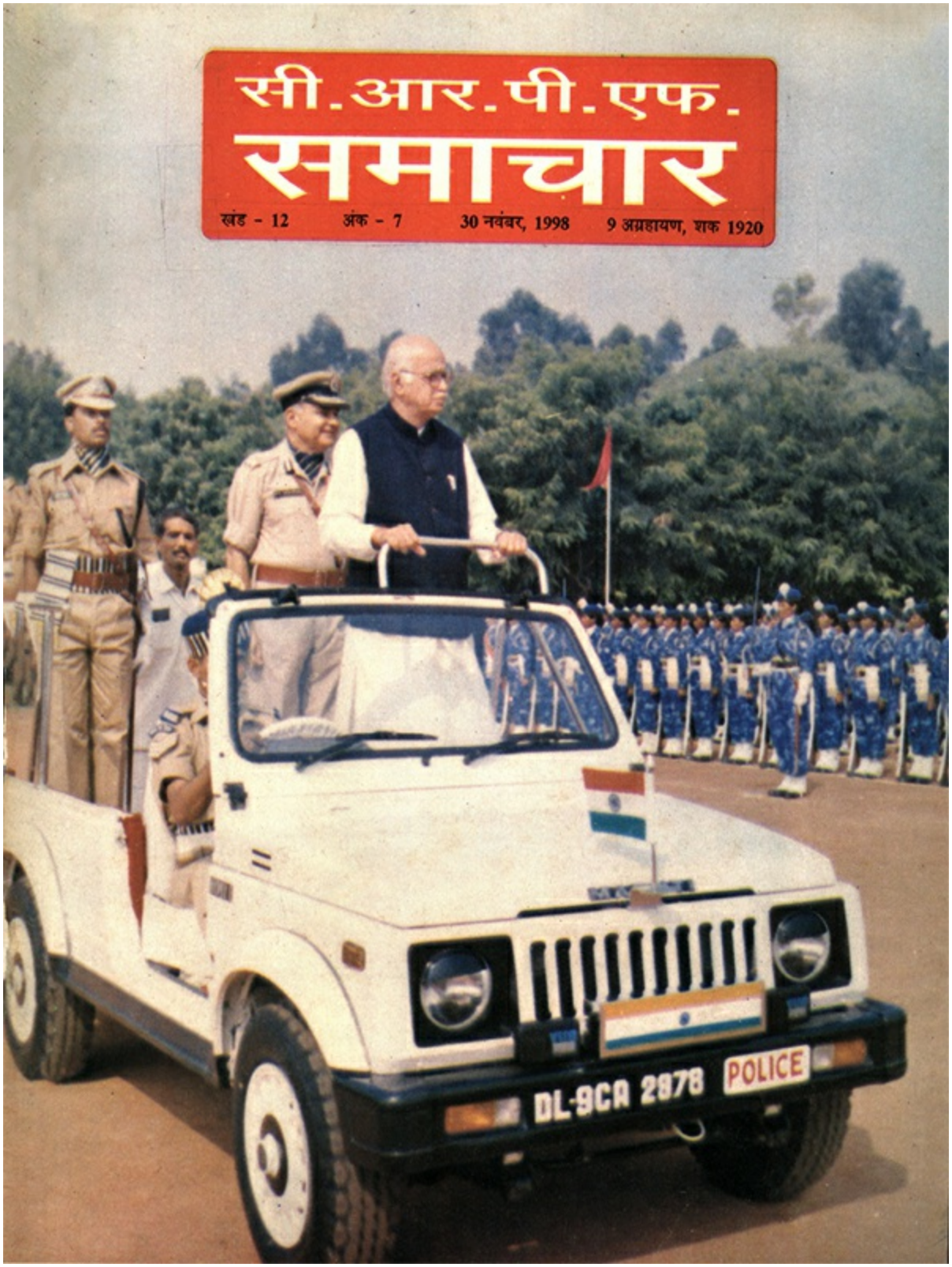
हिन्दी भाषा अपना भविष्य किसी से दान में नहीं चाहती। वह तो उसकी गति का स्वाभाविक परिणाम होना चाहिए। जिस नियम से नदी, नदी की गति रोकने के लिए शिला नहीं बन जाती उसी नियम से हिन्दी भी किसी सहयोगिनी का पथ अवरुद्ध नहीं कर सकती।

"हम कितने स्वतंत्र हुये यह अपने मन से पूछिये। वाणी-विहीन स्वतंत्रता का क्या मूल्य ? जो राष्ट्र अपनी भाषा में नहीं बोल सकता उसकी उन्नति कैसे हो सकती है ? थोड़े से लोग ही अंग्रेजी समझते हैं और हम बोले जा रहे हैं कि अंग्रेजी हमारे शासन और कार्य की मुख्य भाषा है। इससे अधिक तमाशे की बात और क्या हो सकती है?"

-महादेवी वर्मा

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 12 अंक - 7 30 नवंबर, 1998 9 अग्रहायण, शक 1920



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-12 अंक-7
30 नवंबर, 1998
9 अग्रहायण, शक 1920

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

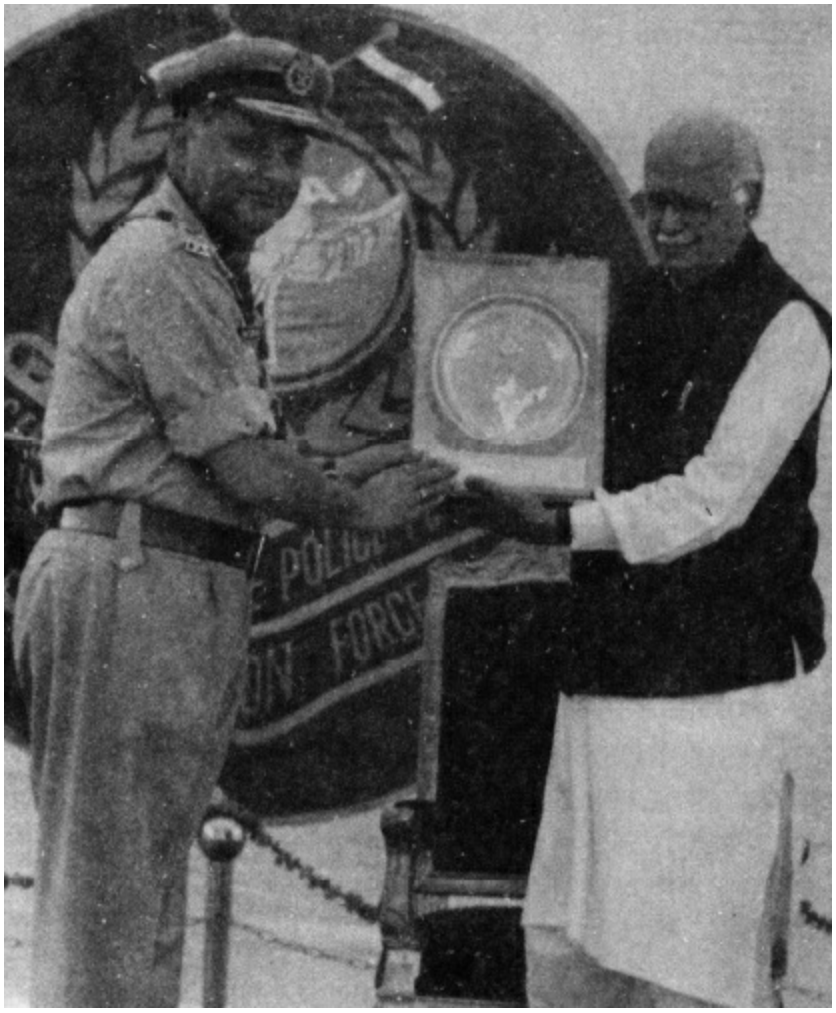
संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279



इस अंक में

महानिदेशक द्वारा पुलिस शहीदों को हाट स्प्रिंग्ज में श्रद्धांजलि

“आर.ए.एफ. देश में अमन का पहरेदार है”

रांची में सूचना प्रौद्योगिकी संकाय

वैष्णो देवी मंदिर में के.रि.पु. बल के सुरक्षा इंतजाम

अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद

सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल का वार्षिक उत्सव

ग्रुप केंद्र बनतलाब का अस्पताल

हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग

प्रथम आवरण :-आर.ए.एफ. परेड का निरीक्षण करते गृह मंत्री

अंतिम आवरण :- अखिल भारतीय पुलिस दौड़ कूद प्रतियोगिता में महिला वर्ग में सर्वश्रेष्ठ एथलीट का खिताब सुश्री गीता मनराल को प्रदान करते प. बंगाल के मुख्य मंत्री श्री ज्योति बसु ।

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

पुलिस स्मारक दिवस

महानिदेशक द्वारा पुलिस शहीदों को हाट स्प्रिंग्ज में श्रद्धांजलि

केंद्रीय रिर्जव पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने 20 अगस्त '98 को हाट स्प्रिंग्ज (लद्दाख) स्थित ऐतिहासिक पुलिस स्मारक पर देश सेवा में अपने प्राण न्यौछावर कर देने वाले पुलिस शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रीनगर क्षेत्र के महानिरीक्षक परिचालन श्री सी.एम. पांडेय भी उनके साथ थे। चीनी सेना की एक टुकड़ी द्वारा किये गये हमले का सामना करते हुए शहीद हुए 10 के.रि.पु.बल कर्मियों की स्मृति में इस स्मारक का निर्माण 36 वर्ष पूर्व किया गया था। इस स्मारक पर आकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने वाले श्री सभरवाल पहले के.रि.पु. बल महानिदेशक हैं।

हाट स्प्रिंग्ज लद्दाख में 16,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित है, यहां तापमान शून्य से 47 डिग्री तक नीचे चला जाता है। 21 अक्टूबर, 1959 को चीनी सेना की एक टुकड़ी ने यहां पेट्रोल कर रही के.रि.पु. बल की टुकड़ी पर घात लगाकर हमला किया। अपने से बहुत बड़ी सेना का बहादुरी से सामना करते हुए के.रि.पु. बल के 10 जवान शहीद हो गये।

उस समय तिब्बत से जुड़ी 2500 मील की इस अपेक्षाकृत शांत सीमा पर चौकसी का काम भारतीय पुलिस के पास था। दुर्भाग्य वश 1959 के मध्य में चीनी टुकड़ियों के अतिक्रमण से सीमा के इस हिस्से में हलचल शुरू हो गयी थी। 21 अक्टूबर, 1959 को के.रि.पु. बल के 10 जवान जो कि तब भारत तिब्बत सीमा पुलिस में प्रतिनियुक्ति पर थे, अपनी सामान्य गश्त पर थे, जबकि उन पर चीनी टुकड़ी ने भारी स्वाचालित हथियारों तथा मोर्टारो के साथ हमला किया। के.रि.पु. बल जवानों के पास सिर्फ उनकी रायफलें थी, मगर फिर भी वे बहादुरी से अपने से बहुत शक्तिशाली चीनी टुकड़ी का तब तक सामना करते रहे, जब तक उनमें शक्ति रही। इस हमले में बल के दस जवान मारे गये तथा नौ को चीनी सैनिकों ने हिरासत में ले लिया। हमले में शहीद हुए के.रि.पु. बल जवानों में इमान सिंह, पूरन सिंह, कारबू लामा, बेगराज मल, मक्खनलाल, शिवनाथ प्रसाद, हरजीत सूबा, धरम सिंह, स्वर्ण दास तथा तेसरिंग नोरबू शामिल थे। वे सभी के.रि.पु. बल की 1,2 तथा 3 बटा. के सदस्य थे। शहीदों में तीन दार्जिलिंग, प. बंगाल, दो-दो हरियाणा, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश तथा एक हिमाचल प्रदेश का निवासी था। इस प्रकार मातृभूमि की रक्षा के लिए शहीद होने वाले ये कार्मिक लगभग पूरे देश में आए थे। इन कार्मिकों की शहादत पर पूरे देश सहित कई अन्य देशों में भी शोक व्यक्त किया गया। 7 नवंबर, 1959 को अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट के लिए पटना में एकत्र हुए पूरे देश के पुलिस कर्मियों ने अपने इन वीर

साथियों को स्मृति को बनाए रखने की शपथ ली। इन शहीद कर्मियों के मृत शरीर चीनी अधिकारियों ने 13 नवंबर, 1959 को भारत को सौंपे और उससे अगले दिन हाट स्प्रिंग्ज में उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

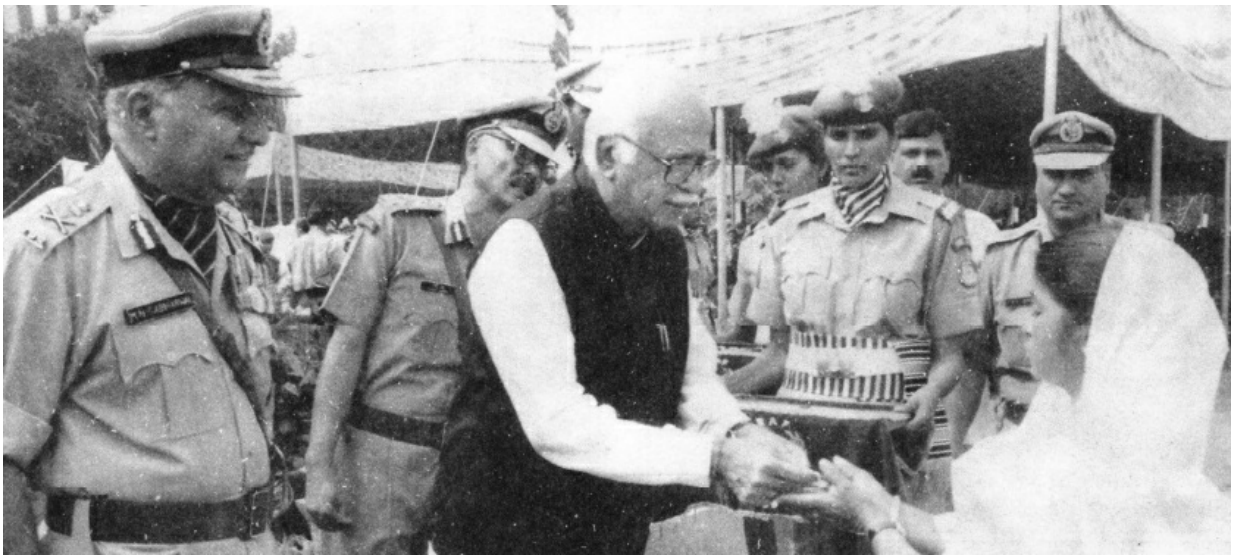
जनवरी, 1960 को हुयी पूरे देश के पुलिस महानिरीक्षकों की द्विवर्षीय बैठक में वह निर्णय लिया गया कि 21 अक्टूबर शहीद हुए पुलिस कर्मियों की याद में प्रतिवर्ष पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाएगा।



हाट स्प्रिंग्ज में शहीदों को श्रद्धांजलि देती एक पुलिस टुकड़ी

भारत सरकार ने इन पुलिस कर्मियों की याद में हाट स्प्रिंग्ज में स्मारक का निर्माण किया। इस स्मारक के निर्माण के लिए पूरे देश के पुलिस कर्मियों ने स्वेच्छा से अनुदान दिया। स्मारक का निर्माण 1962 में पूरा हुआ। तभी से पूरे देश के पुलिस कर्मियों की एक प्रतिनिधि टुकड़ी प्रति वर्ष इस स्मारक पर अपने शहीद हुए साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने इस दुर्गम स्थल पर आती है। स्मारक पर खुदे शब्द – "जब आप घर आओ, तो देश वासियों को हमारे बारे में बताना और कहना कि उनके कल के लिए हमने अपना आज कुर्बान कर दिया।" काफी समय तक मस्तिष्क को झकझोरते रहते हैं।

"आर.ए.एफ. देश के अमन का पहरेदार है" — गृहमंत्री



एक जवान की विधवा को पदक प्रदान करते हुए गृह मंत्री

"रैपिड एक्शन फोर्स देश की विविधता में एकता का रक्षक है" केंद्रीय गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि सरकार का पहला दायित्व देश के नागरिकों की सुरक्षा करना है और फिर उसका अगला दायित्व समाज में सामाजिक, साम्प्रदायिक, जातीय तथा अन्य सभी प्रकार का सौहार्द बनाए रखना है। नागरिकों की सुरक्षा का दायित्व सीमा पर सेना और देश के अंदर केंद्रीय और राज्यों के पुलिस बल बाखूबी निभा रहे हैं। मगर समाज के विभिन्न वर्गों के बीच अमन और सौहार्द बनाए रखने का काम रैपिड एक्शन फोर्स बाखूबी पूरा कर रहा है। गृहमंत्री वजीराबाद स्थित आर.ए.एफ. 103 बटालियन स्थल पर रैपिड एक्शन फोर्स की छठी वर्षगांठ के अवसर पर 9 अक्तूबर '98 को एक भव्य समारोह को सम्बोधित करते हुए बोल रहे थे। गृहमंत्री ने कहा कि आर.ए.एफ. देश के अमन का पहरेदार है, उन्होंने कहा कि किसी भी घटना या चुनौती के उपरांत तुरंत हरकत में आना आर.ए.एफ. की विशेषता है । उन्होंने कहा कि इसका नाम ही इसके कार्य की कसौटी है । उन्होंने आगे कहा कि विभिन्न साम्प्रदायिक व जातीय दंगों तथा गुजरात में आए तुफान तथा कुछ स्थानों पर आए भूकंप के दौरान आर.ए.एफ़. ने तुरंत हरकत में आकर लोगों की सेवा कर अपने नाम को सार्थक किया है । गृहमंत्री ने इस मौके पर एक शानदार परेड का निरीक्षण कर उसकी सलामी ली । परेड में महिला टुकड़ी सहित आर.ए.एफ. की छ: टुकड़ियां शामिल थी ।



परेड का निरीक्षण करते गृह मंत्री



गृह मंत्री को स्मृति चिह्न भेंट करते महानिदेशक



परेड के अवसर पर प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक झलक

गृहमंत्री ने इस अवसर पर बल के 48 अधिकारियों और जवानों को विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक भी प्रदान किये।

इससे पूर्व बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए आर.ए.एफ. के गठन और उसके कार्य का विवरण दिया। उन्होंने बताया कि आर.ए.एफ. की दसों बटालियनें देश के साम्प्रदायिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में तैनात है तथा प्रत्येक बटालियन के मुख्यालय से 400 किमी. के दायरे में आने वाले क्षेत्र उस बटालियन की जिम्मेदारी के क्षेत्र हैं। उन्होंने बताया कि 7 अक्टूबर, 92 को अपने गठन के बाद से ही आर.ए.एफ. साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों पर काबू पाने में सफल रहा है, इस फोर्स की तैनाती मात्र से ही गम्भीर से गम्भीर स्थिति को दंगे का रूप लेने से रोका जा सका है। इस बल ने हमारे समाज के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप को बनाए रखने में बहुत विशिष्ट भूमिका निभायी है। उन्होंने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि अपने गठन के इतने अल्प कार्यकाल में ही इस बल ने उच्च श्रेणी की व्यावसायिक दक्षता हासिल कर जन विश्वास अर्जित कर लिया है।

इस मौके पर पूरे देश में फैली आर.ए.एफ. की बटालियनों से आए जवानों ने लोक नृत्यों तथा कराटे का भी प्रदर्शन किया।

रांची में सूचना प्रौद्योगिकी संकाय

केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय (दूरसंचार) रांची – जोकि के.रि.पु. बल का एक प्रमुख तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान है, ने "सूचना प्रौद्योगिकी संकाय" की स्थापना कर एक और उपलब्धि अपने नाम दर्ज की है। संकाय का औपचारिक उद्घाटन महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल, भा.पु.से. के द्वारा दिनांक 25 सितम्बर, 1998 को किया गया। के.प्र.म. (दूरसंचार) में संकाय के साथ एक आधुनिकतम सूचना प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला का भी शुभारंभ उसी दिन माननीय महानिदेशक द्वारा किया गया। इस प्रयोगशाला में 20 टर्मिनल हैं जो स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क (LAN) के साथ जुड़े हैं, जोकि बल के वरिष्ठ अधिकारियों, अधीनस्थ अधिकारियों, मंत्रालयिक स्टाफ एवं के.प्र.म. (दूरसंचार) द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न संचार पाठ्यक्रमों के प्रशिक्षणार्थियों के लिए स्थापित किया गया है।



सूचना प्रौद्योगिकी संकाय का उद्घाटन करते महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल

रिग्जेन अंगमो को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क



रिग्जेन अंगमो

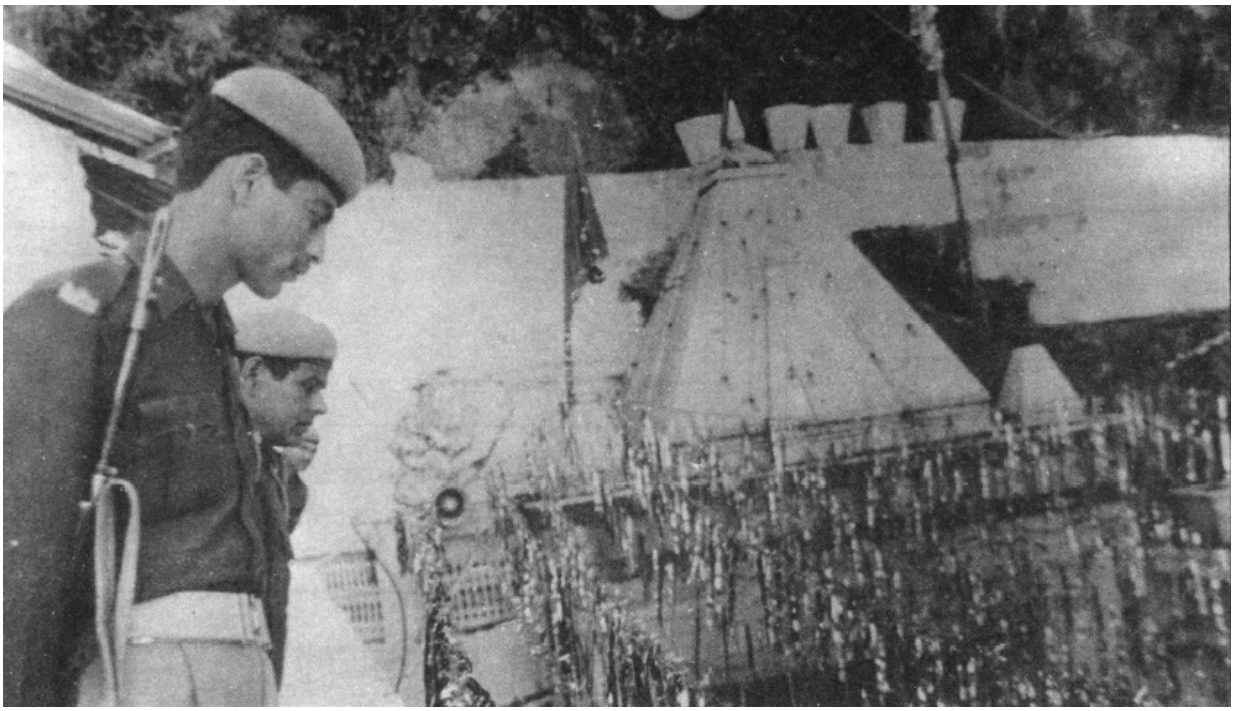
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की धावक रिग्जेन अंगमो को 11 अक्टूबर, '98 को बड़ौदा में हुई राष्ट्रीय मैराथन का स्वर्ण पदक जीतने पर महानिदेशक को प्रशंसा डिस्क प्रदान की गयी है। 13 अक्तूबर '98 को के.रि.पु. बल महानिदेशालय में रिग्जेन अंगमो को सम्मानित करते हुए महानिदेशक श्री एम. एन. सभरवाल ने यह घोषणा की। इस मैराथन में रिग्जेन अंगमो को स्वर्ण पदक के साथ – साथ 50 हजार रूपये का नकद पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

सुश्री रिग्जेन अंगमो इससे पूर्व भी कई अंतराष्ट्रीय और राष्ट्रीय मैराथन मुकाबलों के पदक जीत चुकी हैं। 1994 में कवालालामपुर, जनवरी 1995 में काठमांडू तथा नवम्बर, '95 में बैकांक में हुई अंतराष्ट्रीय मैराथन दौड़ों में रिग्जेन ने स्वर्ण पदक जीते। जबकि 1995 में इंडोनेशिया तथा दिसंबर, '95 में चैन्नई, भारत में हुई अंतराष्ट्रीय मैराथन में उन्हें कांस्य पदक मिला।

अखिल भारतीय रथ मैराथन प्रतियोगिता में उन्होंने वर्ष 1995 व '96 में स्वर्ण पदक तथा 1997 व '98 में रजत पदक जीते। फरवरी 1996 में इलाहाबाद में हुई इंदिरा राष्ट्रीय मैराथन में भी रिग्जेन ने रजत पदक जीता।

वैष्णो देवी मंदिर में के.रि.पु. बल के सुरक्षा इंतजाम

– डी.जी. महापात्र



वैष्णो देवी मंदिर के.रि.पु. बल कर्मियों की सजग चौकसी में

वैष्णो देवी मंदिर में दर्शनों के लिए जाने वाले यात्री निश्चिंत होकर अपनी यात्रा पूरी कर मंदिर में दर्शन करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि कड़ाके की ठंड या भारी वर्षा के बावजूद कुछ लोग हैं जो उनकी सुरक्षा के लिए पूरी तरह मुस्तैद हैं । और वे हैं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सजग चौकस जवान । जम्मू कशमीर पुलिस तथा वैष्णो देवी मंदिर के सुरक्षा कर्मियों के अतिरिक्त केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के पास पूरे वैष्णो देवी मार्ग तथा मंदिर की सुरक्षा का जिम्मा है। जिसे वे 24 घंटे पूरी मुस्तैदी के साथ अंजाम दे रहे हैं।

जम्मू की खूबसूरत त्रिकुटा पहाड़ियों पर स्थित वैष्णो देवी मंदिर जाने वालों की सुरक्षा के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 34 बटालियन की तीन कम्पनियां तैनात हैं। वैष्णो देवी मंदिर की यात्रा जम्मू कशमीर के ऊधमपुर जिले में पड़ने वाले कटरा से शुरू होती है। यहां से वैष्णो देवी मंदिर की दूरी 12.5 कि.मी. है। रियासी, जम्मू तथा ऊधमपुर से सीधे मार्ग कटरा तक जाते हैं। 34 बटालियन के तीन सैक्शन स्थानीय पुलिस के साथ दिन रात कटरा बस अड्डे तथा उसके आसपास के इलाकों पर पेट्रोलिंग, नाका तथा अन्य सुरक्षा ड्यूटियों के द्वारा निगरानी रखते हैं। 34 बटालियन के कमांडेंट श्री नागेन्द्र सिंह ने बताया कि एक डिप्टी कमांडेन्ट के नेतृत्व में कटरा स्थित विश्वतायन योगाश्रम में वैष्णो देवी जाने वाले यात्रियों की सहायता और निर्देशन के लिए भी बल की एक टुकड़ी तैनात है।

कटरा से दो किमी दूर बाण गंगा में एक चैक पोस्ट है जहां किसी अप्रिय घटना को टालने के उद्देश्य से यात्रियों की सुरक्षा जांच की जाती है। इस युनिट का एक सैक्शन बाण गंगा से चरण पादुका तक गश्त का कर्य करता है। यह स्थल कटरा से तीन

किमी दूर है।

वैष्णो देवी मंदिर के मध्यमार्ग में स्थित अर्द्धकुंवारी में एक अन्य चैक पोस्ट स्थित है, जहां एक प्लाटून यात्रियों की जांच एवं तलाशी के लिए तैनात है, वे यात्रियों को अर्द्धकुंवारी गुफा के सुचारू दर्शन के लिए भी मदद करते हैं।

ढाई किमी और आगे चलने पर सांझी छत पर एक और प्लाटून स्थित है। यह स्थल कटरा से 9 किमी की दूरी पर स्थित है। यहां पर स्थानीय पुलिस व महिला जवानों सहित बल के कार्मिक यात्रियों की सुरक्षा के लिए तैनात हैं। इस युनिट के दो सैक्शन सांझी छत से भैरों मंदिर, हैलीपैड तथा सांझी छत से हाथी मत्था तक गश्त के लिए तैनात है। ये गश्त रात दिन हर वक्त जारी रहती है।

वैष्णो देवी भवन में भी एक सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में इस युनिट की पांच प्लाटून तैनात हैं जो यात्रियों की जांच के साथ साथ यात्रियों को सुचारू तथा अनुशासनात्मक तरीके से दर्शन करने में भी मदद देते हैं। भवन के ऊपर पहाड़ी पर एक एल.एम.जी. तथा 2" मोर्टार भी स्थापित की गई है, जिससे आसपास की पूरी पहाड़ियों पर कड़ी नजर रखी जाती है, ताकि उस ओर से पैदा होने वाले खतरे का सामना किया जा सके। के.रि.पु. बल की सभी टुकड़ियां तथा पोस्ट आपस में वायरलैस के माध्यम से जुड़ी हैं। माता वैष्णो देवी बोर्ड ने 60 लाख रूपये की लागत से भवन के द्वार पर दो एक्सरे मशीनों की स्थापना की है। जिसके द्वारा यात्रियों के सामान आदि की जांच की जाती है। यह व्यवस्था 13 अक्टूबर 1998 से ही लागू हुयी है। इसकी स्थापना से यहां तैनात सुरक्षा कर्मियों के कार्यभार में कुछ कमी आयी है। और वे अन्य सुरक्षा उपायों पर अधिक ध्यान देने लगे हैं। इसके अतिरिक्त 12.5 किमी लम्बे मार्ग पर कई जगह मैटल डिटेक्टर भी स्थापित किये गये हैं।

वैष्णो देवी मार्ग तथा मंदिर की सुरक्षा के लिए के.रि.पु. बल कार्मिक 1986 से तैनात, है, लेकिन 1995 तक यहां बल की केवल एक ही कंपनी तैनात थी। किंतु लगातार बढ़ती आतंकवादियों की धमकियों तथा यात्रियों की संख्या के कारण अब यहां बल की तीन कंपनियां तैनात हैं।

34 बटालियन के कमांडेन्ट श्री नागेन्द्र सिंह ने बताया कि यहां तैनात बल के कार्मिकों की सेवाओं की हमेशा अधिकारियों और यात्रियों ने भरपूर सराहना की है। गत नवरात्रों में लाखों की तादाद में यात्रियों ने वैष्णो देवी की यात्रा की किंतु सुरक्षा कार्मिकों की सजग चौकसी के कारण एक भी अप्रिय घटना नहीं घटी। यह यहां तैनात बल के कार्मिकों की दक्षता तथा कार्य कुशलता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। अपने उद्देश्य "सेवा और भक्ति" के अनुरूप के.रि.पु. बल देश के प्रति निष्ठावान रहते हुए यहां यात्रियों को हर संभव सहयता उपलब्ध करा रहा है।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह जुलाई '98 में मृत्यु के 32 मामलों में 18, 42, 745 रूपये तथा अक्षमता के चार मामलों में 60,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

माह अगस्त '98 में मृत्यु के 33 मामलों में 19,80,000 तथा अक्षमता के दो मामलों में 27,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

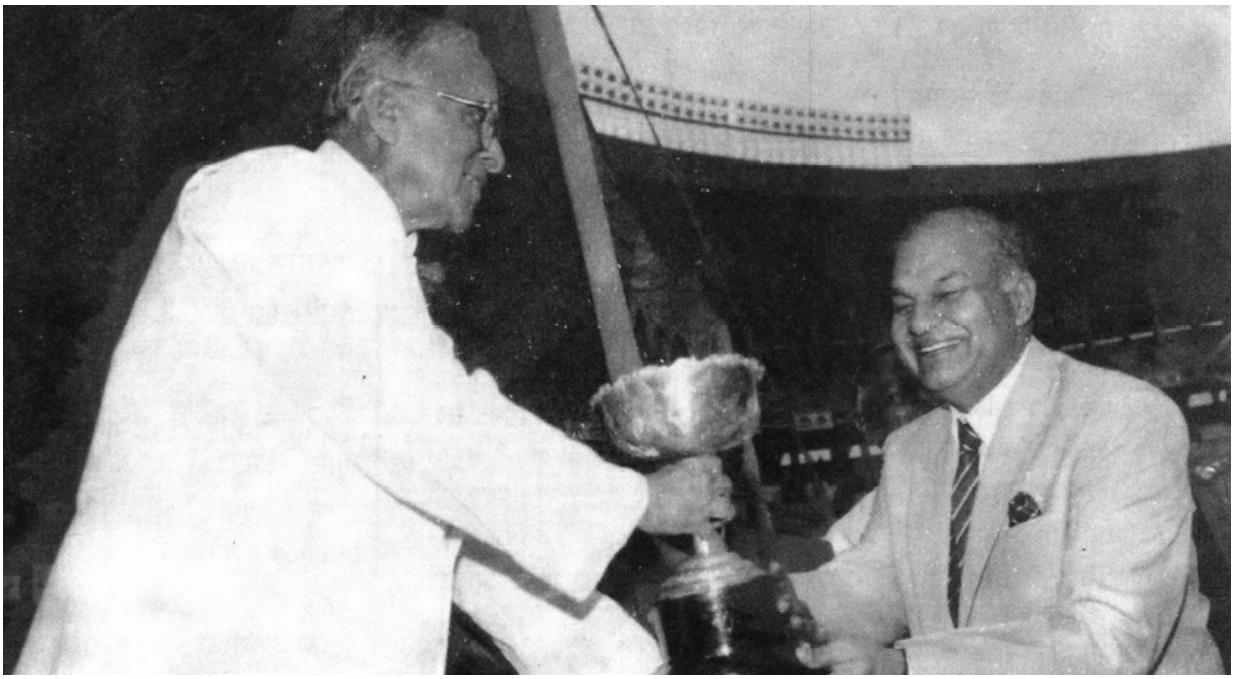
सितंबर '98 में मृत्यु के 56 मामलों में 32,20,0000 रूपये तथा अक्षमता के तीन मामलों में 45,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

अक्तूबर '98 में मृत्यु के 24 मामलों में कुल 14,40,000 रूपये तथा अक्षमता दो मामलों में 30,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

इसी प्रकार जोखिम निधि 'बी' से माह जुलाई '98 में इसके नौ सदस्यों की मृत्यु के मामले में 3,15,000 रूपये, अगस्त में आठ सदस्यों की मृत्यु के मामले में 2,80,000 तथा अक्तूबर '98 में छ: सदस्यों की मृत्यु के मामले में 2,10,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद

के.रि.पु. बल की महिलाएं प्रथम



प. बंगाल के मुख्य मंत्री श्री ज्योति बसु से ट्राफी ग्रहण करते श्री एम.एन. सभरवाल

कलकत्ता में हुए चार दिवसीय 47वें अखिल भारतीय खेलकूद प्रतियोगिता के समापन पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिलाओं की टीम ने कुल मिलाकर चैम्पियनशिप हासिल की। उसने 138 अंक प्राप्त किए जबकि पंजाब पुलिस की टीम 115 अंक लेकर द्वितीय स्थान पर रही। कुल मिलाकर केरिपु बल ने 9 स्वर्ण, 7 रजत तथा 4 कांस्य पदक जीतकर एक नया मीट कीर्तिमान स्थापित किया। केरिपु बल की सुश्री गीता मनराल को इस चैम्पियनशिप की सर्वोत्कृट महिला खिलाड़ी घोषित किया गया।

पुरूष वर्ग में हालांकि पंजाब पुलिस की टीम 136.5 अंक प्राप्त कर चैम्पियन रही, केरिपु बल की पुरूष की टीम ने 120 अंक लेकर दूसरा स्थान प्राप्त किया। कुल मिलाकर के.रि.पु. बल ने 6 स्वर्ण, 2 रजत तथा 9 कांस्य पदक जीतकर हैमर थ्रो में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

कलकत्ता में चैम्पियशिप समापन दिवस के अवसर पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल उपस्थित थे। उन्होंने खिलाड़ियों को बधाई दी तथा चैम्पियनशिप प्रतियोगिता के दौरान किए गए उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उनको सरकार की संशोधित प्रोत्साहन योजना के अधीन पुरस्कार व पदोन्नति देने पर विचार करने की घोषणा की।

सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल का वार्षिक उत्सव



बच्चों द्वारा लगाई गयी प्रदर्शनी को देखती हुयी श्रीमति सभरवाल

"सा.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल की प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताओं को देखते हुए ही रंगारेड्डी हैदराबाद में इसी प्रकार का एक अन्य स्कूल शुरू करने की प्रेरणा प्राप्त हुयी।" सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहणी नई दिल्ली के वार्षिक उत्सव के मौके पर उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने कहा कि शैक्षिक संस्थाओं को अपने कार्य कलाप इस प्रकार चलाने चाहिए जिससे कि इस महान देश के भविष्य आज के बच्चों के भीतर छिपी प्रतिभा उजागर हो सके।

इस मौके पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था की अध्यक्षा श्रीमती बीना सभरवाल ने विद्यालय की पत्रिका "सृजन" का विमोचन किया। उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा लगायी गयी एक प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया।

इससे पूर्व विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने विद्यालय की वार्षिक रिर्पोट पढ़ी। उप महानिरीक्षक तथा स्कूल के प्रबन्धक श्री ए.के. सिंह ने भी समारोह को सम्बोधित किया। इस मौके पर बच्चों ने एक रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

माह अगस्त सितंबर '98 में मृत बल के कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अगस्त व सितंबर '98 में मृत्यु को प्राप्त हुए । के.रि.पु. बल समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है ।

सहायक कमांडेंट दीदार सिंह (186 बटा.), कां/ड्राईवर सुरेश सिंह (104 बटा.), है. कां. हीरालाल (67 बटा.), सब इंस्पेक्टर भगवती प्रसाद (119 बटा.), कां. सिंगारा राम (74 बटा.), कां टी.जी. सजीव (ग्रुप केंद्र पल्लीपुरम), है.कां. मूल चंद (95 बटा.), कां. मिथिलेश पासवान (120 बटा.), नाई ब्रिज बिहारी (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर), का. हरीराम गुलाब (ग्रु.के. लखनऊ), कां. शीशराम (3 बटा.), कां./ड्रा. बी. रमेश कुमार (65 बटा.), सब इंस्पेक्टर आर.के. शर्मा (108 बटा.), है.कां. चंदेश्वर सैकिया (ग्रु.के. गुवाहाटी), कां. बलकार सिंह (सिगनल ग्रुप केंद्र), कां. सुरेंद्र सिंह (114 बटा.), कां. सी.पी. गुप्ता (114 बटा.), कां. राजेश कदम (40 बटा.), है. कां. भैरवदत्त (14 बटा.), है.कां. ओम कंवर (136 बटा.), है. का. एस.एन. गोसाई (83 बटा.), इंस्पेक्टर इलीजार तिग्गा (62 बटा.), स.उ.नि. /फार्मेसिस्ट मिस शोभा (ग्रुप केंद्र मोकामा घाट), कां. गलदीप सिंह (84 बटा.), सब इंस्पेक्टर पी.एच. माहतो (15 बटा.), वाटर कैरियर देवेंद्र गुरादी (105 बटा.), है.कां. यू.बी. ढांडे (53 बटा.), है. कां./ड्राईवर पुरूषोत्तम दास (18 बटा.), लां. नायक किशन दत्त (34 बटा.), है.कां. सागीर अहमद (111 बटा.) तथा है.कां. मातियाज मिज (133 बटा.) ।

इन के अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह अप्रैल '98 में 123 बटा.

के कां. ड्राइवर अशोक कुमार तथा माह जून '98 में 101 बटा. के कुक प्रदीप कुमार तथा 27 बटा. के सब इंस्पेक्टर चंदन सिह भी मृत्यु की प्राप्त हुए।

ग्रुप केंद्र बनतालाब का अस्पताल

– डा. के. महापात्र

केंद्रीय रिर्जव पुलिस बल के बनतालाब ग्रुप केंद्र में एक 50 बिस्तर वाला अस्पताल कार्य कर रहा है। इस अस्पताल में जम्मू कशमीर में तैनात बल के कार्मिकों तथा उनके परिवारों को चिकित्सा संबंधी जरूरतों को पूरा किया जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रुप केंद्र बनतालाब के कर्मचारी तथा इसमें रहने वाले केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के कर्मचारियों और उनके परिवारों को भी यहां चिकित्सा उपलब्ध करायी जाती है। अस्पताल में मरीजों के लिए 50 बिस्तरों की व्यवस्था के साथ–साथ, एक ओ.पी.डी. भी काम कर रही है जहां रोजाना रोगियों को देखा जाता है। तात्कालिक चिकित्सा तथा निगरानी वाले मामलों के लिए यहां का आपातकालीन विभाग हर वक्त खुला रहता है। अस्पताल में एक अच्छी प्रयोगशाला, एक्सरे तथा ई.सी.जी. जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। हैड कांस्टेबल रैंक तक के अस्पताल में भर्ती मरीजों को मुफ्त भोजन उपलब्ध कराया जाता है। अस्पताल में तपेदिक तथा अन्य संक्रामक बिमारियों के मरीजों के लिए एक अलग विभाग है। यहां ओ.पी.डी. में प्रति दिन औसतन 150 रोगियों को दवा दी जाती है। अस्पताल में भर्ती मरीजों की संख्या, औसतन 20 से 25 रहती है।

अस्पताल में परिवार कल्याण से संबंधित सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। जिन में प्रसूति गृह, नसबंदी तथा बच्चों के टीकाकरण आदि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहां दवाईयों के रखरखाव तथा वितरण पर विशेष ध्यान रखा जाता है। अस्पताल में भर्ती तथा बाहरी रोगियों के लिए अस्पताल में दवाओं का प्रर्याप्त भंडार मौजूद है। जो दवाएं अस्पताल में उपलब्ध नहीं होती है उन्हें बाजार से खरीद कर मरीजों को उपलब्ध कराया जाता है। आपरेशन के लिए अस्पताल में एक पूर्णतया वातानुकूलित आपरेशन थियेटर मौजूद है। अस्पताल में नाक, कान, गले, एनेस्थेसिया, रेडियोलोजी तथा ओरथोपेडिक विशेषज्ञों को सुविधाएं उपलब्ध हैं। अस्पताल में शीघ्र ही एक सर्जन की सुविधा भी उपलब्ध हो जाएगी। अस्पताल में जरूरत के मुताबिक पूर्ण अर्द्ध चिकित्सकीय स्टाफ मौजूद है। बिमारी के गंभीर मामले यहां से मेडिकल कालिज जम्मू में भेजे जाते हैं। मेडिकल कालिज के साथ इस अस्पताल का बहुत अच्छा तालमेल है। इस अस्पताल में कार्यरत डाक्टरों के ज्ञान को तरोजाता रखने के लिए अक्सर यहां विशेषज्ञों के व्याख्यानों का भी आयोजन किया जाता है। साथ ही अस्पताल के डाक्टरों को भी समय समय पर रिफ्रेशर पाठ्यक्रमों के लिए भेजा जाता है। अस्पताल में एक लाइब्रेरी भी है जिसमें पुस्तकों का अच्छा संग्रह है।



ग्रुप केंद्र बनतालाब स्थित बल का अस्पताल

अस्पताल के आसपास काफी साफ सफाई रखी जाती है, तथा चारों तरफ काफी हरियाली तथा फूल आदि लगाए गये हैं, जिसका फायदा रोगी उठाते हैं।

जम्मू कशमीर की कानून व्यवस्था की स्थिति की दृष्टि में रखते हुए तथा यहां लगातार बढ़ती सुरक्षा बलों की तैनाती के कारण सरकार ने इस अस्पताल को 100 बिस्तर वाले अस्पताल में तब्दील करने की अनुमति दी है, जिससे घाटी में तैनात सभी सुरक्षा बलों के कर्मी लाभ उठा सकेंगे। भवन का निर्माण काफी हद तक पूरा हो चुका है, तथा बाकी बचा कार्य भी अगले चंद महीनों में पूरा हो जाने की उम्मीद है। शीघ्र ही इस बड़े अस्पताल के लिए गृह मंत्रालय से स्टाफ की भी अनुमति मिल जाने की उम्मीद है।

इस अस्पताल के डाक्टर तथा अन्य स्टाफ पूर्ण समर्पण के साथ रोगियों की सेवा में जुटे हैं। यहां आपातस्थितियों में स्थानीय नागरिकों को भी चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है। गत दो वर्षों में इस अस्पताल ने व्यापक पल्स पोलियो अभियान में भाग ले कर सैंकड़ों बच्चों को पल्स पोलियो ड्राप्स दिये। कैम्प में साफ सफाई तथा स्वच्छता पर दृष्टि रखने के लिए अस्पताल के डाक्टरों द्वारा समय समय पर कैम्प का दौरा भी किया जाता है तथा कैम्प के नागरिकों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने के लिए डाक्टरों द्वारा व्याख्यानों आदि का भी आयोजन किया जाता है।

हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग

– सुभाष चंद्र सत्य

स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के सिलसिले में वर्ष भर चले समारोह 15 अगस्त, 1998 को संपन्न हो गए। इस दौरान देश–विदेश में भारत के स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए और स्वतंत्रता के पांच दशकों की उपलब्धियों व विफलताओं का विश्लेषण किया गया। केंद्र और राज्य सरकारों के अतिरिक्त निजी संस्थाओं व सांस्कृतिक संगठनों ने भी स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती समारोहों में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। किंतु इस समूचे उत्सव में किसी ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाए गए अहिंसक आंदोलन के दौरान हिंदी को पूरे देश की भाषा बनाने का जो संकल्प विकसित हुआ था और स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने इस संकल्प को व्यावहारिक रूप देने के लिए देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा व संपर्क भाषा बनाने का जो प्रावधान किया था, उसका क्या हुआ ?

अब जबकि भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपने अस्तित्व के 25वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है, यह आत्म–विश्लेषण करना समीचीन होगा कि हिंदी को राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा व राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने की भावनात्मक घोषणाओं से आगे बढ़ कर इसके व्यावहारिक प्रयोग की दिशा में हम कितने कदम चले हैं ?

जहां तक केंद्र सरकार द्वारा हिंदी के प्रयोग की बढ़ावा देने के उपायों का संबंध है, निस्संदेह संस्थागत स्तर पर बहुत कुछ किया गया है। देशभर में अनेक संस्थान, आयोग, विभाग, निदेशालय, अकादमियां तथा पुरस्कार योजनाएं प्रारंभ की गई हैं, जिनका उद्देश्य हिंदी के प्रचार–प्रसार तथा सरकारी काम–काज में उसके प्रयोग को बढ़ावा देना रहा है। सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग की गति बढ़ाने के लिए तो गृह मंत्रालय में एक स्वतंत्र राजभाषा विभाग भी काम कर रहा है। इसके अलावा केंद्र तथा राज्यों की साहित्य अकादमियां, हिंदी ग्रंथ अकादमियां तथा इसी प्रकार की अन्य संस्थाएं भी राजभाषा हिंदी के संवर्धन के उद्देश्य से स्थापित की गई है। इन सरकारी संगठनों के अतिरिक्त सरकारी अनुदान के बल पर अथवा निजी प्रयासों के दम पर चलने वाली असंख्य गैर–सरकारी संस्थाएं भी अपने ढंग से हिंदी सेवा में जुटी हुई हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं।

हिंदी के व्यावहारिक प्रयोग के मार्ग में अक्सर अंग्रेजी को सबसे बड़ी बाधा बताया जाता है। अंग्रेजी के प्रति भारतवासियों में अतिरिक्त सम्मान का भाव तथा रोजी–रोटी के साथ उसके नजदीकी जुड़ाव के कारण इस तर्क को एकदम अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता। किंतु हिंदी की मौजूदा दुर्दशा का क्या सही एकमात्र कारण है ? असली कारण बाहर नहीं अंदर खोजने होंगे। हिंदी का विकास यात्रा में बाहरी बाधाएं तो एक दो होंगी, किंतु आंतरिक बाधाएं असंख्य हैं। अपने हर पतन व पराभव के लिए विदेशी तंत्रों को दोषी बताने की पलायनवादी प्रवृत्ति से हम बहुत नुकसान उठा चुके हैं। आत्म–विश्लेषण एवं आत्मालोचना अपने दोषों को सुधारने का सबसे कारगर तरीका है।

एक उदाहरण से बात शुरू करते हैं। हिंदी हित के मंचों को प्रमुखता से सुशोभित करने वाले एक विद्वान को जब एक फार्म पर हस्ताक्षर करने को कहा गया तो उन्होंने बड़े सहज ढंग से अंग्रेजी से हस्ताक्षर कर दिए। जब उन्हें हिंदी में हस्ताक्षर करने के कर्तव्य की याद दिलाई गई तो एकदम बेफिक्री से उत्तर आया – "अरे हस्ताक्षर से क्या होता है?" यह स्थूल उदाहरण सिर्फ यह जताने के लिए दिया गया है कि हमारे लिए यानी हिंदी भाषी लोगों के लिए हिन्दी प्रेम, लगाव अथवा सम्मान की वस्तु नहीं है। "हस्ताक्षर से क्या होता है?" की यह प्रवृत्ति तथाकथित ऊंचे लोगों से चल कर प्राथमिक कक्षा के बच्चे तक पहुंचती है और इसका विस्तार "आवेदन पत्र या पत्र अथवा फाइल पर नोट लिखने से क्या होता है" तक जा पहुंचता है। हमारे जो नेता या बुद्धिजीवी आए दिन आम जनता को हिंदी अपनाने के उपदेश और प्रेरणा देते हैं, उनका आचरण तो आम लोगों से छिपा नहीं है। फिर उनकी बात कोई क्यों गंभीरता से लेगा और अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी के इस दोगलेपन को देखते–समझते युवा लोग क्यों हिंदी से प्रेम करेंगे ? असली बाधा भाषा प्रेम का अभाव तथा यह दोगला दृष्टिकोण है।

अपनी भाषा के प्रति स्वाभिमान की कमी ही उस हीनभाव को जन्म देती है, जिसके चलते हिंदी औपचारिक तौर पर राष्ट्रभाषा, राजभाषा और समूचे देश की संपर्क भाषा का दर्जा पाकर भी व्यावहारिक धरातल पर क्षेत्रीय भाषा का स्वस्थ स्वरूप भी ग्रहण नहीं कर पाई है। अंग्रेजी का प्रभुत्व तो सारे देश में है फिर क्या कारण है कि बंगला, मराठी, मलयालम, तेलुगु, तमिल, गुजराती आदि बोलने वाले लोग अपनी–अपनी भाषा का खुल कर प्रयोग करते हैं जबकि हिंदी भाषी पढ़े–लिखे लोग सरकारी, व्यापारिक तथा औपचारिक काम–काज तो दूर, निजी व पारिवारिक कार्यों में भी अपनी भाषा का प्रयोग करने में शर्म महसूस करते हैं ? उदाहरण के लिए मित्रों – रिश्तेदारों को पत्र लिखना, निमंत्रण पत्र छपवाना, दुकानों, स्कूलों आदि के नामपट्ट तथा घरों में नेमप्लेट लगाना, संस्थाओं, दुकानों की रसीद बुकें, मोहरें आदि सब कुछ तो अंग्रेजी में ही हो रहा है। बड़े शहरों में किसी आधुनिक बाजार में निकल जाइए, आपको हिंदी में लिखा एक आध नामपट्ट ढूंढने से ही मिल पाएगा। आप किसी भी बस्ती में घूम जाइए, 98 प्रतिशत घरों में लगी नामपट्टी का अंग्रेजी में ही होगी। संविधान की अपेक्षा के अनुरूप सरकारी दफ्तरों, नगरपालिकाओं, बैंकों आदि के अधिकतर फार्म द्विभाषी हैं, परंतु हिंदी जानने वालों में भी 90 प्रतिशत से अधिक लोग अंग्रेजी में ही फार्म भरते हैं। सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में मोटे मोटे शब्दों में लिखा रहता है कि हिंदी में भरे गए फार्म तथा चेक स्वीकार किए जाते हैं। पर एक प्रतिशत लोग भी हिंदी में ये सब काम नहीं करते।

हिंदी के साथ एक समस्या यह रही है कि स्वतंत्रता के बाद इसका स्वाभाविक एवं स्वतंत्र विकास बाधित हो गया है। राजभाषा बनने के बाद इसे तरह–तरह के अंकुशों, निर्देशों और उपदेशों के अनुसार आगे बढ़ने को विवश होना पड़ा। फलस्वरूप जनभाषा का इसका स्वाभाविक रूप विकृत हो गया और इसकी स्थिति उस दासी जैसी हो गई जिसे महारानी का वेश पहना कर राज सिंहासन पर बैठा दिया गया है। अब वह न तो राज कर सकती है और न ही आजादी से घूम फिर सकती है। आज

तक कभी किसी राजनेता ने नहीं कहा कि अंग्रेजी, बंगला या कोई भी और भाषा कैसी होनी चाहिए किंतु हिंदी के मामले में आए दिन राजनेता से लेकर मंत्रालय के अधिकारी और बैंक के मैनेजर तक सीख देते रहते हैं कि इसमें यह होना चाहिए, वह होना चाहिए। एक कोने से फतवा दिया जाता है कि हिंदी में संस्कृत शब्दों का ही अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए। किसी दूसरे मंच में ऐलान किया जाता है कि अरबी, फारसी से निःसृत उर्दू शब्दों से हिंदी सरल बन सकती है। मजे की बात यह है कि यह उपदेश भाषा शास्त्री, समाजशास्त्री अथवा आम लोगों की मानसिकता को समझने वाले सामाजिक कार्यकर्ता नहीं बल्कि दफतरों में बैठे उच्च अधिकारी, राजनेता और कभी–कभी ऐसे विद्वान देते है, जिनका भाषा के व्यावहारिक प्रयोग से कोई लेना–देना ही नहीं है।

हिंदी के व्याकरण तथा व्यवहार पर संस्कृत का अनुशासन थोपने का आग्रह भी हिंदी को स्वतंत्र रूप से विकसित नहीं होने देता। हमारे देश में "प्राचीन" को श्रेष्ठ मानने की एक प्रतिक्रियावादी चिंतनधारा हमेशा मौजूद रही है। यह दुराग्रही प्रवृत्ति संस्कृति, भाषा और देश के अभिमान एवं प्राचीन गौरव की दुहाई देकर हमारी भाषाओं, कलाओं, संस्कृति, धर्म तथा चिंतन के खुलेपन और विस्तार का हमेशा विरोध करती रही है। इस प्रवृत्ति के पोषक तत्व भारतीय भाषाओं, विशेष कर हिंदी की मर्यादा बनाए रखने के नाम पर उसे और कमजोर करते हैं। गनीमत यह है कि इन शुद्धतावादी लोगों की ज्यादा चल नहीं पाई, नहीं तो हिंदी भी रूढ़िवाद का एक पहलू बन चुकी होती।

यह शुद्धतावादी दृष्टि अन्य देशी–विदेशी भाषाओं के शब्द व मुहावरे ग्रहण करने से परहेज के रूप में प्रकट होती है। जिन प्राचीनतावादी तर्कों का हमने ऊपर उल्लेख किया है, वे संस्कृत के तत्सव तथा तद्भव रूपों को ही हिंदी का स्वाभाविक शब्द भंडार मानने के समर्थक हैं। यहां तक कि भाषा की सैंकड़ों वर्षों की यात्रा में जो विदेशी शब्द सहज ढंग से हिंदी की शब्दावली में अपना स्थान बना चुके हैं, उनके बहिष्कार एवं निष्कासन का रूख अपनाया जाता है। अरबी, फारसी के शब्दों के प्रति यह दुराग्रह अधिक तीखा है। इस दृष्टि के लिए भाषा को धर्म से जोड़ने की कुत्सित एवं अवैज्ञानिक प्रवृत्ति जिम्मेदार है। दुख की बात यह है कि भाषा के प्रयोग के सांप्रदायिक आग्रह की शिकार केवल हिंदी ही है, अन्य भारतीय भाषाएं बंगला, मलयालम, तमिल, मराठी आदि इन सांप्रदायिक रोगाणुओं से मुक्त है। फर्ज, इंतजाम, कैद, किताब, वकालत, अदालत, स्याही, कलम, मेज, बाग, वक्त, खाक, मंजिल, आदि असंख्य शब्द है जिनको निकाल देने से हिंदी के माधुर्य, विविधता एवं प्रभाव पर कुठाराघात हो जाएगा, परंतु आज भी एक ऐसी चिंतनधारा साहित्य, पत्रकारिता, शिक्षा आदि क्षेत्रों में सक्रिय है जो इन शब्दों के स्थान पर संस्कृत तत्सम शब्दों को इस्तेमाल करने की वकालत करती है। यही रूख अंग्रेजी तथा आधुनिक टैक्नोलोजी के अन्य भाषाओं के नए शब्दों के संबंध में अपनाया जाना है। टेलीफोन, स्कूल, कालेज, काफी, टाईप, फ्लैट, कैलेंडर, डायरी, रेडियो, सिनेमा, फोटो, मशीन, रजिस्टर, बैग, कम्प्यूटर, साफ्टवेयर, कार्बन, चिमनी जैसे सैंकड़ों शब्द गिनाए जा

सकते हैं जो हमें बिल्कुल पराए नहीं लगते। किंतु यदि इनको बजाए दूरभाष, विद्यालय, महाविद्यालय, पुस्तिका, टंकण, आवास, पंचांग, दैनन्दिनी, आदि शब्द ही लिखने और बोलने का दुराग्रह किया जाएगा तो निश्चय ही हिंदी संपन्न नहीं बल्कि विपन्न बनेगी।

छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति भी हिंदी में खूब प्रचलित है। जब कोई विद्वान लेखक, कवि अथवा पत्रकार हिंदी में भाषा संबंधी कोई एक प्रयोग करता है जो तब तक के मानकों को नकारता हो तो हिंदी प्रेम के नाम पर उसके खिलाफ तलवारें निकल आती है। अंग्रेजी भाषा के विश्व भर में मान्य होने के पीछे एक कारण यह भी है कि उसमें हमेशा प्रयोग होते रहे हैं। अमरीका के लोगों की अंग्रेजी ब्रिटिश अंग्रजी से बहुत भिन्न है, किंतु इस पर कभी हायतौबा नहीं मचाई गई जबकि हिंदी में क्षेत्रीय प्रेयाग होने पर भी शुद्धतावादी आलोचक पूरी रचना को पंजाबी, बंगाली, बिहारी या हरयाणवी प्रभाव का दोष लगा कर उसे नकार देते हैं। उच्चारण के मामले में तो यह संकीर्णता बहुत ही शोचनीय रूप में विद्यमान है। बिहार, हरियाणा, पंजाब, पूर्वी उत्तरप्रदेश तथा कई अन्य हिंदी भाषी क्षेत्रों और अन्य भाषा भाषी राज्यों में बोली जाने वाली हिंदी का उपहास किया जाता है। इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी जो लोग स्वयं हिंदी के प्रयोग में अपमान महसूस करते हैं वे अहिंदी भाषी लोगों के हिंदी प्रयोग का उपहास करके हिंदी की प्रगति को अवरूद्ध करते हैं।

हिंदी क्षेत्रों में साक्षरता की कमी और इस कारण भाषा के लिखित रूप से अधिसंख्य लोगों का संपर्क में न आना भी हिंदी के विकास में एक मुख्य बाधा है। जनसंख्या के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार बड़े हिंदी भाषी राज्यों–बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और मध्यप्रदेश में साक्षरता की दर सबसे कम है किंतु इन राज्यों में जनसंख्या अन्य भारतीय भाषाओं के राज्यों से कहीं अधिक है। इस कारण हिंदी कहने की तो करोड़ों लोगों की भाषा है पर साक्षरता के अभाव के कारण उसके विकास में बहुत कम लोग योगदान कर पाते हैं।

जाहिर है कमी सरकारी या गैर – सरकारी उपयों की नहीं, बल्कि उन पर अमल करने के संकल्प की है। यदि हिंदी के प्रयोग की वकालत करने और मंचों तथा जन संचार माध्यमों से दूसरों को हिंदी इस्तेमाल करने की सीख देने की बजाय सभी नेता, अधिकारी व बुद्धिजीवी अपने दैनिक प्रयोग के छोटे–छोटे कामों में हिंदी लिखने लगें तो कुछ ही वर्षों में हिंदी दिवस के आयोजनों पर लाखों रूपये खर्च करके हिंदी प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश में कभी अंग्रेजी दिवस नहीं मनाया जाता फिर भी इससे कोई भी इंकार नहीं कर सकता कि अंग्रेजी के इस्तेमाल में निरंतर प्रगति हुई है।



सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहणी, नई दिल्ली के वार्षिक उत्सव पर नृत्य प्रस्तुत करती बालिकाएं



रजि. न. 4767/87



हाट स्प्रिंग्ज में बल के शहीद कार्मिकों को श्रद्धांजलि देते महानिदेशक श्री एम.एन. समरवाल

31 दिसंबर, 1998

सी.आर.पी.एफ. समाचार

देश के
शांति रक्षक

केन्द्रीय रिजर्व
पुलिस बल

59वीं वर्षगांठ

28 दिसंबर, 1998



केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने इस वर्ष की लाल बहादुर शास्त्री हॉकी प्रतियोगिता एअर इंडिया को हरा कर जीत ली । बल की विजेता टीम को ट्राफी उप राष्ट्रपति श्री कृष्णकांत ने प्रदान की ।



केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी से खेलों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए बिरला पुरस्कार प्राप्त करती हुई कुंजा रानी देवा

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–12 अंक–8
31 दिसंबर, 1998
10 पौष, शक 1920

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं युनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72

प्रोसेस और प्लेटस :
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस
1728, कूचा दखनीराय दरियागंज, नई दिल्ली –2
दूरभाष : 3262279



इस अंक में

महानिदेशक की ओर से

के.रि.पु. बल – देश का शांति प्रहरी

नीमच में सरदार पटेल की प्रतिमा की स्थापना

Down the Memory Lane

Orderly System in CRPF

Preparing CRPF for the 21st Century

Fair Elections and CRPF

A Slap for the Toddler

RAF—A New Dimension in Policing

Human Rights & CRPF

CRPF in North-East

Record of CRPF on Human Rights Exemplary

They need us

CRPF in Jammu & Kashmir

CRPF and public order

Working with our men

के.रि.पु. बल – एक सुसंगठित बल।

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

महानिदेशक की ओर से



इस वर्ष केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपनी *59*वीं वर्षगांठ मना रहा है / के.रि.पु. बल में हम सब लोगों के लिए यह न केवल एक खुशी का अवसर है, बल्कि देश की एकता और अखंडता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता तथा देश में शांति और सद्भाव बनाए रखने में समर्पित रहने का संकल्प, दोहराने का अवसर है /

सन् *1939* में इस बल की शुरूआत एक बटालियन से हुई थी जबकि आज लगभग *1.6* लाख के बेड़े में इसकी *137* बटालियनों व संस्थाओं की संख्या सब मिलाकर *200* तक पहुंच गई है तथा यह केन्द्र सरकार के पुलिस संगठनों में सबसे विशाल बलों में एक बन गया है / अपने जन्म से ही इस बल को लगातार नक्सलवादी खतरों, अलगाववाद व आतंकवाद से जूझना पड़ा है / इसने हर कीमत पर देश में शाति व व्यवस्था बनाए रखी है / विदेशी आक्रमणों के समय भी यह बल भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर दुश्मनों का सामना करता रहा है / साम्प्रदायिक दंगों और प्राकृतिक आपदाओं के समय के.रि.पु. बल ने पीड़ित लोगों को राहत व मदद पहुंचा कर उन्हें पुन:स्थापित किया है और लोगों में भरोसा पैदा किया है /

हमारे कार्मिकों ने हमेशा ही अदभुत धैर्य, कर्तव्य–निष्ठा तथा सर्वोच्च बलिदान का परिचय दिया है तथा भारी संख्या में शौर्य तथा जीवन रक्षक पदक अर्जित किये हैं और बल का नाम रोशन किया है /

के.रि.पु. बल का गठन इस प्रकार का है कि इसकी प्रत्येक टुकड़ी में सभी धर्मों, प्रांतों, जातियों भाषाओं और क्षेत्रों की जनता का पूरा–पूरा प्रतिनिधित्व है / के.रि.पु. बल सही मायनों में भारत की विभिन्नता में एकता का प्रतीक है तथा राष्ट्रीय एकता और धर्मनिरपेक्षता का यह अद्भुत दृष्टांत है / हमें बल के इस धर्म निरपेक्ष तथा सार्वदेशिक स्वरूप पर गर्व है /

सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों पर काबू पाने के लिए गठित की गयी रेपिड एक्शन फोर्स की बटालियनों ने अपने अल्प कार्यकाल में ही जनता विशेषकर

अल्पसंख्यक समुदाय का भारी विश्वास अर्जित किया है । दंगा होने के समय आर.ए.एफ. कार्मिकों ने निष्पक्ष व तटस्थ रहकर अपनी ड्यूटियों को अंजाम दिया है तथा लोगों में विश्वास पैदा किया है । आज पूरे देश में कहीं भी, किसी भी आपदा के समय बचाव और राहत कार्यों के लिए सबसे पहले आर.ए.एफ को ही याद किया जाता है, यह आर ए.एफ. की बहुत बड़ी उपलब्धि है ।

पूरे देश में केवल के रि.पु. बल ही एकमात्र ऐसा बल है, जिसके पास अपनी दो महिला बटालियनें है । इन बटालियनों ने दंगों के दौरान जनता का विश्वास जीता है, श्रीनगर व असम में महिला आंदोलनकारियों पर नियंत्रण कर दिखाया है तथा श्रीलंका में शांति रक्षा बटालियनों के साथ काम करते हुए पूरे विश्व के सम्मुख यह सिद्ध कर दिया है कि भारत की नारी देश की एकता और अखंडता की रक्षा में किसी से पीछे नहीं है ।

खेल के क्षेत्र में भी बल के खिलाड़ियों ने देश और के.रि.पु. बल का नाम अंतर्राष्ट्रीय फलक पर चमकाया है । खेल के क्षेत्र में जी.एस. रंधावा, हरिचंद आर. एस. बल तथा खजान सिंह जैसे अंतर्राष्ट्रीय सितारों की अगली कड़ी में कुंजारानी, सोनामाचा चानू तथा परमजीत सिंह जैसे खिलाड़ी हमारी गौरवशाली परंपराओं को आगे बढ़ा रहे हैं ।

के.रि.पु. बल इस समय देश की एकता और अखंडता के सम्मुख खड़ी चुनौतियों से निबटने में पूरी तरह व्यस्त है, इस कार्य में के.रि.पु. बल के जवानों ने भारी संख्या में अपने प्राणों को आहूति दी है । इस मौके पर मैं अपने शहीद हुए सभी कार्मिकों के प्रति श्रद्धा से शीश नवाता हूं । अपने शहीद हुए कार्मिकों के परिवारों के कल्याण के प्रति हम पूरी तरह सजग हैं । मैं इन परिवारों को यकीन दिलाना चाहूंगा कि उनके हर संकट में हम हमेशा उनके साथ हैं ।

के.रि.पु बल को अपने अतीत और उपलब्धियों पर गर्व है । हम देश के सम्मुख खड़ी चुनौतियों के पति भी सजग हैं । देश द्वारा के.रि. पु. बल के प्रति व्यक्त किये गये विश्वास को पूरा करने के लिए हम अपने जवानों को सघन प्रशिक्षण दे रहे हैं । अपनी क्षमताओं को बढ़ा रहे है और अपने जवानों को नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बना रहे हैं ।

हम अपने उद्देश्य वाक्य "सेवा और भक्ति" को सदैव ध्यान में रखकर कार्य करते हैं और आगे भी करते रहेंगे ऐसी मैं आप सभी से आशा करता हूं ।

इस मौके पर मैं बल के सभी सदस्यों और उनके परिवारों को हार्दिक बधाई देता हूं ।

जय हिन्द ।

महेन्द्र सभरवाल

(महेन्द्र सभरवाल)

के.रि.पु. बल – देश का शांति प्रहरी

डी.जी. महापात्र, जन सम्पर्क अधिकारी, के.रि.पु. बल

देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने वाला केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल केंद्र का एक प्रमुख सशस्त्र बल है, 1939 में क्राउन रिप्रेजेंटेटिव पुलिस के रूप में गठित किया गया यह देश का सर्वाधिक पुराना अर्द्धसैनिक पुलिस बल है। 1936 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा मद्रास अधिवेशन में पारित प्रस्ताव के बाद भड़के प्रजामंडल आंदोलन से निबटने तथा देशी राजों रजवाड़ों को कानून व्यवस्था बनाए रखने में मदद देने के उददेश्य से 27 जुलाई, 1939 को सेना की तर्ज पर इस बल की एक बटालियन के गठन की स्वीकृति प्रदान की गयी और इस प्रकार इस बहुमुखी तथा बहुआयामीय बल की शुरूआत हुयी।

स्वतंत्रता के बाद संसद के एक विशेष अधिनियम के द्वारा 28 दिसंबर, 1949 को इसका नाम बदल कर सेंट्रल रिजर्व पुलिस कर दिया गया। इस अधिनियम के द्वारा इस बल को भारतीय संघ का एक सशस्त्र बल बना दिया गया। तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के नव स्वतंत्र हुए देश की भविष्य की जरूरतों के अनुरूप इस बल के महत्व को पहचान लिया था।

इस बल के विषय में संसद में बोलते हुए उन्होंने इस बल को आंतरिक सुरक्षा के लिए पैदा होने वाले किसी भी खतरे के समय स्थायित्व पैदा करने वाले बल के रूप में परिभाषित किया। भारत के राष्ट्रपति की ओर से बल को 19 मार्च, 1950 को ध्वज प्रदान किया गया।

के.रि.पु. बल का प्राथमिक कार्य आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने के लिए राज्यों को मदद देना है। अतः इस दृष्टि से इस बल की तैनाती का कोई निश्चित क्षेत्र नहीं है, तैनाती तथा संगठन की दृष्टि से एक लाख साठ हजार सदस्यों वाला यह बल पूर्ण रूपेण अखिल भारतीय स्वरूप वाला है।

1941 में अपना मूल प्रशिक्षण पूरा करने के बाद इस बल को चरखरी राज्य, मउ तथा इंदौर में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया। बाद में इसे आबू तथा देवली में जर्मन तथा इटली के युद्ध बंदियों की निगरानी के लिए तैनात किया गया। मार्च, 1942 में सिंध प्रांत के खलारपुर क्षेत्र में हूर उत्पातियों से निबटने के लिए के रि.पु. की एक टुकड़ी को तैनात किया गया। इस टुकड़ी ने कई उत्पातियों को गिरफ्तार कर उनसे हथियार तथा गोलाबारूद बरामद किया।

1950 के दशक में भुज, पेप्सू तथा चंबल के इलाकों में के.रि.पु. बल द्वारा चलाए

गए डकैत विरोधी अभियान को भारी सफलता मिली। बल ने स्वतंत्रता के बाद छोटे–छोटे राज्यों के भारत में विलय के समय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस बल ने विद्रोही जूनागढ़ राज्य तथा काठियावाड जैसे छोटे राज्यों द्वारा उस समय किए जा रहे विद्रोह को दबाने में अहम् भूमिका निभाई।

आजादी के तत्काल बाद बल की टुकड़ियों को कच्छ, भुज, राजस्थान तथा सिंध से लगी सीमा पर घुसपैठ को रोकने तथा सीमा से जुड़े अपराधों की रोकथाम के लिए तैनात किया गया। जम्मू–कश्मीर से जुड़ी पाकिस्तान की सीमा पर भी पाकिस्तानियों तथा देशद्रोही तत्वों की घुसपैठ को रोकने के लिए बल की टुकड़ियों को तैनात किया गया।

1956 में कच्छ सीमा पर पाकिस्तानी सेना के विरूद्ध लड़ते हुए बल की टुकड़ी ने छाबत टापू पर कब्जा करने में भारतीय सेना को महत्वपूर्ण सहयोग दिया। 1957 में बल की टुकड़ी को भारत तिब्बत सीमा पर तैनात किया गया।

1962 में चीनी आक्रमण के समय नेफा क्षेत्र में भी बल ने भारतीय सेना को कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग दिया। इस युद्ध में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए बल के आठ जवान वीरगति को प्राप्त हुए। 1965 के भारत पाक युद्ध के दौरान भी बल की चार कंपनियों ने रण आफ कच्छ की सरदार पोस्ट की एक पाकिस्तानी ब्रिगेड के विरूद्ध लड़ते हुए रक्षा की। के.रि.पु. बल ने भारी गोलीबारी करते हुए पाकिस्तानी ब्रिगेड को पीछे लौटने को मजबूर कर दिया। शत्रुपक्ष के कई सैनिक मारे गए। 1971 के युद्ध में भी बल की टुकड़ियां पूर्वी हाट तथा पश्चिमी सेक्टर में सेना के साथ लड़ी। बंगलादेश स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बल की दो टुकड़िया सेना के साथ लड़ी। साथ ही के.रि.पु. बल ने हजारों की तदात में पाकिस्तानी युद्ध बंदियों की निगरानी का दायित्व भी सफलता के साथ संभाला।



हाट स्प्रिंग्ज में बल के शहीद कार्मिकों को श्रद्धांजलि देते बल के महानिदेशक श्री एम एन. सभरवाल

21 अक्टूबर, 1959 को भारत तिब्बत सीमा पर स्थित हाट स्प्रिंग्ज (लद्दाख) में अपने से बहुत बड़ी चीनी सेना की एक टुकड़ी के साथ लड़ते हुए बल के 10 वीर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी। उनकी शहादत की याद में 21 अक्टूबर पूरे देश में पुलिस स्मारक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

देश के अद्धसैनिक बलों के इतिहास में पहली बार के.रि.पु. बल की 13 कंपनियों को देश के बाहर श्रीलंका में तमिल विद्रोहियों से निबटने में लगी भारतीय शांति रक्षक सेना के सहयोगी के तौर पर तैनात किया गया। लिटटे विद्रोहियों के साथ लड़ते हुए बल के 14 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा कई घायल। बल के एक वीर जवान को यहां मरणोपरांत वीर चक्र प्रदान किया गया तथा एक अधिकारी को युद्ध सेवा पदक। दो अन्यों को जिनमें एक महिला कांस्टेबल शामिल है सेना पदक से सम्मानित किया गया। देश में सेना पदक प्राप्त करने वाली यह देश की पहली पुलिस महिला कर्मी थी ।

इसके अतिरिक्त बल के कार्मिक संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों के तहत हैती नामीबिया, सोमालिया तथा बोस्निया हर्जेगोविना आर्दि में भी भेजे जाते रहे हैं।

सत्तर के दशक के अंत में जब कुछ आतंकवादी तत्वों ने त्रिपुरा और मणिपुर में शांति भंग करना शुरू किया तो के.रि.पु. बल की बटालियनों को वहां शांति स्थापना के लिए तैनात किया गया। इसी दौरान अपेक्षाकृत शांत माने जाने वाली ब्रह्मपुत्र घाटी में भी अशांति भड़क उठी। यहां बहुत छोटे पैमाने पर शुरू हुए इस आंदोलन ने आगे चलकर पूरे असम को अपनी चपेट में ले लिया। के.रि.पु. बल को यहां अपनी पूरी शक्ति के साथ न केवल कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया,

आपेतु यहां की संचार व्यवस्था को बनाए रखने का जिम्मा भी के रि.पु.बल के ही पास था। उत्तरपूर्वी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा स्थिति को देखते हुए बल की इस क्षेत्र में प्रतिबद्धता बहुत अधिक बढ़ गयी। इस क्षेत्र में कानून व व्यवस्था बनाए रखने तथा आतंकवादी गतिविधियों पर काबू पाने के लिए बल की 338 कम्पनियां यहां तैनात हैं। उत्तर पूर्व में आतंकवादी गतिविधियों पर काबू बनाए रखने में के.रि.पु. बल का बहुत बड़ा योगदान है। 1988 से 1998 के बीच उत्तर पूर्वी राज्यों में के.रि.पु. बल ने 12044 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। विभिन्न मुठभेड़ों में 177 आतंकवादी मारे गये। इस दौरान बल के जवानों ने 2353 घातक हथियार तथा 22858 गोलीबारूद भी बरामद किया। मगर इस सबके एवज में के.रि.पु. बल को भी भारी कीमत चुकानी पड़ी, यहां इस अवधि के दौरान बल के 300 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 517 गंभीर रूप से घायल हुए।

अक्टूबर 1988 में जम्मू कश्मीर में आतंकवाद का फिर आगमन हुआ। 1983 में स्थिति पर काबू पाने के लिए के.रि.पु. बल की कंपनियों को हवाई मार्ग से जम्मू कश्मीर पहुंचाया गया। 1990 से 1992 के दौरान यहां आतंकवाद पर नियंत्रण पाने के लिए के.रि.पु. बल को काफी नुकसान उठाना पड़ा। यहां आतंकवाद पर काबू पाने के लिए के.रि.पु. बल द्वारा किये गये प्रयासों की सर्वत्र सराहना हुयी है। साथ ही यहां के.रि.पु. बल स्पेशल आप्रेशन ग्रुप की मदद से स्थानीय पुलिस की दक्षता तथा नैतिक बल बढ़ाने में भी मदद कर रहा है। वर्तमान में के.रि.पु. बल की 198 कंपनियां यहां आतंकवाद का सामना करने तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात है। 1988 से यहां बल के जवानों को आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ा में 403 आतंकवादी मारे गय है तथा 3464 को गिरफ्तार किया गया। इस दौरान 2415 घातक हथियार तथा 130087 गोली बारूद भी बरामद किया गया। मगर इस सबके एवज में यहां बल के 160 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 1599 गंभीर रूप से घायल।



लाल चौक श्रीनगर में तैनात बल के जवान

के.रि.पु. बल की एक विशिष्ट शाखा रैपिड एक्शन फोर्स का गठन अक्टूबर 1992 में सांप्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निबटने के लिए किया गया। इसका गठन के.रि.पु. बल की मौजूदा 10 बटालियनों को परिवर्तित कर के किया गया। सांप्रदायिक दंगों तथा तनावों के दौरान तुरंत हरकत में आकर तथा निरपेक्ष ढंग से कार्य कर इस बल ने जनता विशेषकर अल्पसंख्यक वर्गों का विश्वास अर्जित किया है। इसकी तैनाती मात्र से संवेदनशील स्थितियां सामान्य होती देखी गयी हैं। दंगों, बाढ़, भूकंप, तूफान, डेंगू, प्लेग आदि प्रकोपों तथा दुर्घटनाओं के दौरान तुरंत हरकत में आकर बचाव और राहत कार्यों में आर.ए.एफ. के योगदान ने सरकार तथा इस बल के मानवीय पहलु को उजागर किया है।

के.रि.पु. बल देश का अकेला ऐसा अर्द्धसैनिक पुलिस बल है जिसकी अपनी दो महिला बटालियने है। महिला आंदोलनकारियों तथा बच्चों आदि से सुचारू रूप से निबटने के लिए 1986 में के.रि.पु. बल की 88 महिला बटालियन का गठन किया गया। जिस का मुख्यालय नई दिल्ली में था। दूसरी 135 महिला बटालियन का गठन 1996 में किया गया, जिसका मुख्यालय गांधीनगर, गुजरात में है। सांप्रदायिक दंगों आतंकवाद तथा आंदोलनों के दौरान अपनी प्रभावी भूमिका के लिए इन बटालियनों ने प्राप्त प्रशंसा अर्जित की। 88 महिला बटालियन की एक कंपनी ने श्रीलंका में तैनाती के दौरान काफी ख्याति पायी।

अशांत क्षेत्रों में अपने कर्तव्य को अंजाम देने के अतिरिक्त महिला बटालियन की लड़कियों ने राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में भी नाम कगाया है।

के.रि.पु. बल ने भारी तादाद में वृक्षारोपण के कार्यक्रम को अपनाया है। देश की आजादी की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में के.रि.पु. बल ने पूरे देश में 2,71,800 से अधिक वृक्ष लगाए। उड़ीसा में के.रि.पु. बल ने 1994 में भुवनेश्वर के पास 24000 हेक्टेयर क्षेत्र के बरबरा वन क्षेत्र को संवर्धन एवं संरक्षण के लिए अंगीकृत किया है। बल के कार्मिक अपनी तैनाती के बाद से इस वन क्षेत्र में अवैध कटायी तथा शिकार आदि पर पाबंदी लगाने में कामयाब रहे हैं। बल के कार्मिकों ने यहां से 63.9 लाख रूपये की अवैध वन सम्पदा को भी गत चार वर्षों में बरामद किया है।

के.रि.पु. बल ने सरकार तथा रोटरी इंटरनेशनल को उत्तर पूर्वी राज्यों तथा जम्मू–कश्मीर सहित पूरे देश में व्यापक स्तर पर 1997 तथा 1998 में पल्स पोलियो कार्यक्रम चलाने में मदद दी। बल के कार्मिकों ने पूरे देश में 80 लाख से अधिक बच्चों को पोलियो खुराक दी। बल ने जम्मू–कश्मीर तथा असम जैसे क्षेत्रों में समुदायिक कल्याण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया।

के.रि.पु. बल ने खेल तथा खेल प्रतिभाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। के.रि.पु. बल ने देश को जी एस. रंधावा, हरिचंद, ईश्वर सिंह, खजान सिंह, बन्नू सिंह, सुखवंत सिंह, सुरेश चंद, आर.एस. बल, एन. कुंजारानी देवी, जीवन ज्योति, एन, लक्ष्मी, राजाराम टोकस, तिलक थापा, परमजीत सिंह तथा रिग्जेन अंगमों जैसे चोटी के खिलाड़ी दिये है। जी.एस. रंधावा अर्जुन अवार्ड प्राप्त करने वाले पहले धावक हैं। इसी क्रम में हरि चंद, खजान सिंह, कुंजारानी देवी, आर.एस. बल तथा एन. लक्ष्मी अर्जुन अवार्ड प्राप्त करने वाले अन्य खिलाड़ी है। के.रि.पु. बल को 1979 से 1989 तक लगातार 11 वर्षों तक अखिल भारतीय पुलिस खेलों की एथेलेटिक्स चैंपियनशिप जीतने का गौरव प्राप्त है। इस बल के इंस्पेक्टर परमजीत सिंह ने इस वर्ष नवंबर में कलकत्ता में हुयी 38वीं राष्ट्रीय ओपन एथेलेटिक्स चैंपियनशिप में 400 मीटर दौड़ में फ्लाईंग सिख मिल्खा सिंह के 38 साल के राष्ट्रीय रिकार्ड को ध्वस्त किया। बल ने रोमांचक खेलों के क्षेत्र में भी कई अभियानों का आयोजन किया है।

27 जुलाई, 1939 को अपने गठन के बाद से अब तक के.रि.पु. बल ने एक जोर्ज क्रास (जी), एक वीर चक्र, एक पद्म श्री, तीन किंग्स पुलिस मेडल फार गैलेंटरी, 49 राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं तथा शौर्यवीरता के लिए पुलिस फायर सर्विस पदक, 193 शौर्यवीरता तथा विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक, 1518 शौर्यवीरता तथा सराहनीय सेवाओं के लिए पदक, 9 विशिष्ट सेवा मंडल, 1 युद्ध सेवा मंडल, 5 सेना मेडल, 75 प्रधानमंत्री के जीवन रक्षा पदक, एक जीवन रक्षा पदक तथा पांच आई.पी.एम.जी. प्राप्त किये हैं।

1939 में एक बटालियन से गठित किया गया यह बल आज 137 बटालियनों, 12 सेक्टरों, 28 रेंजों, 30 ग्रुप केंद्रों, 8 प्रशिक्षण संस्थानों तथा तीन बेस अस्पतालों का विशाल परिवार है।

के.रि.पु. बल का स्वरूप अखिल भारतीय है। इसमें देश के हर हिस्से तथा हर धर्म के लोग हैं। यह सही मायनों में एक राष्ट्रीय बल है। इसका राष्ट्रीय तथा निरपेक्ष स्वरूप

हो इसकी शक्ति है। इसी स्वरूप के कारण इसे जन विश्वास तथा सहयोग प्राप्त है।



बल के इंस्पेक्टर परमजीत सिंह ने *38*वीं राष्ट्रीय ओपन एथलेटिक्स चैंपियनशिप की *400* मीटर दौड़ में फ्लाईंग सिख मिल्खा सिंह के *38* साल के रिकार्ड को ध्वस्त किया तथा बैंकाक एशियाई खेलों में भी कांस्य पदक प्राप्त किया

नीमच में सरदार पटेल की प्रतिमा की स्थापना

"केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल अन्य अर्द्धसैनिक बलों के साथ जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा चलाये जा रहे अघोषित युद्ध का दृढ़ता से सामना कर रहा है। उत्तर पूर्वी राज्यों में भी विद्रोही गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए के.रि.पु. बल की कंपनियां भारी संख्या में तैनात हैं। इन क्षेत्रों में अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए बल के कार्मिकों ने भारी संख्या में बलिदान दिये हैं।

6 दिसम्बर, 98 को नीमच (मध्य प्रदेश) में सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा का अनावरण करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि सरदार पटेल एक महान देश भक्त थे। उन्होंने हमेशा सही रवैया अपनाया तथा वही किया जो उन्हें राष्ट्रहित में ठीक लगा। सरदार पटेल को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उन्होंने कहा कि सरदार पटेल इस महान बल के संस्थापक थे, इस बल के जवानों और अधिकारियों को उनकी देश के प्रति समर्पण की भावना तथा जीवन से प्रेरणा लेकर अपना कार्य करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जो लोग देश का अहित करने पर तुले हुए हैं या इस दिशा में

षडयंत्र रच रहे हैं, उनके प्रति लोकतंत्र की निष्ठाओं को अक्षुण्ण बनाए रखते हुए तथा लोकतंत्र के मूल्यों में किसी भी प्रकार की कमी न लाते हुए कठोर व्यवहार करना शासन का कर्त्तव्य है। उन्होंने कहा कि इस दिशा में सफलता पाने में सी.आर.पी.एफ. जैसे अर्द्धसैनिक बल का बहुत बड़ा योगदान है और अपने कर्त्तव्य के इस निर्वहन के लिए इस बल ने बहुत बड़ी कुरबानियां दी हैं।

श्री आडवाणी ने कहा कि राष्ट्र के प्रति भक्ति और समर्पण के भाव के साथ-साथ राष्ट्र के हित में कठोर कदम उठाने की क्षमता जिस नेतृत्व में होगी, वहीं वास्तव में देश को आगे ले जा सकेगा। उन्होंने कहा कि बल के कार्मिक जिन कठिन परिस्थितियों में रहकर देश सेवा में जुटे हैं, उसके लिए पूरे देश के मन में उनके लिए आदर का भाव है। उनके इस कर्त्तव्य भान को देख कर ही यह विश्वास पैदा होता है कि इनके सहारे देश सुरक्षित है।

इससे पूर्व बल के महानिदेशक श्री एम.एन. सभरवाल ने गृहमंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि स्वतंत्रता के बाद जब इस बल को भंग करने का विचार उठ रहा था तो सरदार पटेल ने इस बल के दूरगामी प्रयोग को दृष्टि में रखते पर इसे बनाए रखने का बल दिया।

श्री आडवाणी ने नीमच स्थित बल के केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय का दौरा भी किया। श्री अडवाणी ने के.रि.पु. बल की छठी अंतर सेक्टर दौड़कूद प्रतियोगिता के समापन समारोह में भाग लेकर विजेताओं को पुरस्कार भी बांटे।



नीमच में स्थापित सरदार पटेल की प्रतिमा

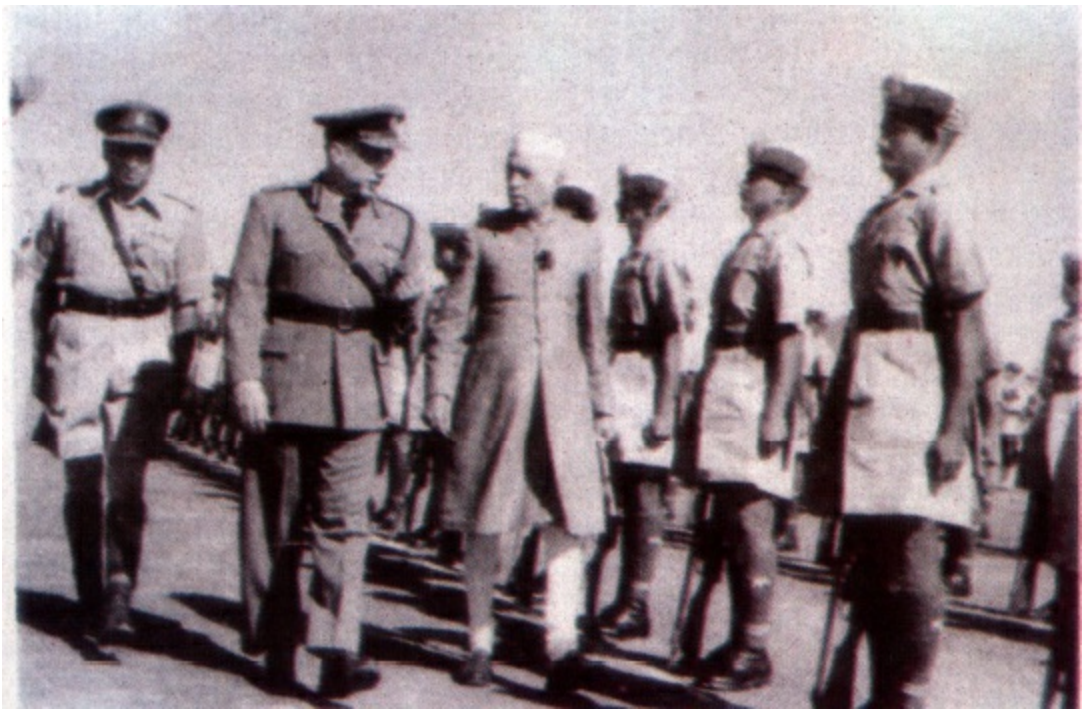
बाद में बल के उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.पी. सिन्हा ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Down the Memory Lane

—V.G. Kanetkar, DG, CRPF (Retd.)

To write about an organisation like the Central Reserve Police Force which I left almost 30 years back is indeed a difficult task particularly on account of the Phenomenal growth, both in numbers and duties, that has taken place in it during all these years. I shall however try to do it, without any claim to comprehensiveness, with the information which I have gleaned from reports which appeared from time to time in newspapers and magazines about the CRPF.

I still remember 28th June 1963 the date on which I took over charge as the first independent Inspector-General, CRPF, at New Delhi. My office was in an old building and the month being June, my own room was hot and humid and full of noise made by a water-cooler. Till I appeared on the scene, this Force was being looked after by the Inspector-General of Police, Delhi in addition to his own job. There were only 14 Bns plus three under raising and the IG was assisted by two DIGs, one Mr B.B. Mishra, an IP officer on deputation from Orissa and located at Ajmer and the other Mr. M.N. Chaturvedi, an IPS officer from UP and stationed at Delhi. I took some time to get an insight into the working of this expanding agency with all its trained Bns scattered at various places in the country but mainly on the borders and a few assisting some States in the maintenance of law and order. Accompanied by the two DIGs in their respective charges, I paid visits to as many detachments as possible and saw how our personnel worked in their respective areas of operation and tried to know what their problems, difficulties and inconveniences were. The main feature which struck me was the discipline, loyalty to duty and the morale of the personnel all of which were of a high order. I could also notice that a large part of the credit for this state of affairs went to Mr. Mishra who being posted to CRPF much earlier and being the senior of the two DIGs, bore a heavy burden of work subject of course to the control of the IGP Delhi.



Pt. Nehru inspecting the guard of honour of CRPF at Neemuch in 1954

In the year 1967, the Govt. of índia, after taking into consideration the increasing number of calls made on the CRPF from the states as well as the needs on the country's borders, decided to take over 35 índia Reserve Bns which had been raised by the states but whose expenses were borne by the Centre. Merging such a large number of units drawn from different states with their own rules about discipline, administration, was indeed a very tough job but within the space of few months it was successfully accomplished with the assistance of my officers who took over command of the new Bns and soon brought them in line with our original 17 Bns. By the middle of the year 1968 we had a strength of 52 Bns excluding 3 Signal Bns and a few Training Institutions. My Inspector Generais post was also elevated to that of a Director-General in August. Here I must mention one very salient feature of this growth. Until then the practice had been for the Commandant of each Bn to send his Coys on detachment with an Asstt. Commandant heading it. The Commandant used to visit them off and on, a system which was disliked by the Army which pressed us to change it by asking the Commandant to remain with his detachment all the time leaving housekeeping functions to the Asstt. Commandant at the Bn HQrs. There was considerable sub-stance in this demand and after a good deal of thinking I thought of the Group Centre scheme which, I am very happy to

note, is continued even upto today. The strength of the GCs now is 30, an increase of 13 since I left. This was of course to be expected with the number of Bns now going up to 137.



Induction of Mahilas in CRPF added a new dimension to its character

I have used the word phenomenal while describing the growth at the beginning of this article and it is certainly not an exaggeration. Of the current strength of 137 Bns, 119 are executive Bns, 10 Rapid Action Force Bns, 2 Women Bns, 5 Signal Bns, one Special Duty Group in addition to 8 Training Institutions and 3 Base Hospitals. The number of supervisory officers from top to bottom has also increased proportionately. This increase has been necessitated, as indicated above, by the increasing number of request from various states with more Bns now positioned on our borders to deal with militancy and insurgency and the remaining spread all over the country to deal with local problems affecting law and order. There are reports that a proposal is under consideration to add another 20 Bns to the Force.

Old hands like me and so many others do feel pain and anguish when we hear of casualties fatal and non-fatal which keep occurring from time to time in the Force but such feelings are counterbalanced by the reports that our jawans and officers are standing up to the strain without any fall in morale or loyalty to duty as seen from the very large number of medals and other

decorations awarded to them. It is also very heartening to note that several Bns, particularly the RAF, are doing with success so many other jobs such as social forestry, public health and helping people in distress on account of floods or land slides or other natural misfortunes. It is no wonder that the CRPF has on the whole become a popular and trusted Force and always relied upon to do its work in earnestness not marred by any feelings of partisanship of indifference.

The painful fact however remains that a major number of casualties have taken place and are taking place on the borders of our country in the west, north-west and north-east where our personnel are engaged in fighting determined and fanatical people bent on destabilising and fracturing the country. With no respite in sight, one wonders whether the time has not come to assess objectively the causes of these long standing bloody strifes and to devise some radical measures to bring them to a stop. Perhaps a lesson could be drawn from what is happening now in Northern Ireland and Middle-East where there are signs that bloody feuds between Protestants and Catholics and between Jews and Arabs who have been at war with each other for the last so many years are being gradually brought to negotiating tables to discuss peace. The outlook there appears bring at the moment and the same easing of tensions might perhaps be brought about here too with some bold and imaginative moves based on officers of give and take.

If such a change so devoutedly wished for materialises, a force like the CRPF, though reduced in size, will have only to deal with occasional internal disturbances and rest of the time they can be utilised for so many urgent nation-building activities such as literacy, games, rural development, public health and so on.

Till then, associated for over six years as I was with this great Organisation, I wish all its officers and men the best luck. I have absolutely no doubt that howsoever difficult the situations that might confront them, the CRPF will deal them with thorough impartiality, high sense of duty and praiseworthy discipline.

Lastly I must mention here a dream which I have cherished ever since I joined the CRPF. It is setting up, on the lines of defence services, a canteen stores department for members, serving or retirees, of all central police forces. It will be a boon particualrly to a very large number of retirees with modest pensions.

Conflict between Politics & Administration

Orderly System in CRPF

–N.S. Saksena, DG, CRPF (Retd.)

There is often a serious conflict between politics and administration and a senior political executive like the Prime Minister or Chief Minister is judged by the choice he makes. During my tenure as DG CRPF one such incident is permanently embedded in my memory. Mrs. Indira Gandhi had come to power on the slogan of 'Socialistic structure of society' and the word 'socialistic' had even been inserted in the Constitution. In order to please the Prime Minister the Finance Secretary prepared a note saying that the orderly system in para military forces was a remnant of feudalism and it should be abolished. Its one more merit was financial savings. This note was approved by the then Home Secretary and it was handed over to the then Special Secretary, Mr. K.R Rustamji to be discussed in a meeting of all Central police chiefs of para military forces.

The persuasive language of the note led most police chiefs to agree to the proposals with a few modifications. I was faced with expressions like 'democracy', 'feudalism', 'out-of-date', wrong ideas of discipline' etc. These catch-phrases were meant to take the place of cool logic. My initial reaction was violent against this note. As I had 2 days notice so I spent several hours to collect my ideas. I decided to speak last after several approvals. My vehement opposition was last due to several reasons.



Firstly the two words ‘democratic’ and ‘socialist’ have been considerably misused by several persons, when discussing the question of Associations and orderlies in the police. The armed forces, para-military forces and even the police have to be, in the ultimate analysis, under democratic control. This does not mean ‘democracy’ in the internal working. Though we may hate the word ‘feudal’ but all efficient armed forces have been organised on feudal lines. There is no internal democracy in their day-to-day work.

Secondly another misused expression is out-of-date. It is not easy to define the concept of out-of-date as it differs from time to time and even in the same period of time. What is out-of-date in the IAS may not be out-of-date in the para-military forces and vice versa. For example the standard of discipline required in the Civil Services is much less than the police in the para-military forces.

Third; tragic consequences have ensured because people reared in one discipline have tried to impose their ideas on other disciplines. For example chaos would ensure if the Civil Services were run on the same lines as the

Vice-Chancellor of a University runs his team of professors, readers and lecturers. Similarly chaos would ensure if the police or para-military forces are run like the Civil Services.



CRPF contingent deployed in a difficult terrain of North-East

Fourth : as the USSR was the only socialist country in the world then having an experience of socialism for over 60 years. I promised to send a separate note on the Soviet Armed Forces, with special reference to codes of discipline, orderlies etc. I added that the Soviet system was not a suitable model for India. But neither was the UK or USA system a suitable model for us.

In my subsequent note on Soviet Armed Forces I made the following points.

SOVIET ARMY FROM 1914 ONWARDS

The defeat of Russia at the hands of Kaiser's Army in 1914-1917 was due to several causes but the final collapse came because the soldiers refused to obey the officers and the army disintegrated. This was due to deliberate efforts of the Bolshevists to denigrate the officers, who were ridiculed for being from the landlord class.

Having accomplished the destruction of the Tsarist Army the Bolshevists were faced with a serious problem when they had to organise their own Red Army to fight the Civil War. In the first flash of revolutionary spirit : (i) badges of rank were abolished; (ii) saluting was almost done away; (iii) the dis ciplinary powers of officers were drastically curtailed and (iv) orderlies were done away with.

To quote from Lidell Harts book on The Soviet Army'. However, the first serious test on the battlefield in Finland in 1939-1940 apparently convinced the Army leaders that there were serious deficiencies in officer-man relationships which needed correction. And the corrections made went still further towards the complete isolation of the officer class from the rank and file. A new table of officers' ranks was introduced; and a new Disciplinary Code came into effect on 25th October, 1940. It demanded instant and unquestioning obedience to all orders, and instructed officers to use force to ensure compliance. Saluting was made compulsory, and punishments for infringements of discipline became harsher than ever before. 'In the Army', wrote a military commentator, 'the superior must be independent of his subordinates. The greater the dependence of the superior on the subordinate, the less the former will be able to exercise his functions of superior'. The collective submission of complaints was declared to be tantamount of mutiny. No soldier was allowed to speak to a senior officer without permission of his immediate superior, and had to stand to attention when spoken to."

Even the word officer had been abolished from the Army. To quote again from the book: "In 1942 the word 'officer', which had been abolished during the Revolution, was restored to the Army, and invested with an aura of sanctity in official propaganda. Early in 1943 the uniform of all ranks was adapted to introduce epaulettes : the officers being of silver and gold braid and the other ranks' of ordinary cloth, according to arm of service. Privileges continued to be awarded to officers without corresponding rewards for the men except in the field of awards and decorations for bravery. But even here they were carefully graded according to rank."

The system of orderlies was restored with vengeance. The higher the rank the larger the number of orderlies - an officer is entitled to have and they do all kinds of domestic service.

This was not being done merely to humour the officers. The officers

were made to earn their ranks by improving their knowledge. The Government of USSR found that leadership in armed forces needed skills of a high order and there was no incentive to acquire these skills unless the officer class was given rewards. To become a Colonel in the Soviet Army a person could not afford to have any interests in life except his job. The family came low in the scale of attention. It was just work, work and work. But the rewards were high.

To cut the story short when the file went to the Prime Minister she accepted my submission and the system of orderlies remained as laid down in the CRPF Act.

Preparing CRPF for the 21st Century

—S.D. Pandey, DG. CRPF (Retd.)

But for the benefit of hind sight provided by my ten years of retirement, I would not have felt equal to writing any thing now about this most unique force which I have had the privilege of being associated within a short tenure.

From whatever little information I shall manage to pick up in my retreat ‘between home and forest’ it is obvious that CRPF has changed, since ‘my time’ almost beyond recognition. This is as it should be both unavoidable and essential. However, if we sincerely wish to prepare the force for the 21st century. We cannot be content merely with changes that are brought about, almost automatically, by the sheer force of outer circumstances. The coming century calls for some urgent and deliberate changes - carefully thought out and boldly implemented.

Linear expansion there is bound to be - what with increasing population, internal strife and external tensions. Neverthless, if we continue to play passively what we once dared to call, in one of our presentations to the Home Minister, the numbers game, we will prove ourselves to be bad planners for the coming turbulent times. There has to be a stop to the convenient practice of rushing CRPF companies across the subcontinent -

even for ‘good’ reasons - without any consideration for what it involves in terms of work fatigue and training loss of the personnel but presentation was crude and even naive. I imagine that with the availability of more sophisticated aids it should now be possible to make a more convincing case for stopping the continued operation if the ‘expediency principle’’ which should be given an unfearful burial along with the 20th century.



Communication will also play a vital role in 21st century

This brings me to the point which should perhaps have been made in the very beginning. The first preparation for the 21st century must consist of quantifying the challenges that are likely to come in it - threat perceptions on all fronts, with a thorough socio political study of the national and international scene. Needless to stress that the matching requirements of internal measures in the force will be the necessary, operative, part of this study. This exercise should be undertaken under the guidance of best available expertise and it must include a wide consultation both within the force and with a cross section of the ultimate users of the force - the general public.

I fancy that any sincere in-depth study on the futurstic lines suggested above will highlight the problem of training of the personnel. That, incidentally, is the most serious casualty of our infamous numbers game. Even before we try to delineate on the updating of our training in view of the new challenges we must take note of the incessant compromises on the currently prescribed training. The tendency to keep the record straight’ by

taking resort to a blantaly statistical view towards the number of training days disregarding the numerous interruptions is too well known to be ignored. Not so well known in the effort to cover up the inadequacy of regular training by slogans like on the job training'. And as for the 'government', it can always be quite 'aloof', on the traditional colonial pattern and not be really bothered about the details of what goes on behind the scene. More serious than the force that the tax payer says for the operations of any inadequately trained body of men is the cost, in human terms, borne by the sufferers of unavoidable professional lapses which again are too well known to be covered up. Should this go on in the 21st century, it would remain, for CRPF, merely an astronomical gimmic highlighted on fancy calender that will surely appear everywhere when the big day dawns.



CRPF deployment in Punjab during turbulent times

A prophet of doom would stop here and go no further on the theme. I have, however, struggled hard to remain an incurable optimist and hold on to the view that, in the last analysis, it is not the politicians, the bureaucrats and the so-called leaders of men who are running that universe. With the glimmer of hope, that this conviction gives, I beg to suggest that the coming difficult times take for serious attention to a new dimension in the training of men-understood as human beings and not just ranks' and numbers'. This consists in introducing themes and techniques zeroing on the man 'behind the machine'. Lest there be a misunderstanding, I must clarify that there is no intention to downgrade the importance of strictly professional training. It has been deliberately dealt with prior to this offer aspect. The man must

have the best possible machine along with all its accessories. He must also know it thoroughly etc. etc. But all this will still remain inadequate if his training does not keep him to be a better man behind his machine - a better, real, leader behind his men. Better men is indeed the need of the hour -men who are as capable of sacrificing their today for the tomorrow of their fellow men as of saying, when necessary, ‘thus far and no further’.

How can this dimension of training be integrated with the normal training syllabi of various ranks ? I do not know and I do not claim to be a one man training commission. What I do know is that firstly, in view of the challenges that the 21st century is likely to throw up this endeavour cannot be left to the leaders of cults and sects or mendicants living in caves. And, secondly, that unless deliberate,, immediate and effective steps are taken to alter the current situation in this respect and some others mentioned before some future historian of the national law and order scenerio may say of CRPF that, in a negative way, ‘the more it changes the more it remains the same’.

RESTRUCTURING CRPF

TO MEET THE CHALLENGES OF THE 21ST CENTURY

—Dr. S. Subramanian
DG CRPF (Retd.)

Central Reserve Police Force (CRPF) is celebrating its 59th Anniversary on December 28, 1998; This is not a mere chronological milestone but signifies an eventful saga of successes and sacrifices. CRPF’s distinguished service to the Nation has earned it the sobriquet- ***Most Reliable Police Force.***

Eastablished in 1939 as ***Crown Representative’s Police,*** with one Battalion strength, it has today grown into a mammoth organisation of 137 Battalions. Much of this growth was *ad hoc* and unplanned; ten/twenty Battalions were added at a time at various stages, to meet the security needs of the Country. Such an unplanned growth, created many administrative and

organisational problems. The Force was and is, constantly on the move, without respite. There are over 20,000 personnel in Jammu & Kashmir and 30,000 in the Northeast. Fed up with constant moves, CRPF personnel, derisively describe themselves as ***'Chalte Raho Pyare Force',*** Adhocism has become the creed. There is urgent need to restructure CRPF to face the challenges of the 21st century.

Security situation in the 21st century will continue to cause us concern. With the collapse of Bipolar world power structure and after Pokhran-ll, India's position as a dominant regional power in South Asia is being grudgingly accepted. Success brings its own enemies. Unfriendly powers, piqued at India's progress, are doing their best to destabilise India and consequently, we are having 'Proxy War' in J&K and 'Low intensity Conflict' in the Northeast. With the continued economic development and Democracy taking firm roots, the expectations of the common man have increased and he is ever disgruntled at the slow progress and divisive forces exploit this discontent and large scale disturbances take place on class, caste and communal considerations.



CRPF. Mahilas during training session

Failure of Political leadership to meaningfully respond to these danger signals, give birth to political violent movements, which are in turn exploited by the vested interest to destabilise India. So far, responses to

these challenges to Internal Security, have been one of adhocism. With threats to National Security assuming alarming proportions, we cannot afford to divert the Army and Border Police Formations to internal security tasks. CRPF, with its experience of working closely with the State Police Forces and Civil Administration, should be entrusted with the task of tackling internal security problems. This would call for a complete overhaul of the Mission, Goals, and organisational structure of CRPF.



Shri K.P.S. Gill addressing a Seminar on "CRPF in the year - 2003"

The Mission of CRPF in the next Century would be :

(a) Protect the Territorial integrity and Sovereignty of the Nation by neutralising all types of threats to internal security; and

(b) Maintain Peace and Tranquility in the Country, by assisting Civil Authorities and enable the citizens to enjoy their Fundamental Rights and to realise their full potential for economic and personal growth without hindrance or interference from any quarter.

To achieve this mission, organisational Goals are to be recast as : Specialisation in effective Management of Internal Security; Create capacity to render support to Defence Forces during external aggression; and Prepare to provide assistance to Civil Authorities to deal with: (a) Communal Riots;

(b) Serious disturbances affecting law and order; and (c) Natural Disasters and major calamities.

To achieve these goals, functional reorganisation of CRPF into following wings will be necessary. Internal Security Wing; Defence Assistance Wing; Law and Order Wing; Rapid Action Force; and Civil Emergency and Relief Wing.

ADMINISTRATIVE RESTRUCTURING

As every personnel is entitled to two months leave and 15 days casual leave in a year and with one sixth of the Force under training at any time, and vacancies arising due to retirements and casualties, the deployable strength of the CRPF is only 55% of the sanctioned strength. To meet its commitments, CRPF needs a sanctioned strength of 2.5 lakhs. This strength should be spread out in the Country into 25 Sectors, under the command of an IGP with a strength of 9,000 personnel each. This will enable CRPF to take on tasks around the country obviating the present practice of moving personnel over long distances across the Country.

Authority and operational responsibility should be decentralised. The Director General located at Delhi, will confine himself to Policy matters; there will be five Regional Additional Directors General forthe five Geographical Zones with full autonomy to take administrative and operational decisions. Each zone will be further divided into Five Sectors under an IGP each, with 9,000 personnel under him comprising of:

Internal Security Wing

2 groups x 1,500 3,000 personnel

Law and Order Wing

2 groups x 1,500 3,000 personnel

Rapid Action Force

1 group x 1,300 1,300 personnel

Civil Emergency & Relief Wing

1 group x 700 700 personnel

Defence Assistance Group

1 Group x 1,000 1,000 personnel

Total 9,000 personnel

Thus, 25 sectors will have 9,000 x 25 = 2.25 lakh personnel. Director General will have 25,000 personnel directly under him to provide personnel for Training, Communications, Computer, Medical and other tasks to the zones and sectors on need basis.

INTERNAL SECURITY WING

All personnel on enlistment, will first join the Internal Security Wing and serve fo. five years. As young personnel are needed to fight divisive Forces, the maximum age limit for enlistment will be fixed at 21 years and High School graduation will be the minimum educational qualification.This wing will be equipped on par with Infantry units of the Indian Army and personnel will be trained in Jungle and Desert warfare and counter insurgency operations. As the present battalion structure results in wastage of manpower, this wing will be organised into ‘groups’ each with four fighting teams, a support weapon team, an intelligence and communications team, a bomb disposal and explosives team and an Headquarters team.

DEFENCE ASSISTANCE WING

During external aggress.on, as the Defence Forces move forward, there is need for a Para Military Force to safeguard and maintain order and peace in the rear areas. A dedicated group in the CRPF, will be tasked for this purpose. This group will normally train with an Army Division in the Sector and will be patterned on the Mechanised Infantry Battalion of the Army. It will remain stand-to and will not be deployed on other duties except in emergencies. This group will be familiarised with International conventions pertaining to Prisoners of War and Occupied areas etc. Personnel will move from internal security wing to this wing and serve for two years.

LAW AND ORDER WING

After service in the Internal Security Wing and the Defence Assistance Wing, after a Conversion Training, personnel will move over to Law and Order Wing. They will be armed with non-lethal weapons and Mob Dispersal equipment and given specialised training to deal with demonstrations etc. in a Democracy. A Mahila Component will be provided in each of the operational units of this wing.

RAPID ACTION FORCE

This Specialised anti-communal riot group of the CRPF, will continue to perform its present role. It will be restructured to provide capability to act in small self-contained units. The personnel will be drawn on deputation from the Law and Order Wing and will receive specialised training in handling communal riots and rendering relief and succour to the riot victims. One third of this Force will consist of Mahilas.

CIVIL EMERGENCY AND RELIEF WING

As Natural calamities strike our country with sickening regularity and as there is no specialised agency to deal with them, this wing of the CRPF will fill this void. Deputationists from the Law and Order Wing, chosen for their specialised skills, will be trained and equipped to deal with different kinds of natural disasters.

DEPLOYMENT OF CRPF

At present, the States and Union Territories have a tendency to requisition CRPF, more as an alibi than based on actual needs. Consequently, there is lot of wastage of manpower. The sector IGPs will be made responsible for keeping close touch with local developments and deploy the Force lo-oaHy to meet the situations. If more strength is required, it will come from within the Zona. IGP will be responsible to train and keep his personnel in operational readiness and he will have the freedom to deploy them on need basis, within his sector. Similarly, Zonal Additional D.G.P can deploy the personnel within his zone.

PROBLEMS OF MAHILAS

CRPF is the only C.P.O. having Mahila Battalions. The problems of women as they grow into middle age are manifold and they will not be able to continue to perform ‘Fighting Jobs’. As it will not be possible to accommodate all Mahilas in ‘Desk Jobs’, there should be a provision to allow the Mahilas to retire after 15 years of active service on Full Pension.

WELFARE AND CAREER PLANNING

These two are the most neglected areas in CRPF at present. The Career of personnel should be planned on a scientific and enduring basis to enable them to develop organisational citizenship. To make the personnel identify themselves with the well being of the Groups to which they belong, there

should be permanence of the location of the Headquarters of groups and all welfare activities like separated Family accommodation, Medical and Educational facilities are to be created around the Group Headquarters. Personnel should be encouraged to build their homes in their vicinity. CRPF personnel should get all the facilities enjoyed by the Army Jawans.

GRIEVANCE REDRESSAL

There is need for an independent 'Ombudsman' for CRPF to look into the grievances of personnel as the traditional system of senior officers dealing with this has woefully failed.

ACTION PLAN

To implement these suggestions, a competent Expert Group should be constituted to work out an action plan and decide on modalities for smooth restructuring and transition.

A professionally competent and vibrant CRPF will be an asset to the Nation and will help the Citizens to prosper by maintaining peace and tranquility in the Nation.

FAIR ELECTIONS AND CRPF

—S.V.M. Tripathi, DG CRPF (Retd.)

The "largest democracy In the world" has an enviable record of holding free and fair elections despite copious charges of malpractice, which are leveled from various quarters. The Central Reserve Police Force has always played a very major role in this achievement.

The last countrywide polls were held from 16th February to 7th March 1998. The assembly elections in Rajasthan (200 seats), Delhi (70 seats), M.R (320 seats) and Mizoram (40 seats) were held on November 25,1998. The logistic arrangements involve stupendous mobilisation of manpower, including security and polling personnel, and material. The Central and State governments and CRPF have achieved commendable expertise and dexterity in handling these tasks. It has to be acknowledged, however, that a very substantial part of election work is carried out by the state personnel

who may not be fully familiar with the work entrusted to them and some lowering of performance standards has been inevitable. Nevertheless, in an overall perspective, the elections have been managed quite competently.

The difficulties faced by the managers of elections, from Chief Election Commissioner down to the lowest functionary, are escalating by each day. A tendency to flout the law is increasingly evident, especially on the part of political functionaries and a substantial segment of society wielding money and muscle power. New challenges in the domain of law and order are being added. Widespread turbulence in Assam, Andhra Pradesh, Bihar, Manipur, Tripura and Jammu and Kashmir to name only a few, have increased the tribulations of the peace keepers in the country. Learned debates on criminal-politician-government servant nexus not-with standing, very little concrete action has been taken for preventing persons with criminal background reaching positions of substantive authority. Public confidence in the integrity and fairness of the system, due to a myriad to reasons, is low.



CRPF deployment during J&K election

For maintaining security and order during elections the Central government makes a substantial direct contribution by deputing its armed forces. In this they depend heavily on CRPF. In the past most States were extremely reluctant to seek outside help as it was seen as a reflection on the competence and dependability of the state police. I am aware of a feeling of

justified pride in some states which, even now, display self-confidence and avoid dependence on outside forces. At present, however, a number of States, sometimes on genuine grounds, but also occasionally as an alibi, inflate their demand for central forces. Secondly, in most cases, the central government fails to resist exorbitant demands. I am aware of some instances when central authorities have insisted on sending more outside forces than were asked for. This action stems from their perception, which is debatable, that the State government may subvert the electoral process and that the presence of central forces may thwart such an effort. In the end, more outside forces may land up in States than are actually required or can be efficiently deployed.

During the last Lok Sabha elections Punjab had demanded outside forces, which came to 33% of the strength of State police while Bihar had asked for at least 1,000 companies of central paramilitary forces, which was approximately 95% of the strength of the Bihar police. Other states had also requisitioned varying, but substantial, levels of deployment. According to a press report (The Hindu, October 25,1998, page 4) a total of 56,847 polling booths were to serve the voters in the Assembly elections in Madhya Pradesh. Of these 12,667 booths were classified as sensitive, according to the State Election office. A strong feeling was expressed that care should be taken to deploy “effectively” neutral central forces at sensitive polling booths. Doubtless, all States going to Assembly polls asked for substantial central forces.

Our Constitution has clearly placed the responsibility for maintenance of public order, including orderly conduct of elections, on the States. Even when, after use of extraordinary powers of the Union, the governance of a State is brought under unitary control, the executive machinery hardly changes. The central armed forces function under the guidance and control of the State authorities. Thus it is the State machinery, which actually carries out the election process.

Amongst the armed forces of the Union can be counted the Central Reserve Police Force, Border Security Force, Central Industrial Security Force, Indo Tibetan Border Police, Railway Protection Force, Assam Rifles and Rashtriya Rifles. The last two named are not ordinarily available for election duties. Of the remaining only CRPF is specifically meant for handling internal security and its units are not mandated for any other fixed

tasks. In practice this is the principal central force which is deployed for elections. Even after curtailing some essential commitments of all these forces and utilising all reserves, it would be very difficult to spare more than 100 battalions or 600 regular companies for election duties, in view of the present internal security commitments. For the rest Home Guards, state armed police units and ex-servicemen are utilised.

There is a tendency to depend too heavily on the armed forces of the union in the context of secure and orderly polls. Induction of too many diverse forces, which may not be fully trained and equipped to handle this sensitive, and essentially mobile duty, is unfair. It also dilutes the performance of the man-dated tasks of these forces. Thus if BSF is thinned out from border areas for election duties, it may lead to enhanced hostile infiltration and consequential deterioration in the scale of militancy or terrorism. For CRPF or any other central paramilitary force to perform to its optimum potential familiarisation with the problems and terrain specific to its deployment is essential. Rapid movements of units, used as a force multiplier, rules this out, besides creating tremendous physical and mental strain on the personnel. These forces can only be effective if they are provided with timely actionable intelligence, given clear-cut tasks, professional autonomy and impartial directions by the State authorities. Such a happy situation is seldom found in the field.



CRPF men assisting the election officials for the conduct of smooth and fair elections in J&K

The positive qualities of CRPF, such as lack of vested interest, impartiality, secular outlook, stronger leadership, better arms and other equipment and professional effectiveness can be largely neutralised if they are not deployed judiciously. The State authorities make this deployment and macro level directions of the Election Commission can have only a marginal effect. Thus it would be imprudent to derive too much comfort from mere deputation of large contingents of "outside forces". As Director General of CRPF, and coordinator of all central forces deployed in the various elections from 1993 to mid-1996, I have personally seen the frustration amongst officers due to motivated deployments in some States. It has not always been possible to ensure that the general functioning of the State officials and political executive conforms to the objectives of democracy. For a demonstrable impact of induction of outside forces, the Central and State governments and the CRPF do considerable preliminary and preparatory work.

A Slap for the Toddler

—A.V. Liddle, DG CRPF (Retd.)

My first exposure to the Central Reserve Police in a counter insurgency role took place in Manipur, in the year 1970. I had been posted as the Commandant of the 14 Battalion, Madhya Pradesh Special Armed Force, located at Maram in North Manipur on the Kohima-Moreh highway. Karong was the District Headquarters of the North Manipur District and also happened to be the Headquarters of the 8 Bn. CRPF. It was commanded by Lt. Col (Retd.) Gupta. The MPSAF Battalion I commanded was deployed for securing the road for convoys.

1970 was a particularly bad year for Naga insurgency. A.Z. Phizo, it was rumoured, was to visit China and felt that in the absence of sufficient harassment of security forces by the insurgents foreign help would taper off. So he called his lieutenants and instructed them to do the needful. There was, consequently, a sudden spurt in violence from September onwards. The main army convoy was ambushed near Tadubi (and elsewhere on many

occasions) and several posts and patrol parties of the Army and Para Military forces were attacked. A section strong patrol of an interior post of 8 CRPF, a few Kilometers from the Battalion Headquarters, was overpowered suddenly in an ambush and almost completely wiped out. Shri Balottam Verma who was the DIGP at Kohima immediately rushed to Karong and was followed by the DG Shri Imdad Ali himself. In the meantime dead bodies of the personnel killed in action had been brought to the Bn. Headquarters and cremated with full honours. At the time of ceremony, which I attended, one fact impressed me most. Despite the threat of possible retaliation, a very large number of Nagas from the neighbouring villages attended the funeral.



A vigilant CRPF man at Dal Lake, Srinagar

As it had got a little late, the CO 8 Bn insisted on providing additional escort to me for returning to my Headquarters at Maram. I had taken over the command of my Battalion just a few weeks earlier and the CRPF Subedar in Charge of my escort had served in the same area for some time. I

was curious to find out the reasons for the overwhelming popularity of the Force despite the insurgents as well as the fact that demonstrations (by the local against various acts of omission and commission on the part of the administration) were common and CRPF was used extensively to disperse the agitators by use of force. The tough middle-aged stockily built SO with greying handle-bar moustaches gave a bright smile and explained it all, beautifully.

"Saheb" he said, "use of force by the CRP is like a slap which a mischievous toddler gets from an irritated young mother when he refuses to listen. If the resulting cry is too loud, the slap is promptly followed by a pat on the cheek and hug."

Years later, in mid 1992, when I was serving as the Director General of Police in Manipur, tension between Naga and Kuki insurgents suddenly led to escalation of ethnic violence between the two communities simultaneously all over the State. The clashes that occured left many dead on both sides, many wounded, hundreds of dwelling places burnt and standing crops destroyed. In a high level meeting in Delhi, we were offered a choice of Forces between CPOs for induction into the State. Keeping in mind the words of the old Subedar 22 years earlier, I opted straightway for the CRPF. I never regretted the decision. Communal clashes, actively supported by the corresponding insurgent outfits, continued in areas not covered by the CRPF or other forces till recently. Even though CRPF patrols frequently became the target of bloody ambushes by the insurgents, the personnel displayed remarkable self control. There was not one occasion when reinforcements from the Unit whose personnel were involved in an ambush retaliated and displayed anger against innocent civilians. This was one factor which added greatly to the operational successes of CRPF and their popularity among the locals.

The first week of May, 1993 brought about a fresh and sudden burst of violence in the form of communal clashes involving the Meitis and Pangals (Muslims). The origin of the conflict was triggered off by false rumours that some Meiti College girls who had gone to get their admit cards from a College located in a Muslim area, were kidnapped and molested.The rumours spread throughout the State like a wild fire. So did the violence, which resulted in nearly 100 deaths and scores of cases of arson all over the State, particularly in rural interior areas, within the space of a few hours.

The CRPF was extensively deployed for handling these riots effectively along with the Civil Police. Force had to be used on several occasion to disperse unruly mobs and arrest miscreants. The most remarkable act of gallantry during the entire episode was the role played by a Company of the CRPF led by Asstt. Commandant Harbhajan Singh in successfully rescuing several vehicle- loads of unarmed innocents from the wrath of a violent mob of 5000 belonging to the other community, without a scratch.

Following the communal violence the Govt, of Manipur set up a one man commission of inquiry headed by Justice D.M. Sen, a highly respected retired Judge of the Guwahati High Court. As many as 67 statements supported by affidavits (as many as 54 against the Civil administration) were filed before the commission. The hearings before the commission continued for several days. In the report submitted at the conclusion of the enquiry, Justice Sen observed that “there is na evidence adduced by the Muslim Peace Committee to support the allegations of lapse, negligence or dereliction of duty on the part of the Police to apprehend the culprits and miscreants during the group clashes.” It is significant that in the report, the commission lauded the role played by CRPF personnel at several places in rescuing stranded persons belonging to the minority community and also for making excellent arrangements forfood and shelter at the temporary camps set up by the authorities.



Moments of rest after hard duty

It is on account of these experiences, much before joining the Force, that I strongly felt that the CRPF alone is the best CPO to deal with counter-insurgency in areas where movements are led by angry young men and do not involve a foreign power in a proxywar. This is because such movements thrive on an antagonistic relationship between the security forces and the public at large. As a matter of fact by firing frequently at security force personnel in crowded areas, the insurgents are always trying to provoke an over-reaction resulting in loss of life or property of the people at large.

To ensure continued success, the CRPF will have to stick to the policy of the "Slap for the toddler"; enunciated by an old Subedar-now too remote in the past to be remembered by name.

RAF—A New Dimension in Policing

—A.A. Siddiqui, ADGP/Director, Punjab Police Academy

Communal violence and com munal riots are often referred to in the same context but if you look at them closely riots/communal riots are crime under the Indian Penal Code and have specific ingredients. The communal violence includes and encompasses a series of violent activities which may include number of acts and omissions some of which are crime as defined in law but many others may not fall strictly under the criminal activities. The devastating effect of communal violence is much more dangerous and alarming than if it was simply a riot. Whether we call it a communal violence or communal riots the fact is that it has become an integral and disturbing phenomenon of socio political life in India.



RAF Mahilas in Republic Day Parade

THEORY OF COMMUNAL RIOTS (HISTORICAL PERSPECTIVE)

Historically speaking it is felt that majority of riots prior to the partition are attributed to the divide and rule policy of Britishers coupled with the role played by the elites in the Indian society during the British rule. In the post independent India besides the legacy of partition the dynamics of economic and political development and the accompanying social changes have been taken into account to explain the true nature of caste and communal riots. The failure of the police in particular and criminal justice system in general while dealing with the criminal cases arising out of communal riots have also contributed towards recurring phenomenon of communal violence. It is interesting to note that majority of the criminal cases registered during and after communal riots are never put to the trail and even if they are sent before the courts not even a single culprit is ever penalised.

While theorising the casuative factor we have to take into account the problems of class ridden society on the one hand and the under developed economy and scarcity of resources on the other. Some times these factors are also exploited by the vested interest to create riotous situation. In our traiditional society the sense of insecurity generated by socio economic changes increases the appeal of religion which provides some solace and reduces the psychological tensions. The recent rise of religious fundamentalism must be seen in this background. Contrary to the general belief religion has never been the root cause of communal conflict or communal violence, but it is powerful instrument in the hands of vested interest who have used religion to achieve their own objectives. It will not be wrong to suggest that communalism is the result of efforts to control political and economic power through exploitation of religious sentiments. Communalism essentially belongs to the category politics where as religion belongs to category of faith. Therefore it may not be an exaggeration to say that truly religious person belonging to any faith is incapable of being communal.

THE HARSH REALITIES

If one was merely to take a surface view of the bare facts of any riots, it would appear that the riot was caused by an incident so insignificant that we would stand amazed how such a trifling matter could have led to so much arson, looting and murder. It, however, does not require any thinking to know that this incident was not the real cause of the riot but was merely the result of something else which concretely expressed itself in the riot. The basic cause of all communal disturbances is the communal atmosphere pervading the country and the communal tensions built up between the two communities. This communal atmosphere provides a ready-tilled soil for communal-minded people to sow seeds of communal hatred and nurture them untill the bitter harvest of a communal riot is reaped.

Rumours, spread deliberately or out of love of rumour monger-ing, play an important role in rousing communal passions. It is easy to start a rumour and easier to multiply it, but almost impossible to check it. The analytical mind is rarely, brought to bear on the rumour. Rumours are, ‘Not weigh’d by the multitude, but swallow’d in the mass, unchew’d and crude’. Once riot has started, the vast anonymity that a mob provides brings out the beast in man, turning even decent, law abiding citizens into savages, blinded by hate,

over-powered by the lust to kill and destroy and indulge in acts they would be terror-striken even to contemplate in cold blood. Antisocial elements and hooligans, out for loot and plunder, soon take over and a town or city is left battered and bruised, to lick its wounds and slowly limp back to normalcy. The disease is deep rooted and the treatment can only be of long and patient.



Rescue and relief work by RAF men at earthquake affected area of Jahalpur

THE ROLE OF POLICE AND PARAMILITARY FORCES

While analysing the role of police, it is necessary to understand certain observations made by various commissions set up after the riots, which has direct bearing on the role of police in handling communai riots: (a) Most of the riots can be prevented if effective and speedy preventive action is taken by the police. The speed with which the police reacts prior to the riots and on the outbreak of riot is most essential factor, (b) For taking any preventive action, timely intelligence relating to riots is necessary ingredient which is generally iost sight off. An effective and smooth communication between law enforcement agencies and leaders of various communities would save lot of situation which may at times lead to communal riots, (c) Adequate demonstration of police preparedness and determination to handle the situation effectively and impartially on the part of police is essential

requirement, (d) Appearances of fairness on the part of police forces in sine-qua-non of success. The riot situation is essentially surcharged in which each side seems to see the other hostile. If the law and order machinery is seen as partisan or acts as partisan, the public confidence is likely to be eroded and the aggrieved group is likely to act belizerenthy even towards the police forces. Therefore, it is imperative and the Forces not only act but are seen acting fair and nonpartisan, (e) The handling of riot situation involves show of decisiveness on the part of police whiie dealing with violence. However, there are number of occasions where emphathy rather than high handedness on the part of police can produce better results. For example while conducting searches due regard to cultural notions of privacy and sensitivity towards women and children can serve as confidence building mechanism, (f) In any riotous situation there are vested interests inciting and continuing violence. At the same time there are large sections of population in all the communities who are interested in keeping peace. The utilization of this group for control of violence will always yield positive results.

SENSITIVE POLICING-ROLE OF RAF

We are all aware that police is primarily meant for maintenance of peace and order and prevention and detection of crime. Over a period of time this role has been expanded manifold by the demands of society. The multiplicity of the role has blunted the sharpness and efficiency of police force in general. Therefore in case of such a special problems of communal violence having various socio-economic and political dimensions the police is bound to fail in performing the sensitive task. The Govt. of India has created various specialist task forces and Para Military Forces to deal with special problems. Like wise on the basis of recommendations of some of the commissions of enquiry the Govt. has created a specialist task force known as Rapid Action Force specially for handling communal violence. If you look at the objective and guidelines laid down by the Govt, of India it will be clear that such a force will have to be sensitised for dealing with communal violence in a different manner. The objectives are : “The Force personnel should be well educated in directive principles of state policy. They have to be specially trained in behavioural and attitudinal aspects of their duties to enable them to rise above caste and communal biases. Non partisan behaviour as a sine-qua-non of their conduct must be assiduously

inculcated in them. They should also be given sensitivity training specially designed training modules so that they could effectively deal with mob situations and with situations where they have prolonged contact with the people. When not deployed, the Force personnel should be given intensive training to develop cohesion among themselves and society".

THE CHARACTERISTICS OF THE RAF

(i) The Force would essentially be utilised to tackle only communal riots or riot-like situations, (ii) The organisational structure of RAF is different from that of a standard CRPF Bn.The level of dealing with a situation even at the smallest Unit is officer, (iii) One platoon in each Bn of the RAF comprise women officers and personnel so that they can deal more effectively with the situations where the force faces women demonstrators or where it has to carry out searches in the house and also to provide relief to women victims, (iv) Every member of the Force is trained in special skills for dealing with communal situation and the Units are adequately equipped with First-Aid and resuscitation equipments, so that emergency First-aid could be provided to the victims of riots, (v) Every member of the Force is trained in fire fighting so that the Force could provide fire fighting cover to the victims affected by fire at the time of riots, (vi) While not deployed on duties, the Units are continuously under training to ensure proper physical fitness and optimum efficiency, (vii) The Force maintains 'Zero Response time' and for this purpose they have been provided with vehicles independently up to the team level which make them self sufficient and highly mobile, (viii) To maintain a separate identity, the personnel of RAF are issued with distinct uniform which is different from normal khaki police uniform.

The RAF is still in its infancy but the track record so far has been simply excellent. During the course of last 5 years or so the RAF has handled many riotous situations with success. Besides the RAF has been instrumental in preventing riots where there was possibility of breaking. The mere presence of the force instills confidence in the minority communities and helps the local police and administrative machinery in maintenance of peace and order. Some of the important observations by the public about the success story of RAF can be summed up (a) The Force having a new uniform which is distinct from normal police, derived instant psychological advantages (b) The organisational pattern, mobility i.e. Zero response time also contributed towards success, (c) The new training schedule is not only making them

more professional in handling the riots but also changing their attitude towards tackling this delicate problem with different approach. This is also one of the key factors of success, (d) Its people friendly image which is achieved in process of familiarisation exercise and by doing socially useful work has also been responsible for its greater acceptability.

Human Rights & CRPF

—C. Pal Singh
I.G. CRPF (Retd.)

Human Rights are the basic rights of an individual as a Human being and also as a member of the society. These rights are not gifted or bestowed by the "state". In fact they are supposed to have existed and enjoyed by an individual before even the idea of state or Governance was conceived. Thus these Rights are neither created nor can be destroyed by the state. The imperative duty of the state is to recognise these Rights and uphold them.

The 10th of December 1948 marked a turning point in the history of the world, when the UNO proclaimed the Universal Declaration of Human Rights - embracing a wide range of rights which include, political, social, economic and cultural rights. This declaration has worked as a political stimulant, educator and former of conscience. The formal declaration of Fundamental rights on the model of Human Rights is the characteristic feature of most of the written constitutions of the countries since 1948. Most of the Human Rights considered vital for the development of an individual and welfare of the society have been enshrined as fundamental rights in part III of the Indian Constitution also. Any law contravening these fundamental rights is liable to be declared null and void by a competent court as provided in Article 13 of our constitution.



CRPF officers attending a capsule course on Human Rights

From the angle of Law Enforcement, these rights can be considered in three stages (a) Human Rights during the process of Crime Control (b) Human Rights during the period of Prosecution and Trial (c) Human Rights pertaining to post trial stage

The law Enforcement Agencies are basically concerned with the 1st Stage. Prosecution machinery and judiciary come into play at the llnd Stage, and correctional services like prisons parole and probation organisations are concerned with the lllrd Stage.

In our society, which is seething with discontentment and frustration due to economic disparities and social inequities, erosion of law and order has been witnessed at rapid pace. It is alleged that police violates human rights during various stages of prevention and control of crime and maintenance of Law and Order. The code , of criminal procedure 1973 is the leading statute which lays down the procedure in the domain of criminal law. The spirit of the constitution pervades throughout the length and breadth oT criminal procedure code. Since police administration is creature of statute, the exercise of any powers by any Police man or member of any Central Police Force have to be in consonance with the procedure laid down in the Cr.PC. The actions taken by them must be justified by reference to provision of

law.



DG CRPF Shri M.N. Sabharwal interacting with local people during a free health camp in Delhi

The right to be free is the basic right and Article 22 of the Constitution provides for protection against arrest and detention. However, certain discretionary powers for arrest are specified. Our law is intended to strike a harmonious balance between the two apparently conflicting equities - one in favour of individual liberty and the other in support of social security. Any action taken bonafides by a public servant in the interest of justice and social security is protected but any act done in wanton disregard of the right of the individual is liable to a penal action. Members of the Central Reserve Police Force, while acting under the direction of the state police or even at times independently should ensure to follow the various provisions of law. They should hand over the arrested accused to the state police function aries of the area at the earliest for taking further action by them as per law.

Though reasonable requirement of the investigation cannot be ignored, yet “Bail and not the jail” is the principle of Criminal Justice System. The very system of bails has also been designed to harmonise between two rival claims - that of individual Liberty and need of Social Security.

The most blatant subversion of human rights is done by torturing the detainees during the course of interrogation. It is appropriate to revert to Article 5 of Universal Declaration of Human Rights, which says - “No one

shall be subjected to torture, or to cruel, inhuman or degrading treatment". Infact the apprehensions that crime will rise by leaps and bounds if third degree methods are not applied during the interrogation are ill-founded. It is required to be realised that if one hundred people are harassed and beaten up, only ten may come out with statements bearing upon criminality. Even such statement may be misleading or untrue, having been extracted under duress. The net result of pcwce torture, viewed in the background of the totality of crime, is only marginal.

Members of the Central Reserve Police Force are frequently involved for searches and seizures during the course of their duties. Though social security demands that pCiblic servants charged with the task of preservation of order, prevention and detection of crime should have the authority to conduct searches and seizures, yet lot of solemnity is attached to the place of residence of any individual. It can be traced back to the doctrine that an individual's house is his Castle. Even if "It may be a straw-built-Hut, the wind may whistle around it, the rain may enter it, but The King cannot". However, nobody can be allowed to turn his home into a safe haven for criminals or to carry out criminal activities from his place. Cr.PC lays down the conditions and circumstances under which searches and seizures should be conducted and the members of the CRPF must be fully conversant with the same.

It was felt that the members of the paramilitary forces during cordon and search operations in certain areas indulged in excesses and violations of Human Rights. To correct their attitudes, the Ministry of Home Affairs in consultation with Bureau of Police Research and Development have devised a syllabus of training to "Humanise the Security Forces" and to ensure observance of Human Rights during such operations.

Article 19 of the Constitution gurantees six freedoms. Police and other Central Law Enforcement Agencies, particularly CRPF which is mostly deployed for Internal Security duties are called upon to restrict within the parameters laid down in the constitution, freedom relating to Speech, Expression and Assembly. It is alleged that in dealing with situations involving such freedom, these forces act as a pendulum and take extreme postures, depending upon the political colour of the government. Sometimes they swing into action and suppress ruthlessly all agitations and demonstrations violating all norms of Human Rights, while on other

occasions they play the role of silent spectators and acquiesce in crimes being committed in their very presence. Such allegations may be true or not but they reflect more on the predicament of the Law Enforcing Agencies than on their performance. In India, police and other agencies concerned with crime prevention and control are subject to so much of governmental control that at times they cannot act purely as agents of law and law alone.

It is said by some academician that Terrorism by itself is caused due to alleged violation of Human Rights. Deep feeling of persecution or injustice - even if this feeling is just perceived and not actual - give rise to terrorist movements. Terrorists feel convinced that there is no other way to stop their persecution or to seek justice for their valid cause or to up-hold dignity of their religious or ethnic group but to take up arms and fight for the same. So in a way terrorism is caused by perceived violation of Human Rights by the Terrorists.

Though such elements may be having a grudge against the established government or the majority group, their acts of depredation, killings, robberies, extortion are serious violation of Human Rights of some other individuals. The very idea of creating ‘fear psychosis’ amongst the innocent citizens involves a serious breach of Human Rights.

The Human Right Activists do not speak much about violation of Human Rights of such innocent civilians or the families of police personnel or of the society at large. They have however, prepared volumes of reports regarding violation of human rights of terrorists. No doubt adherence to the processes of law is vital and important. It seems that they don’t realise the predicament of the law enforcing agencies who are required to combat lawlessness within the bounds of law. This is like a man with his both arms bound to his back fighting against a man with two strong arms. The position becomes all the more exacerbated when the terrorist activities have political overtones or are purported to be done in advancement of a cause acclaimed to be noble. If law enforcing forces in desperation resort to retaliation by striking back, they are accused to have subverted Human Rights. On the other hand, if they endeavour to tackle the situation within the bounds of ordinary law, they are termed ineffective and charges of incompetence are levelled against them. This is indeed a serious dilemma. The officers of the Central Reserve Police Force have to act and direct their subordinates to perform their duties with utmost caution and at the same time they have to prove effective in the

discharge of their legitimate duties while dealing with terrorists.

Due to certain constraints in which the CRPF personnel are required to be functional, certain aberrations are also likely to surface in the behaviour pattern of the members of the force, which may result in violation of Human Rights. Induction of men for anti-terrorist and counter insurgency duties without adequate preparation and pre-induction training, possession of inferior weaponary, reluctance of the state machinery to part with the intelligence inputs, mental tensions due to prolonged deployment away from their families, non congenial living and working conditions are some of the constraints suffered by the CRPF personnel during their deployment. Efforts are thus required to be made to reduce the above handicaps and tensions to the maximum extent so that such aberrations do not crop up resulting in excesses during the performance of their duties.

Order is the foundation of any civilized life. The political pressures, rise in the crime-graph, problems of mass violence can crack any stable society and pollute the whole body politic. The weapons available with the administration to cope with these pressures and outbursts of violence and flagrant breach of law are the agencies concerned with enforcement of law. Thus protection and maintenance of law and order is the supreme responsibility and privilege of the State Police and Central Police Forces as and when deployed for internal security duties. A law enforcing agency that fails to use the powers vested in it to preserve peace and order as an effective tool of the administration is likely to loose the trust of the society. They however, should use the powers and discretion given to them Under the law with great care so as not to violate the Human Dignity.

CRPF IN NORTH-EAST

—P.N. Ramakrishnan, IGP, NES, CRPF

The North East consists of 7 States and known as seven sisters. Now the 8th State (Sikkim) is added to North-east and is called a brother. Therefore, North-East is now known as seven sisters and one brother. This area is a mosaic of different ethnic groups, languages and diverse cultural heritage. In addition to breathtaking scenic beauty, the innocence of people

and their simple way of living, are a treat to any person coming from plains. It is virtually a paradise for tourists with enchanting lakes, rivers and verdant hills, dense forests and fragrant greenery. Though all the States are very backward in comparison to States in other parts of the country, the people are not less civilised. A wrong impression still prevails in the minds of people in the plains that the people inhabiting these States are tribals which gives out a picture of nomadic life and crude unclothed and uncivilised people. But it is not so.

CRPF and North-East have inseparable relation. This relationship goes back to immediate post-independent period when first batch of CRPF was deployed in Nagaland against Naga insurgents. The Naga insurgency is the oldest in the area and is the legacy of the British. The Naga Club was formed in 1918 and in 1929 when Simon Commission visited Kohima, Nagas represented that they should be excluded from the proposed reforms. The Naga National Council (NNC) was formed at the initiative of the then Deputy Commissioner, Kohima, Mr. Charles Pawsey. An idea of Crown's Colony including the tribal areas of India and Burma was also mooted. Such an idea gradually became an Armed Secessionist Movement under NSCN. The first detachment of 4 Coys of CRPF was sent to this region in 1956-57 to contain Naga rebels in and around Kohima. It was then known as Naga Hills district of Assam and Tuensang Frontier Province of NEFA. Later on, in 1957, these were made Centrally Administered area and finally into a State of Nagaland on 1st December, 1963. By then the insurgency in Nagaland was at its peak. During the period between 1956 to 62, Nagas attacked CRPF camps 5 times. In turn, CRPF arrested 311 persons and seized 195 weapons. The operations took a heavy toll and upto 1974, 154 personnel laid down their lives in Manipur - Nagaland areas.

During the Indo-China war of 1962, CRPF was deployed in Kameng and Siang frontier divisions of the then NEFA which became an Union Territory in 1972 and later State of Arunachal Pradesh in 1987. After cease-fire, CRPF was selected as a neutral force to take charge of arms and ammunitions. In the then NEFA, the Chinese planned invasion of Kameng, Siang, Lohit and even Tirap frontier divisions. There our troops re-established the civil headquarters and sovereign Indian governance in all the five divisions.



An alert CRPF man somewhere in North-East



CRPF men keeping vigil in the area where a convoy is proceeding

In 1971 Indo-Pak war, three Bns. of CRPF were deployed to fight in Eastern sector, they guarded vital installations and ensured proper supply lines for fighting troops.

CRPF initially raised to take on the law and order duties was getting more and more pre-occupied by hazardous counter-insurgency operations. In the post-Chinese war period, the emergency due to internal disturbances called for more and more detachments in the N.E. region. These troops were deployed in Assam, NEFA and Nagaland. The Lushai hills district of Assam (Mizoram) was most insurgency affected area in early 60's. The insurgency level kept on fluctuating which ultimately transformed into an armed rebellion against the country. The lushai hills district of Assam, Mizoram was made into a U.T. in 1972. It was also declared a disturbed area under Disturbed Area Act. The quantum of deployment of CRPF was more than 15 Bns. The valiant performance of our troops mounted pressure on MNF (Mizo National Front) and they were forced to surrender. With the signing of Peace Accord in '87 and consequent Statehood in 1987, Mizoram became 23rd State of the Indian Union. CRPF also played a major role in holding the first assembly elections peacefully and fairly. With the election of democratic Government in the State, normalcy was restored.

Tripura, which on accession to Indian Union, became a Union Territory in 1949 and later full-fledged State in 72 had inherent problems of Tribal versus Non-tribal conflicts and foreign nationals' infiltration. Unlike in the other North-eastern States, no underground organisation in Tripura has fought for secession of Tripura from the Indian Union but their "Struggle" mainly is for protecting minority tribals within the State itself. The main outfit ATTF (All Tripura Tribal Force) was formed in 1990 out of TNV (Tribal National Volunteers). TNV, which signed a peace accord with Govt. of India in 1988 was considered most dreaded underground set-up in Tripura. More than 11 Bns. continue to be deployed in the State. We have dominated on the ground and effectively contained the situation.

In Assam, CRPF helped local police fighting the language riots spread throughtout Assam in 60's. The CRPF was deployed from Guwahati to Dibrugarh enforcing strict maintenance of law and order in Nagaon and Tezpur. As the disturbances spread to Tura, Silchar, Dibruagarh, the CRPF was deployed in the hill sector. Their daring determination and relentless patrolling excercised effective control over the situation. In Cachar, our

force did the actual quelling of trouble. The 11th Bn. created history with arrest of 38 infiltrators from Pakistan.

In Feb. 1976, in view of increased level of deployment in the N.E. region, office of Inspector General of Police, North Eastern Sector, was created. Later with the creation of offices of IsGP (ops) Manipur & Nagaland and Tripura, the operational responsibility of N.E. region was accordingly divided.

Assam, the oldest of N.E. States, is today a theatre of extortions, kidnappings, and mindless killings. The main outfit ULFA (United Liberation Front of Assam) was formed by a set of disgruntled persons in 1979, however, till 1986 it mobilised people against infiltrators from Bangladesh. Later it changed course and professed its aims of "liberating" Assam from the so-called "Indian colonial rule" to set up an "Independent State" through "Armed Struggle". Towards the close of 1992, the main secessionist organisations - ULFA (United Liberation Front of Assam). UNLF (United Nation Liberation Front of Manipur), NSCN (National Socialist Council of Nagaland) Issac and Muivah groups and PLA (Peoples Liberation Army) in the region had become very active causing serious concern among the law enforcing agencies in the area. The spurt of a series of violent and secessionist activities brought all the top authorities of the seven States and of Govt. of India for joint action against the ultras. Accordingly, in 1995 a joint operation under unified command was launched in Assam. As a result of these operations and dominance of CRPF troops, these secessionist organisations have suffered serious set-backs. The talks with Govt. of Bangladesh and Bhutan and peace talks with NSCN are also likely to resolve the situation.

While the politicians attribute the cause of insurgency movement as the direct result of unemployment of educated youth and economic backwardness of the region, the problems are also connected with historical background coupled with the series of alienation prevailing in the minds of younger generations. The feeling of negligency and geographical location of the region have also contributed to the factors that led to cause the problems, particularly in Manipur and Nagaland.

The question now is how long these things will go on. Intellectual circles in the region feel that the main reasons of student unrest and other problems are owing to continuous inflow of illegal immigrants and lack of economic

development. The youths in the region feel that their economic opportunities are being taken away by those who have come from outside. This is further aggravated by terrorist actions of snapping rail and road links and cutting the supply lines of region. In spite of abundant natural resources, the region has been lagging far behind other States in economic development due to these obvious reasons.

CRPF in its operational role in North-east region has exerted pressure on different subversive outfits to come to the negotiating table within the framework of our democratic polity. It was ‘due to our troops’ concerted efforts that accords were signed between the Government and organisations like MNF, TNV and Bodo organisations, but the signing of the accord is not as difficult as implementation of its provisions. By all accounts, it appears necessary that confidence should be restored in the minds of the people. They should not feel. sandwiched between Ultras and Law Enforcing Agencies. One way to achieve this, many intellectuals feel, is by solving foreigner’s issue and taking up proper precautionary measures to prevent further infiltration. It would be useful to study the problems from different angles.

CRPF, besides fighting insurgency, is also associated in efforts like flood relief, rescue work in the eventualities of rail accidents, organising medical aid camps in inaccessible areas, polio immunisation camps, social forestry, providing security to weaker sections’ colonies and numerous other activities.



Patrolling of CRPF personnel in North-East

Today, out of a total of 760 Coys in CRPF, the North-east accounts for 366 Coys, almost half of the Force. This itself shows the importance the CRPF plays in the life of people of North-East and the relationship the Force has with this part of the country.

Record of CRPF on Human Rights Exemplary

-M.S. Farooqi, I.G. CRPF, (Retd.)

Human rights have evolved side by side with development of human beings and society Ever since civilization began, communities started developing consciously some code of laws to live harmoniously and to protect the weaker from the oppressor. With the gradual upgradation of our

society and awakening, the code of laws were improved, so also the system of enforcement. In today's context, societies almost everywhere have graduated to approving and adoptivating democratic way of governance, that is, a government of the people, by the people and for the people. In this system of governance the functions of executive, legislature and judiciary have been explicitly defined and allowed to operate in mutually exclusive manner. These refinements have been contributing towards safeguarding the fundamental rights of the people as well as their human rights. These code of conduct protect people from atrocities and high-handedness committed by stronger and powerful. In some areas they even protect the people from undesirable coercion, usurption and violation of fundamental rights committed by ill conceived government officials and political strong men. It is only in this manner that a civil society can survive and human values proliferate.



Smt. Vimla Mehra DIG receiving a trophy from Justice M.N. Venkatachaliah chairman NHRC for participating in Human Rights debate

Human rights can be individual or collective. Individual rights relate to right for life, security, justice, privacy, etc. Whereas collective right include right to development, right to preserve and propagate culture/traditions by indigenous people, right to self-determination etc. Human rights are also categorized into (a) Civil and Political Rights, (b) Economic, Social and

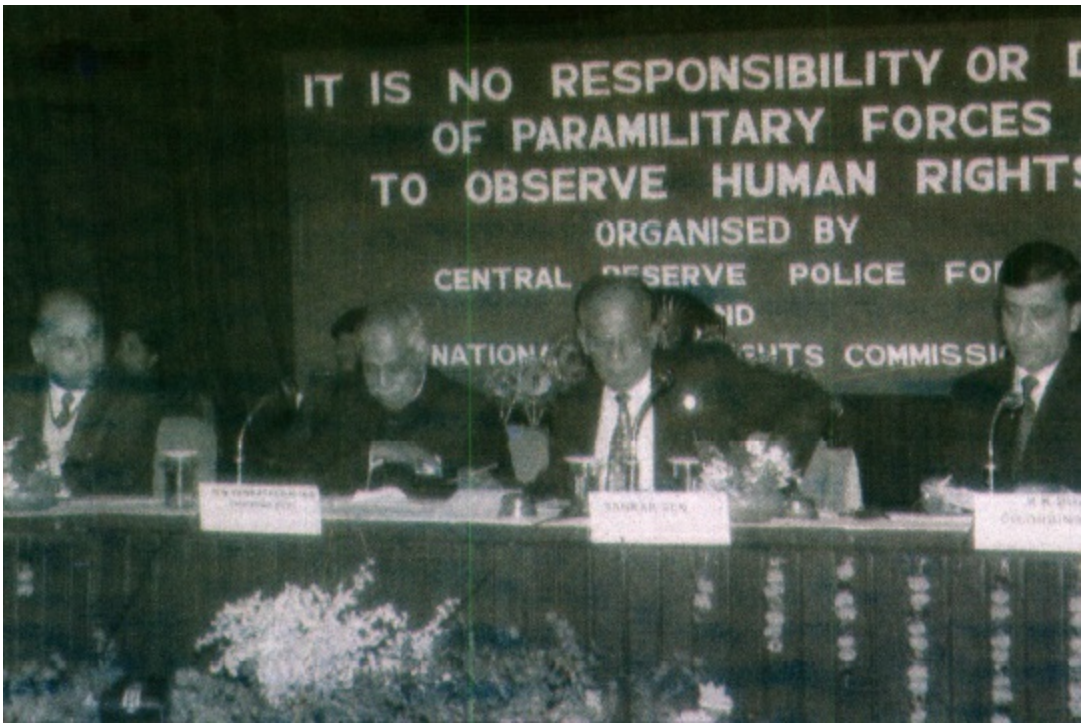
Cultural Rights.

(a) Civil and Political-Rights : (i) Rights to life, integrity, liberty and justice of human being. (ii) Rights with respect to administration of justice. (iii) Rights to privacy. (iv) Rights of freedom of religion or belief or opinion/expression. (v) Rights to freedom of movement. (vi) Rights to assembly and association and (vii) Right to political participation

(b) Economic. Social and Cultural rights (i) Right to work. (ii) Right to trade union freedom (iii) Right to choose standard of living including food, clothing and housing. (iv) Right to health care. (v) Right to education and (vi) Right to take part in cultural activities.

Human rights relation to CRPF may confine to civil rights with some understanding of political rights.

Our constitution guarantees various forms of Human rights through Article 14 15(I), 16(I), 22(I), 22(II), 22(III). Article 14 defines equality before law. The state shall not deny to any person equality before law or the equal protection before law. Article 15(I) speaks that the State shall not discriminate against any citizen on grounds of religion based on cast, sex, etc. Article 16(I) provides equality of opportunity for all citizens in matters relating to employment or appointment to any office under the State. Articles 22(I) to 22(III) provide protection against illegal arrest in detention Every arrested person shall be produced before the nearest Magistrate within a period of twenty four hours of such arrest excluding the time necessary for journey from the place of arrest to the court of Magistrate. No person shall be denied the right to consult and be defended by a legal practitioner of his choice.



CRPF organised a debate competition on Human Rights which was chaired by Justice M.N. Venkatachaliah chairman NHRC

The CRPF personnel are normally deployed in aid of civil administration and during their deployment a contingent or a representative of civil police is usually associated. In normal law and order duties rarely would arise an occasion where CRPF could be accused of violation of human right, but while dealing with insurgency which has spread to entire North-Eastern states and J&K, scope for such violation is wide open. By making ranks and file aware of the need to safeguard human rights of all citizen by discussing the matter with the men frequently as well as citizen through introduction of training capsules in all courses right from basic course meant for constabulary to vertical interaction course for senior officers, significant improvement could be achieved, diminished rate of complaints by public in operational areas is sufficient indicator of the state of affairs and improvement achieved. However, existence of some black sheep trying to violate human rights apparently attributed to insurgents or terrorists but actually affecting more the weaker and marginalised section of society cannot be ruled out. And it is this miniscule group that needs close monitoring and necessary input for change of attitude by our leadership. However the record of CRPF on human rights has been exemplary

The usual justification of excessive firing or killing of public or damage

to property or killing of insurgents in false encounter is given by some as a revenge to the killing of innocent public by insurgents or terrorists. There is no doubt that killing of innocent persons by insurgents needs highest form of condemnation and requires stern action within the frame of law. However we should realize that when we call insurgents or terrorists we refer to a phenomenon or philosophy prepetuated by a group in which some persons violating the law are neither recognised nor do they leave sufficient evidence for their identity to initiate any legal action under the law. In most cases they camouflage themselves either mingling with the population or escape threatening the public of dire consequences if they helped security forces by giving any clues. Willing connivance of public due to their alienation also help such group. Followers of such philosophy of insurgency take full advantage of this situation while committing henious crimes. But the reaction of arm of the government in similar fashion or to open fire on a group suspecting them to be insurgents (because they belong to that area) will neither be proper nor civilized, even under highly provocative circumstances. Then, what should be done ?

A high degree of professionalism is required to identify, isolate and arrest such misguided persons who resort to insurgency thereby plan and perpetuate killing of innocents. Long term planning, sophisticated and committed intelligence system, sequential proactive action by committed & determined contingents, dynamic and efficient administrative back up, acceptability of risk and high rate of casualities initially, prompt and prosperous reward system which could motivate ranks and file to accept risky situations willingly and continuously, etc, are some of the measures which could go a long way in developing proper frame of mind and attitude for counter insurgency operations in a fair manner. Once a trend is set to identify the insurgents and terrorists and sufficient evidence gathered to initiate legal action, other procedures and problems of coordination between various agencies can be achieved gradually and consistently. Equally essential is the economic upgradation and development of the affected area which can engage the young and educated in utilization of their time and energy to constructive work thereby detracting them from being a potential lot for recruitment by insurgents. All these measures will form a package to make these measures effective. None of these factors can be avoided or deleted from the package. Here is a role more for the government than for the CRPF or individual leaders as it is part of strategy. When these measures

start giving results, the tendency to cause violation of human rights by the CRPF or any other Force will reduce considerably.



Shri R.P. Singh, IG, Eastern Sector presenting a cheque of Ex-gratia payment to the widow of Naik (Dvr) S.M. Karim

Lack of success to contain insurgency coupled with cases of ambush and killing of members of security forces and public sometime forces the leadership to cross the limit of laws of the land and human rights, both in the case of actual criminal and suspects. Such a tendency arises to show tangible results by security forces and with a view to create deterrence. Defective rewards or promotion without unbiased inquiry will generate vicious circle where other officials and government trend to rationalize the action of guilty officials. They perhaps do not realize, that in most cases such ventures of violation of Human rights have short span of praise as facts generally get uncovered not before long. Then the question is of Means vs End. Whether end should justify means or means should justify end ? Can a civil society or a democratic government survive if politicians in power or arm of the government become their own judges and start punishing insurgents and suspects, based on the perceived violations. Can we revert to the dictum “L’etal cest moi”? Our leadership should continue to innovate plans and tactics to defeat all unlawful ventures by safeguarding human rights of all. This is essential for a civil society.

THEY NEED US

-D.P. Sinha. IGP, Northern Sector

We are celebrating 59th Anniversary of CRPF which has grown in these years as one of the finest and dependable security wing of the Govt. for maintaining law and order in the country. The challenges of increasing proxy war and internal law and order scenario in the Country is putting tremendous pressure on the Force but it has stood the pressure and proved to the expectations of the people of the land and Govt. In these years while fighting against the terrorists and insurgents the Force has suffered a large number of casualties.

The families of these sufferers who laid down their lives or became incapacitated are living in a state of shock and deprivation. Their husbands/sons have been gunned down by the terrorists in urban streets or in the insurgency infested jungle while maintaining the integrity and sovereignty of the country. These families are real unsung heroes. The separated families also undergo similar lonely separation and pain. They spend lonely months carrying children while their husbands are away. They bring up their children in substandard conditions.

In these circumstances, we the Commanders at all level should know our men and their needs and problems. We should listen them, take care of them and be loyal to them. If the men are shielded from these harrasments they would be better persons and good professionals. These problems could be basically divided into two segments - Unit and Force level. Patient hearings should be given by the Commanders at the Unit level to listen to the problems and grievances of the Unit personnel and they should sort out the problems which are of minor in nature like strained relations with their neighbour at native places, minor litigation cases being dealt by the Panchayat or District level. Such cases should be quickly taken up with the concerned authorities for early settlement at the initial stage.



Shri Y.N. Srivastava Addl. DG, CRPF addressing welfare seminar. Union Home Minister Shri L.K. Advani Spl. Secretary, MHA Sh. Nikhil Kumar and DG CRPF Shri M.N. Sabharwal are present on the occasion

For second set of issues, decision and policies need to be formulated for implementation. Certain issues require Govt. clearance and approval. These must be persued.

Housing Problem

Housing problem can be further divided as (i) Accommodation in GCs and (ii) Accommodation for separated families.

The department is taking keen interest for the development of family accommodation in the GCs which is less than the authorisation and target, but inspite of these efforts the requirement of family accommodation by the Force personnel is tremendously increasing due to disintegration of joint family texture. These norms of built-up accommodation which were laid down long back in 1968 at the time of inception of GC scheme may have to be reviewed and the Govt. should be sympathetic to accept the schemes and proposals which are projected.

Separated family

Separated family and their increasing problems : A large number of personnel who have laid down their lives or have become incapacitated

while fighting terrorism and militancy is very high and alarming. Their widows are not only undergoing trauma of their separation but are also undergoing agony and pains of the life. These families look forward and expect love, sympathy, caring and financial assistance from the Force where they have every thing.



DG CRPF Shri M.N. Sabharwal inaugurating CRPF welfare exhibition-cum-fete

Few of the general problems which keep them under stress and pain are Housing, Broken joint family system, Financial constraints, Separation from parents, Pain due to break away from in-laws, Mental and physical stress, Emotional black mailing, the children's education and up-bringing related problems, Pressure of losing assets/property, Marriage of their children and social obligations and social binding and isolation.

The above problems are only elaborative and not exhaustive, there could be many more but in general if the care is taken on the above narrated problems, much relief could be extended to these families. We are taking care within our own limited financial resources and have introduced a number of financial schemes. These facilities are not enough in these days in view of the price hiking. A house is a basic requirement of these families. A system needs to be evolved with the involvement of the State Govts. to allot cent-percent houses to these families at a subsidised rate as is being

done in the case of weaker sections of the society.

Schooling problem is the another area where the future of the children and the family wholly depends. Education and up-bringing of the children will not only change the future complex of the family but also of the society as a whole. The education of the children of these widows should be made free up to post-graduation and for higher studies also. Since they are not in very large numbers the Govt. can do it. Other alternative is that CRPF should be given certain institutions for which Govt. should bear all expenditure for its infrastructure, staff and development.

To overcome the financial constraints of the widows and incapcitated persons they can be engaged by the local small scale Units which are financed partly by the Govt. and also employment in the projects which are organised under the supervision of Block Development offices in their areas. These assistance could be only possible at Block and Village level if a policy decision is taken by the State Govt. National development programme/scheme should also include and consider to allot seat for these families for training and subsequent employment.

Schemes of CGHS needs to be extended to all such family members irrespective of their place where they are staying. At present this scheme is only in limited cities and the percentage who is availing this facilities is negligible. By extending this facilities the widows and their family members can avail this facility at a nearest dispensary and take care of the health of their family members.

A policy decision is required to be taken and implemented at Central/State level to extend free of cost journey in transport within state. Railways should also extend similar facilities to the incapacitated Force personnel and widows of the Force personnel. There would be hardly any adverse effect on the exchequre of the Railways and it would be a nice gesture to honour them.

These few suggestions are limited and not full and final, but any step taken towards this direction by the Govt. and other helping NGOs can certainly boost the morale and the living status of these deprived families. This gesture would not only benefit the deprived family but also will go a long way to improve the over all morale and efficiency of the serving members of the Force.

Let us rededicate ourselves to the welfare of these deprived families who

are very much a part of us

CRPF in Jammu & Kashmir

—C.M. Pandey, IGP (ops) Srinagar

The State of Jammu & Kashmir has always occupied an important position in the Indian Union because of its geo-ethnic position. It is strategically located touching borders with Pakistan, Afghanistan and China. It stands on the old Central Asian Trade route and the Kashmir valley has always been a halting place for caravans between planes of India and high reaches of Central Asia, since time immemorial. Besides, its strategic location nature has been bountiful in bestowing unsurpassed natural beauty to the state. Because of these factors Kashmir occupies a unique place in the psyche of Indian mind.

After India attained Independence, the State of J&K merged with the Indian Union when the then Ruler Maharaja Hari Singh signed the Instrument of Accession on 26th October, 1947. However, by this time the situation had become very alarming due to invasion of Kashmir by large number of tribals armed and aided by Pakistan. After merger with India, the Indian Armed Forces landed in Kashmir and cleared ¾th area of the valley before declaration of cease-fire on 1st January, 1949. The seeds of separation and violence were thus sown from the beginning.

Hereafter, the State of J&K became the most sensitive political and military issue between India and Pakistan. Pakistan did not reconcile to its being legally an integral part of India and had constantly indulged in activities to destabilise the state and create an opportunity to grab it. It made unsuccessful attempts in 1965 and again in 1971 by invading India to capture Kashmir but failed in its attempts.



Jawans of 136 Bn CRPF taking oath of allegiance at Srinagar

However, constant hostilities and mischievous propaganda unleashed by Pakistan did not allow peace and stability in the State of J&K. Emotional issues were exploited by vested interests to create disturbances and violent demonstrations. CRPF has to be sent to J&K from the very beginning to deal with such situations. The presence of CRPF in the state of J&K dates back to 1953 when a Detachment of 3 Companies of 1st Battalion was sent to the state to deal with the Praja Parishad agitation and deteriorating law and order situation due to death of Dr. Shyama Prasad Mukherjee while under detention in Srinagar. During these agitations, the Assembly Hall was set on fire by agitators which would have completely destroyed but for timely intervention by CRPF By early 1954 CRPF Companies were withdrawn but again in 1956 companies of Ist Battalion, CRPF moved to the State which remained deployed till 1959. The Battalion was used extensively to deal with Praja Parishad Movements and guarding of important detenues such as Sheikh Abdullah and his party at Kud Jail. Later on, this unit was deployed in the interior of the state in Uri Sector for law and order and transborder crimes.

One more CRPF Battalion (3rd Bn) was also moved into the State during February 1957 which remained in the State till July 1966. Due to increasing incidents on the border this Battalion was inducted into Poonch Sector on the Indo-Pak Border during 1958-59. The Battalion did commendable job in checking infiltration, anti-smuggling duties, dealing with raiders and cattle

lifters. Release of Sheikh Abdullah from jail during 1958 has created a grave law and order situation in the State. Companies of 3rd Bn were found handy and were extensively used for maintenance of law and order and their performance was highly appreciated by the then Prime Minister of State. The Companies of this Battalion also performed the duties of guarding special Jail in Jammu and sub-jail at Kud where important prisoners like Sheikh Abdullah and Afjal Beig were interned.



CRPF men providing security to Amarnath Yatries

CRPF's presence in J&K during its early stages of deployment will remain incomplete without mentioning its remarkable tryst with destiny in Ladakh, which made history in the annals of Indian Police. One Company of 3rd Bn was on deputation to ITB for duty, from September, 1959 to July, 1966. During those days when living conditions were very hard and means of communication inadequate, this Company had to operate in harsh climatic conditions and risk of enemy ambushes. The men were, however, undeterred in their task to safeguard the unity and integrity of our motherland. The incident of ambush on the patrol of this Company on 21st October, 1959 by Chinese caused nationwide resentment. In this encounter 5 Constables of this Company lost their lives. In memory of these brave soldiers and their colleagues killed by treacherous Chinese, the Police Forces of the country observe 21st October as the Police Martyrs Day.

By mid fifties, it was quite apparent that CRPF deployed in J&K was

going to be a permanent feature. The Government of India, therefore, decided to raise 3 Battalions exclusively for duties in J&K. The government sanctioned raising of 1st, 2nd and 3rd J&K Battalions under CRPF during 1956. These Battalions after the raising were merged into CRPF to be known as 4, 5 and 6 CRPF Battalions. While 4th and 6th Battalions were moved in J&K after the training, 5th Battalion had to be sent to Nagaland. 4th Battalion on being inducted into J&K was placed under Army control and made responsible to check infiltration across the border and safeguard territorial integrity and security of border in Chhamb-Jaurian Sector. 6th Battalion was also inducted in the State and assigned the task of internal security duties, guarding of bridges, vital installations, IB, other Central Government offices and installations. During 1967 one more CRPF Battalion, 2nd Bn, was moved to J&K due to continuous turmoil in the State. After merger of large number of IR Battalions into CRPF, three more Units namely 16, 20 and 22 were inducted in J&K. While 16 and 20 Battalions were deployed on the borders under Army for checking trans-border crimes and manning some of the observation posts for anti-smuggling duties, 22nd Battalion after a brief span of duty in Poonch area moved to the Valley for law and order duties.

From now onwards, the presence of CRPF in J&K became a regular feature. At any given time, there were 4 to 6 Battalions in the State mainly for the law and order duties till the rise of militancy during 1989.

Pakistan had not forgotten its humiliation of defeat in 1971 war with India and has been working quietly to organise Liberation Front in the Indian held Kashmir valley. By 1989 Pakistan had prepared another plan to take away Kashmir from India, this time by proxy-war. It made elaborate preparations by extensively aiding and abetting armed uprising with the help of elements inimical to India. A very large number of Kashmiri youth were enticed to cross into POK where they were trained in subversive activities and sent back to create violence in the State. By 1989-90 the scenario turned grim. Militants indulged in various subversive activities including bomb blasts, burning, looting, hoisting of Pakistani Flag, killing of innocent persons and attacking security forces, etc. CRPF, which has been an integral part of the State Police since almost four decades borne the main brunt of militancy during its initial stage. Due to militant activities the State Police had totally paralysed and CRPF was given the independent task of conducting Counter Insurgency Operations. The concept of Special Task

Force was introduced by CRPF and Counter Insurgency operations were simultaneously launched in the entire Kashmir valley. During these three years CRPF suffered heavy loss of 113 persons who sacrificed their life while fighting against heavily armed militant outfits. By the end of 1992, the role of CRPF was changed when BSF was shifted from Punjab to J&K in a big way and CRPF was sent to Punjab to bring normalcy to the trouble torn State. Strength of CRPF was reduced from 129 Companies to 89 Companies. The CRPF was deployed on static guards for VIPs and vital installations, whereas BSF was given the responsibility of conducting Counter Insurgency operation in J&K. During 1995 the Central Government had decided to hold elections in J&K and 105 additional Companies of CRPF were inducted into the State raising its total strength to 255 Companies. These additional Companies were utilised for conducting Special Operations to bring situation under control before elections. The elections had to be postponed in 1995 but the additional deployment of CRPF continued. Finally during 1996 the Government of India decided to hold Parliamentary elections followed by Assembly elections in J&K. As there was no popular Government in the state and local employees were not coming forward to perform election duties, the work of coordinating the election process on behalf of Government of India was given to CRPF. The entire exercise required close co-ordination with the State Government to work out phasing of elections as per availability of Force for each phase and tying up problems relating to accommodation and logistics. Responsibility to co-ordinate movement of Para Military Forces, their deployment, to make all arrangements for polling parties coming from Delhi and other parts of the Country, bringing hired transport from other states for CRPF and polling parties, to work out and make deployment of Security Forces at polling stations and polling booths, to make arrangements of logistics etc. fell on the shoulder’s of CRPF. This Herculean task was cheerfully accepted by Officers of CRPF and both Parliamentary and Assembly elections were conducted peacefully. Due to dedicated efforts of Officers and Jawans of CRPF popular Government was formed in J&K after a gap of eight years.

After formation of popular Government in October 1996 the CRPF launched Special Operations with Special Operation Group of J&K Police in Kashmir valley. During last two years in joint operations of CRPF and SOG of J&K Police, the top brass of almost all important militant outfits have been eliminated and excellent recoveries of Arms/Ammunitions,

explosive etc. have been made.

As on date 222 Companies of CRPF are deployed in J&K, out of which 147 Companies are in the Kashmir Region and 75 Companies are in Jammu Region. The force is performing important security duties of guarding vital installations and institutions, providing security to VIPs, ROPs and patrolling in sensitive areas, tackling day to day law and order problems and Counter Insurgency operations. In addition to normal security and Counter Insurgency duties, the CRPF has undertaken Pulse Polio Immunisation programme and Civic Action Programme in a big way. The contribution of CRPF during Shri Amarnath Yatra have attracted attention of common man in a big way. Various facilities provided by CRPF during Shri Amarnath Yatra include providing free tentage accommodation to nearly 700 yatries at a time at Pahalgam, provision of free snacks, break fast and canteen facilities, information centres to help yatries and dedicated medical aids with Ten Bedded Hospitals at Pahalgam and Chandanwari, adequate medicines, life saving drugs, oxygen cylinders, glucose drips etc.

CRPF has lost 168 valuable lives in various counter insurgency operations in J&K from 1989 to till date. The sacrifices made by the Officers and Jawans have not gone in vain. It has made valuable contribution in safeguarding the National security and Integrity and bringing back near normalcy in this troubled State.

In the past two years, there has been marked improvement in the situation in J&K. Militants have suffered heavy casualties and in desperation, they have from time to time indulged in killing of innocent unarmed civilians. They have alienated themselves from the general public who wanted to live in peace. Number of local militants have considerably declined. At present militancy in the State is being sustained by hired foreign mercenaries who are being sent in by Pakistan. The present day need is to effectively tackle these elements of residual militancy. CRPF on its part is performing its duties efficiently. The force has excellent rapport with the local police and is extending all help in bringing total normalcy in the State.

CRPF AND PUBLIC ORDER

—P.P.S. Sidhu, IGP (ops) Jammu

The Central Reserve Police Force is one of the Armed Forces of the Union, with the primary role of assisting the States in the maintenance of law and order. As routine police duties are handled by the state police, the CRPF, when called upon to assist the state police, is usually confronted with more serious problems involving the handling of unruly mobs. This often involves the use force to disperse such mobs.

IMPLICATIONS FOR THE CRPF

The implications for the force personnel in the maintenance of law and order need a proper appreciation in the context of the legal powers and duties enjoined upon them. *Section 129 Cr. P.C.* authorises any *executive magistrate* and *officer incharge of a police station* to command an unlawful assembly, or assembly of five or more persons, likely to cause disturbance to peace, to disperse. The section also empowers these officials to use force, if necessary, for the dispersal of the crowd.

The Central Government, through the ***Gazette of India, August 7, 1976 MHA No. SO-2821 dated 27th July, 1976[1],*** has vested all officers of the rank of Sub-inspector and above in the CRPF with the powers of the SHO for the purpose of dispersal of unlawful assemblies. It also empowered all members of the force with the powers and duties of police officers given in sections 47, 51(1), 52, 54, 58, 74, 149, 150, 151 and 152 Cr. P.C. The implications for the CRPF are quite obvious :



CRPF men helping an old man during Punjab election

- **Section 149 Cr.P.C.** authorises and directs every police officer to interpose for the purpose of preventing any cognizable offence to the best of his ability. Therefore, every member of the CRPF is duty bound by law to prevent the commission of a cognizable offence.
- **Section 151 Cr.P.C.** gives a police officer the power to arrest, without directions or warrant from a magistrate, if the police officer knows of a design of such person to commit a cognizable offence, and the offence cannot otherwise be prevented. Consequently, members of the CRPF also have the power to make a preventive arrests to prevent the commission of a cognizable offence. This can be effectively utilised in handling unlawful assemblies.
- • **Section 152 Cr.P.C.** gives every police officer the authority to interpose for the purpose of preventing any damage attempted to be committed to any public property, immovable or otherwise, by members of an unlawful assembly. Thus every member of the CRPF is also duty bound to protect public property.



RAF, a component of CRPF deployed during Rath Yatra in Puri (Orissa)

Very often the CRPF is deployed in section strength, with a constable of the local police as a guide. Under such circumstances, if the section commander is faced by an unruly and violent mob, which by its action constitutes a positive threat to life and property, what is the option before the section commander, as he has not been vested with the legal authority to command an unlawful assembly to disperse ? Force personnel outside the ambit of section 129 Cr.P.C. cannot avoid intervention in such a situation on the plea that they are not empowered to act to disperse a mob. Section 100, 102 and 103 IPC[2] gives the right of private defence to all individuals, including police personnel. Police personnel, including personnel below the rank of Sub-Inspector, who are not empowered to take action under section 129 Cr.P.C., can not only intercede to protect life and property by virtue of the right to private defence under the I.P.C., rather they are duty bound to do so by law.

UNLAWFUL ASSEMBLY

Before taking action under section 129 Cr.P.C., it is imperative to understand what constitutes an unlawful assembly. The unlawful character of an assembly is determined by section 1411.P.C.[3] For an assembly to be declared unlawful, the following essential ingredients have to be fulfilled :

- There should be an assembly of five or more persons;
- The assembly must have a common objective (see footnote);
- The common objective should be one of the five mentioned in the section[2].
  Section 132 Cr.P.C. gives protection for the bonafide actions of officials empowered to disperse an assembly by force. To claim the benefit of section 132 Cr.P.C., the officer has to show that :
- There was an unlawful assembly;
- Such an assembly was commanded to disperse;
- The assembly either did not disperse on such command, or if no such command was given, its conduct was such as to indicate its determination not to disperse;
- Under the circumstances force has been used against the member of the assembly.

USE OF FORCE

The quantum or nature of force to be used has not been specified in the Criminal Procedure Code. Application of force commences from the moment any form of physical restraint is imposed on the crowd and includes arrest, use of cane/tear gas or use of firearms. The code also does not specify the procedure to be adopted in use of force. The evolution of the rules governing the use of force can be traced to the recommendations of the committee appointed in 1962 by the Conference of the Inspectors General of Police. The recommendations of this committee led to the standardisation of the procedure and clearly defined rules for the use of force to disperse unlawful assemblies. The basic principles are:

- No more force should be used than is necessary.
- Force should not be used as a punitive measure.
- Force must cease immediately when the objective is gained.

As regards the procedure, it is well established now that when a magistrate is present, the dispersal of an unlawful assmebly will be commanded by the magistrate. In his absence any gazetted police officer, or officer incharge of a police station can exercise this power. Such police officer will communicate his report to the senior magistrate accessible. Once a magistrate has decided that force has to be used to disperse an assembly

the quantum of force will be decided by the police officer/ CRPF officer commanding the contingent. The crowd must invariably be warned before force is used. Cane charge and teargas, should as a rule, precede firing. Firing is resorted to only if other measures have failed.

PRACTICAL IMPLICATIONS OF USE OF FORCE

It is essential to weigh the nature of the threat to public tranquility and the likely consequences of the use of force. If, in the endeavour to take action against a member of an assembly which has been declared unlawful, harsher and violent events are set in motion, then obviously the action would be regarded as tactless and unwise. But where the assembly has already taken on a riotous character, immediate intervention and use of force is necessary. Mere disobedience of orders under section 144 Cr.P.C. does not merit use of harsh force because the punishment prescribed extends to only one month's imprisonment. Force should not be used on the mere plea of self defence, if other means of preventing the anticipated danger are available.

TACTICAL PRINCIPLES OF CROWD CONTROL

There is a similarity between the fundamental principles used in combat, dispersal of crowds and on the sports field. In any type of situation, the opponent is overcome by a superior force, or gaining advantage by attacking him at a weak spot; or demoralising or disorganising him through surprise. The basic difference of tactics between combat and the others is that while the opponent in combat is an enemy to be annihilated, the opponents in a crowd or the sports field are fellow citizens who are to be dealt within a manner that the least harm comes to them. Usually crowds out number the police force. It is therefore necessary to achieve surprise, disorient the crowd and demoralise it through disciplined and effective application of tactical principles, rather than resort to use of extreme force such as fire arms. In this various formations such as column, line, wedge, diaganal etc. can be put to effective use depending upon the nature of requirement. However, it must be kept in mind that the strength of the police contingent lies in its cohesiveness as unit, rather than the invidivual powers of its men. Many of the famous battles in history were won by smaller, mobile and more disciplined armies which were able to maximise the application of their strength at the enemy's weak point. A cohesive unit will also be able to

withdraw tactfully if the situation demands, rather than make a disorganised precipitous retreat which will only serve to make the crowd more aggressive. Thus a thorough reading of a crowd psychology, an understanding of the ground situation and a suitable tactical approach will help to reduce the damage while dispersing crowds by force.

---

[1] Gazette of India, August 7, 1976 (MHA), SO 2821 dated 27.7.76

In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 16 of the Central Reserve Police Act, 1949 and in supercession of the Notification of the Government of India, in the Ministry of Home Affairs No. 10/127/57-P.II dated the 22nd April 1958, the Central Govt. hereby directs :-

(1) That the powers conferred and duties imposed on a police officer by Sections 41(1), 46, 47, 48, 49, 51(1), 52, 74, 102, 149, 150, 151 & 152 of the Code of Criminal Procedure 1973 (2 of 1974) or in the State of Jammu and Kashmir by the corresponding sections of teh Jammu & Kashmir Code of Criminal Procedure 1889, shall be the powers and duties respectively of every members of the Central Reserve Police Force and

(2) that the powers conferred and duties imposed on a police officer by Section 53, 100 and 129 of the Code of Criminal Procedure 1973 (2 of 1974) or in the State of Jammu and Kashmir by the corresponding sections of the Jammu and Kashmir Code Criminal Procedure, 1889, shall be the powers and duties respectively of every member of and above the rank of Sub-Inspector of the Central Reserve Police Force. No. J-ll-9/74-Adm (Pers.Il/GPA-I).

Section 100 I.P.C. - The right of private defence of the body extends (subject to provisions of section 99 I.P.C.) to voluntarily causing of death, or any other harm to the assailant when, inter alia, such an assault causes resonable apprehension of death as a consequence or such an assault causes reasonable apprehension of grievous hurt as a consequence.

Section 102 I.P.C. - The right of private defence commences as soon as reasonable apprehension of danger to the body arises from an attempt or threat to commit the offence.

Section 103 I.P.C. - The right of private defence of property, subject to restrictions in section 99, extends to causing of death or any other harm to

the wrong does if, inter-alia, the offence or the attempt to commit the offence is of the description of (1) robbery, (2) mischief by fire on any building, tent or vessel used as a private dwelling or for custody of property, or (3) theft, mischief or house trespass under circumstances giving rise to the apprehension of death or grievous hurt as a consequence.

Section 141 I.P.C.: An assembly of five or more persons is an unlawful assembly if the common objective of the persons composing the assembly is :

First To overawe by criminal force, or show of criminal force, the Central or any State Govt. or Parliament or the Legislature of any State, or any public servant in the exercise of the lawful power of such servant; or

Second to resist the execution of any law, or any legal process; or

Third to commit any mischief or criminal trespass, or any other offence; or

Fourth by means of criminal force, or show of criminal force, to any person to take or obtain possession of any property, or to deprive any person of the enjoyment of a right of wa, or the use of water or other incorporate right of which he is in possession or enjoyment, or to enforce any right or supposed right; or

Fifth by means of criminal force, or show of criminal force, to compel any person to do what he is not legally bound to do, to omit to do what he is legally entitled to do.

Working with our men

—Bhudeb Chakrabarti, DIG, CRPF (Retd.)

I had joined the Central Reserve Police Force as a Company Commander in 1963. I was promoted as Commandant in February 1971 and was posted to 12 Battalion in Calcutta.

The Battalion had just three Companies in Calcutta, two Companies were in Andaman and Nicobar Islands and the last Company was in Ladakh with the IB. My presence was all the time required in Calcutta. The first reason was that the Battalion Headquarter was in Calcutta and the next

consideration was the situation prevailing at that time in West Bengal in general and Calcutta in particular.

The Battalion Headquarters and three Companies were accommodated in the Bodyguard Lines at Alipore. The Calcutta Armed Police had its headquarters in the Bodyguard Lines and a number of Calcutta Armed Police Battalions were also located there. As Calcutta Police had to accommodate more than one CRPF Battalion in the Bodyguard Lines, the accommodation position became quite strained. Somehow the Calcutta Police went out of the way to make the CRPF Battalions, who had come to assist them, comfortable, by accommodating them as best as they could.

First and foremost we tried to make our men more comfortable. So whatever built-up accommodation we could get, we first tried to put the men under the roofs. The offices and stores were also set up in the built-up accommodation. At last the question of accommodating the officers was required to be solved. There was a spacious ground in the Bodyguard Lines which was put to good use by pitching tents for living accommodation of the officers. All of us were quite happy with our living conditions. We particularly like our stay in a metropolitan city, albeit under canvas, as we were otherwise accustomed to stay in jungles and remote places.



CRPF Contingent in Republic Day Parade

We had not faced any particular difficulty staying in the tents. But a good shower made the conditions rather difficult. Our tent had ankle-deep water. Otherwise we had rather smooth ‘sailing’.

The platoons of all the three Service Companies were fully deployed in Calcutta City which was faced with the serious Naxalite problem. The posts and pickets were mostly in North Calcutta which was more disturbed in comparison to the other parts of the city. The Northern portion of Calcutta had narrow and serpentine lanes and by- lanes where sometime the sunlight could come with great difficulty. The houses which were mostly old were constructed close to each other. So it was even possible to cross over from one house to the other house over the rooftops. All these provided considerable advantage to the Naxalites to target and launch surprise and sudden attacks against their class enemies including the police. A large number of young people had become Naxalites, so strong was the ideology and appeal for a just social order - a classless society - to be achieved by violent revolutions. I came to know that quite a few students of the Presidency College - my alma mater - had joined their strength.



CRPF Mahilas during training

Our men had a very difficult job on hand. They while standing on duty in the vulnerable pickets in the sensitive areas were required to be extremely

alert to ward off clandestine attacks by the Naxalites. The Naxalites used mostly pipe guns and country made bombs with lethal effects. Our men were further required to be particularly vigilant against attempts by the Naxalites to snatch their rifles. The CRPF vehicles were subjected to deadly bomb attacks by the Naxalites.

The situation in West Bengal including Calcutta became so grim that a large number of CRPF Battalions had to be inducted in West Bengal in the wake of the Naxalite disturbances. The massive deployment of the CRPF Battalions in one state was quite unprecedented and it was more so in view of the fact that few years back no one in West Bengal seemed to be aware of the CRPF and now even a child knew about the Force. B.S. Rosha who was the IG of Sector II at Calcutta provided inspiring leadership to the Force and kept up their morale in the highly surcharged atmosphere. The Government recognised the important role of the CRPF in containing the Naxalite disturbances when they further created a post of DIG in the IG Sector II HQ. B.K. Roy who later became Director of the National Police Academy was posted as the DIG. All these gave a fillip to the anti-Naxalite operations in which the CRPF rose to the occasion as a highly trained, efficient and restrained force. Imdad Ali, DG CRPF who visited Calcutta from time to time during the turbulent days commended the work of the officers and men which boosted up their morale very much.

The manner in which our men performed and lived up to their tasks made all of us very happy. They had been issued chains to secure their rifles against attempts of rifle snatching by the Naxalites but these could not solely serve the purpose. The men needed to maintain constant vigil against any attacks and it was really gratifying that there was not a single instance of rifle snatching from any CRPF men. The Naxalites generally hurled bombs on the CRPF contingents and vehicles from the rooftops of the buildings. In course of time a strategy was developed by which the routes and timings of the moves were altered from day to day and from time to time so as not to be surprised by the Naxalites.

Although the CRPF went all out against the Naxalites there was some admiration on the part of the CRPF personnel for these misguided youth who went on their mission single mindedly and with a great deal of zeal and enthusiasm. They appeared not to be deterred by any privation, adversity and hardship which they all bore with a certain degree of non-chalance.

It was heartening that the CRPF dealt with the problem in the most correct manner, never committing any excess or atrocity and at the end the CRPF could justifiably claim the credit for ultimately restoring normalcy in the State. What had helped the force to be able to come out successful was the way the officers had maintained contact with their men and kept up their morale. We generally left in the morning to check our men and to talk to each and every one of them and returned late at night.

I would like to recount some of the measures to beef up security, to enhance efficiency and raise morale of the Force. Any movement outside the lines was always under proper armed escort. The men proceeding on leave were always provided unit transport up to the railway station as they were not permitted to avail any public transport due to security reasons. The posts and pickets had been provided with sandbags to fortify them. The men besides their rifles secured by chains had to put on steal helmets and wear anklets with their boots. As the men could not visit cinema halls, the recreational facilities were made available in the Unit Recreation Room. Last but not the least, wholesome and nutritious food were provided to men from the unit ‘langar’ so that the men had no necessity to take eatables in outside eaterises which involved obvious hazards.

When 12 Battalion was ordered to move to Bihar after a few months of my joining the Battalion, the rank and file had a sense of fulfilment and a lot of satisfaction that they had done a good job and contributed in no small way to restore normalcy in the State.

Like West Bengal, Bihar was also affected by the Naxalite problem. The Battalion Headquarter of 12 Battalion and two Companies were located at Ranchi where the Heavy Engineering Corporation provided adequate built-up accommodation. The third Company was accommodated at Telco, Jamshedpur. In course of time, Bihar also returned to normalcy along with West Bengal. Then the Companies of 12 Battalion were deployed on normal law and order duties. When the Companies were not committed for any duties, the men were put through refresher training or on - the - spot training. Generally we had a peaceful time in Bihar after the strenuous duties in Calcutta.

The Battalion after spending about a year in Bihar was asked to move to Visakhapatnam to deal with the law and order problem caused by the Andhra agitation. At Visakhapatnam we had no proper accommodation. The

men were accommodated in large godowns in the port area. We pitched a number of tents in a large ground in front of the godowns to accommodate officers and SOs. The ORs. Messes were also set up on the grounds by having tarpauline covers. The ground was quite sandy and had barely any grass on it.

The Andhra agitation had completely paralysed the day to day life. However it had not turned violent except on a few occasions. More number of CRPF Battalions were further moved to Andhra Pradesh to maintain law and order in the state. The two Companies of 12 Battalion also moved from Andaman and Nicobar Islands and joined the three companies at Visakhapatnam. The companies were so fully stretched for law and order duties that a time came when it was quite difficult to find manpower to guard the camp. In the above circumstances we even detailed enrolled followers with lathis to guard it.

We had shared many hardships along with the common people during the continuing agitation. Sometimes we had no items except ‘Dal’, ‘Chawal’ potatoes and onions. When the train services were completely disrupted we stopped getting our daks. Once our Battalion pay draft was misplaced and it became difficult to run the ORs Mess. The Deputy Commissioner of Visakhapatnam came to our rescue when he provided some funds.

The Civil authorities particularly DIG Mahender Reddy lauded the performance of our men in the maintenance of law and order and admired their restraint even in the face of grave provocations. Shrawan Tandon, IG Sector I had visited our unit and had lot of praise for the way the rank and file had performed. J.F. Ribeiro who had come as DIG Hyderabad visited our battalion very often to motivate us in performing our difficult job. 12 Battalion which had contributed to the restoration of normalcy in West Bengal and Bihar also played its part in restoring normal conditions in Andhra Pradesh.

As a Battalion Commandant I really enjoyed working with our men. The men had hardly any opportunity to keep their families with them as they had to move from place to place, often at very short notice. They obviously suffered in the absence of a proper and normal family life. Their wives at home also faced the hardships due to the absence of their husbands in running the household chores and bringing up the children single handedly. Inspite of these hardships I found that the men generally had a high morale

and cheerfully worked in the most adverse conditions. I came to believe that there were actually no bad soldiers but there were perhaps bad Generals. I got so much of love and affection and so much of loyalty from our men while working with them that it really motivated me to do my part and try to look after them as best as I could.

के.रि.पु. - एक सुसंगठित बल

-चन्द्र मोहन बहुगुणा, अ.पु. उप. महानिरीक्षक पूर्वी सेक्टर

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्र का एक भरोसेमंद अर्द्ध सैनिक बल है जो राष्ट्रीय स्तर पर कन्याकुमारी से कश्मीर तक सेवा-भक्ति का संदेश लिए हुए फैला हुआ है। के.रि.पु. बल एक "लघु-भारत" का सर्वोत्तम उदाहरण है जो जाति, पथ, धर्म के भेद - भाव के बिना अपने चरित्र को बनाए हुए है जैसा कि एक बुनाई मशीन अनेक धागों का प्रयोग कर उन सभी को एक कर के मजबूती प्रदान करती है। इसकी संरचना की जांच करते हुए हम पायेंगे कि इसमें प्रत्येक राज्य और धार्मिक क्षेत्र के प्रतिनिधि शामिल हैं। एक के.रि.पु. बल के परिसर को देखें :- इसके घरों, मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, चर्च एक छत के नीचे (सर्व धर्म प्रार्थना गृह) राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सद्भाव और परम्परा के उत्तम दृष्टांत प्रस्तुत करते हैं। लंगर/कैन्टीन में मीनू इस तरीके से तैयार किये जाते हैं जैसे दक्षिण भारतीय पकवान - सांभर/उपमा/इडली/डोसा और उत्तर भारतीय पकवान हलवा/पुड़ी/पकौड़ा/ समोसा/आलू परॉठों की थालियॉ आरोग्य जनक ढंग से यहां पर परोसी जाती हैं। सभी का स्वाद रखा गया है।

इसका पदानुक्रम, कमान संरचना और विभाजन प्रशाखा स्तर तक चतुराई और कार्य कुशलता से प्रतिपादित किया गया है जिसका मुख्य उद्देश्य कार्य के क्षेत्र में कार्मिकों के ऊपर निकटस्थ और प्रभावी कमान और नियंत्रण सुनिश्चित करना है। अनुशासन और आतिथ्य सत्कार में के.रि.पु. बल, हमेशा ऊपर रहा है। एक बालक की तरह जो अच्छी आदतों के बारे में अपनी मां से सीखता है, शिष्य ज्ञानोदय के मार्ग के बारे में अपने गुरूओं से सीखता है उसी तरह के.रि.पु. बल अपने कार्मिकों को भी अनुशासन, भद्र, ईमानदार और साहसी बनने में सहायता करता है।



बचाव और राहत कार्यों के लिए दक्ष बल की विशिष्ट शाखा आर.ए.एफ.

आगे के.रि.पु. बल ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कदम बढ़ाया है। इसके परिसर अपने आप ही ख्याति प्राप्त है, जो हरियाली, पेड़ पौधों से भरे पड़े हैं और अभी भी बहुत सारे बालवृक्ष उनके अन्दर विकसित होने वाले हैं। यह क्षेत्र को स्वच्छ और प्रदूषण रहित बनाता है। इसका एक उदाहरण हो सकता है कि उड़ीसा का बरबरा वन जहां बल के दुर्लभ औषधीय जाति के पौधों, वनस्पति और जीवजन्तु जो जानवरों/ पक्षियों को प्रश्रय देने के साथ उनका संरक्षण भी कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी राजकोष को बचाने के लिए बरबरा जंगल की रखवाली भी के.रि.पु. बल द्वारा की जा रही है।

जब कभी कोई राज्य साम्प्रदायिक तनाव से ग्रसित होता है तब के.रि.पु. बल सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए तीव्र गति से पहुंचता है, क्योंकि इसने प्रत्येक वर्ग के लोगों के हृदय में अपना स्थायी स्थान बना लिया है। उनके विश्वास, भरोसा और भावनाएं कभी भी आहत नहीं होती है। के.रि.पु. बल अत्यधिक आवश्यक आरोग्यकर स्पर्श, मदद, बचाव और राहत और प्राकृतिक आपदा, घोर संकट आदि में चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराता है। अभी इसने प्रौढ़ शिक्षा, मुफ्त चिकित्सा जांच, ग्राम वासियों के बीच खेल-कूद का आयोजन और विश्वास पैदा करना, स्थानीय लोगों के बीच अपने एक अति विशेषज्ञ "इकाई" जिसे द्रुत कार्य बल कहा जाता है के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम को लागू कर इतिहास के नये सुनहरे अध्याय में भी अपना नाम अंकित करा लिया है।

प्रशिक्षण, परिचालन उपलब्धियों के क्षेत्र में के.रि.पु. बल श्रेष्ठ है। जहां कहीं भी अनिश्चितता की स्थिति पैदा होती है, क्षण भंगुर स्थिति में इसे कार्रवाई के लिए लगाया

जाता है और यह अपनी व्यावसायिक दक्षता और विश्वसनीयता का अमिट छाप अपने पीछे छोड़ता है। भद्रजनों के लिए के.रि.पु. बल एक अच्छा मित्र है परन्तु अपराधकर्त्ता, विद्रोही और शरारती तत्वों के लिए एक दहशत है। बदमाशों के मन में आक्रमण और छापा मारने की इसकी आकृति बनी रहती है जो इसके निशानों पर हैं। प्रशिक्षण का मापदण्ड, मस्कटरी, फूटर ड्रिल्स, प्रदर्शन आदि के.रि.पु. बल द्वारा रखा गया है जो इसकी पराकाष्ठा को दर्शाता है। इसका एक कारण यह भी है कि बहुत महत्वपूर्ण व्यक्तियों, विशिष्ट नागरिकों, मारने की सूची (हिट-लिस्ट) में शामिल व्यक्तियों और अन्य महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की निगरानी के लिए के.रि.पु. बल असंदिग्ध रूप से चुना जाता है। एक बार किसी स्थल का भार के.रि.पु. बल ग्रहण कर लेता है तो आप चौबीसों घंटे रतजागा और निगरानी से निश्चिंत हो जायेंगे।

समय परिवर्तन और अस्त-व्यस्त विगत और वर्तमान के उतार-चढ़ाव के परिदृश्य में के.रि.पु. बल ने भी अपने प्रदर्शन में दिलेरी साबित की है और पूर्व स्वतंत्रता काल के दौरान (1939) "क्राउन रिप्रेजेंटेटिव" पुलिस के रूप में इसकी प्रारम्भिक स्थापना को सुरक्षित रखने, बहुमुखी जामा पहनाने में असंख्य उपलब्धियां जोड़ी हैं। डकैती विरोधी परिचालन (मोकामाघाट), ड्रग-पैकर से. निपटने (नीमच), नक्सलवाद विरोधी परिचालन (1970 की शुरूआत में पश्चिम बंगाल, केरल, आंध्र प्रदेश और बिहार), नाकाबंदी/पैट्रोलिंग/छापा और खोज/आर.ओ.पी. के क्षेत्र में के.रि.पु. बल ने हमेशा केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों के बीच में सभी अवसरों पर लोक प्रसिद्धि प्राप्त करते हुए अपने आप को चरम बिन्दु पर स्थापित किया है।



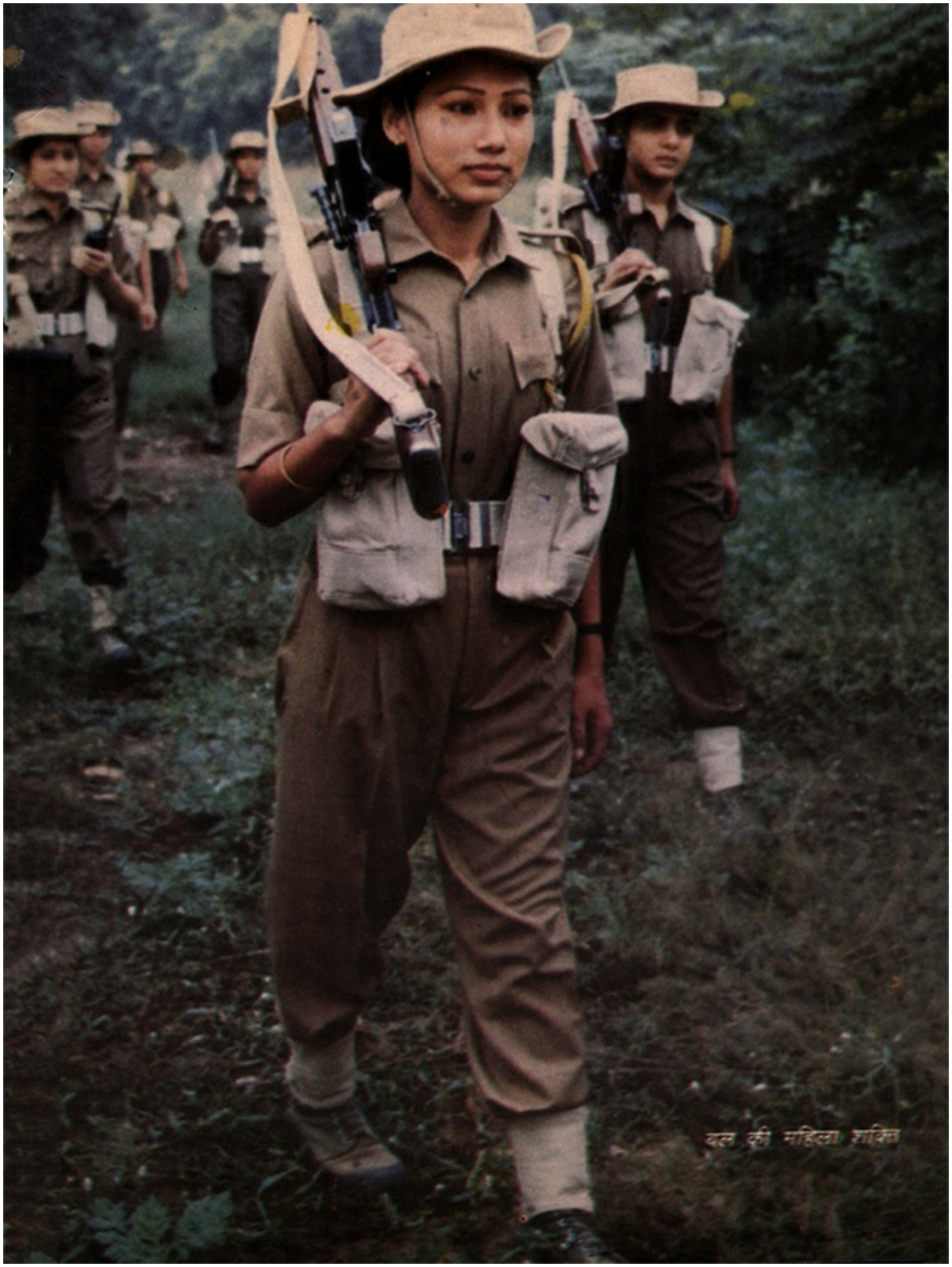
बोस्निया से लौटे इंस्पेक्टर महानिदेशक महोदय को संयुक्त राष्ट्र मिशन के अधिकारियों से प्राप्त स्मृति चिह्न भेंट करते हुए

1960 के दशक में उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र में राष्ट्रीय मुख्य धारा को निगलने, विघटन करने की धमकी को के.रि.पु. बल ने राजद्रोह को अप्रीतिकर जलवायु, दुरस्थ और दूर-दराज के क्षेत्रों की परवाह किए बगैर चुनौती को स्वीकार किया है। अपनी साबित चतुराई और व्यावसायिक युद्ध क्षमता के साथ के.रि.पु. बल ने पंजाब और जम्मू-कश्मीर राज्यों में दुर्दान्त आतंकवादियों और युद्धरतों के विरूद्ध युद्ध के मैदान में प्रवेश किया जहां पर विदेशी एजेण्ट हत्याकाण्ड और चुनी हुई सरकारों को गिराने की भावना से उच्च तकनीक, छद्मवार और मुठभेड़ों के लिए लगाये गये थे।

के.रि.पु. बल ने राष्ट्रीय स्तर पर 1988 में अपनी पुनः ख्याति प्राप्त की जब केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों में सर्व प्रथम इसको विदेशी भूमि श्रीलंका में भारतीय सेना के साथ उच्च प्रशिक्षित दुर्दान्त एल.टी.टी.ई. संवर्गों के विरूद्ध लड़ाई के लिए उतारा गया। अभी के.रि.पु. बल, संयुक्त राष्ट्र संघ मिशन में अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस टास्क फोर्स के रूप में विदेश में तैनाती के लिए भी चुना गया है। के.रि.पु. बल को प्रथम राइफलधारी महिला बटालियन की भारत सरकार की स्वीकृति तथा इसके साथ संलग्न करने का सौभाग्य हासिल है।

खेल-कूद के क्षेत्र में भी के.रि.पु. बल पीछे नहीं है। इसने अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विशिष्ट योग्यता प्राप्त खिलाड़ी पैदा किये हैं (हरि चन्द, खजान सिंह, बल ब्रदर्स, कुंजा रानी, परमजीत सिंह), इसने हॉकी में राष्ट्रीय चैम्पियनशिप और पुलिस एथलेटिक मीट जीती है।

इस तरह के.रि.पु. बल अपनी योग्यता प्रत्येक क्षेत्र में प्रदर्शित करता है और कार्मिकों को देश की बलि-बेदी पर अपने प्राणों को न्यौछावर करने की प्रेरणा देता है। इसके कार्मिक कई घंटों के संचलन, भ्रमणशील जीवन और ड्यूटी के सामने अन्य व्यक्तिगत समस्याओं को आड़े नहीं आने देते हैं जिसने उन्हें चिकेन-नैक से संयुक्त राष्ट्र संघ मिशन तक लम्बी यात्रा पूरी करने की शक्ति प्रदान की है। हम इस महान बल को बार-बार नमन करते हैं।


दल की महिला शक्ति

रजि. न. 476



युप केन्द्र हैदराबाद स्थित शहीद
स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि
अर्पित करते हुए बल के महानिदे
श्री एम.एन. सभरवाल